ज्योतिष जीवन दर्पण

Name - Sample
Date - 10/08/1941
Time - 02:15:00
POB - New delhi (Delhi) India
Longitude - 077:12:00 E
Latitude - 028:36:00 N

Mindsutra Software Technologies
A-16, Ground Floor Uttam Nagar New Delhi - 110059
Phone: 011-49043166, 91 9818193410

© lalkitabnadi.com

श्री गणेशाय नमः

गणानां त्वां गणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम् ।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नूतिभिः सीद सादनम् ।।

नवग्रह स्तोत्र

जपाकुसुमसंकाशं काश्पेयं महाद्युतिम्। तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।
दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्। नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम्।।
धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्। कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगलं प्रणमाम्यहम्।।
प्रियंगुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्। सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्।।
देवानां च ऋषिणां च गुरुं कांचनसंनिभम्। बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।।
हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्। सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्।।
नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्। छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।
अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्। सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्।।
पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम्। रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्।।

फलश्रुति

इति व्यासमुखोद्गीतं यः पठेत् सुसमाहितः।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति।
नरनारीनृपाणां च भवेद्दुःस्वप्ननाशम्।
ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम्।।
ग्रहनक्षत्रजाः पीडस्तस्कराग्रिसमुद्रवाः ।
ताः सर्वाः प्रशमं यान्ति व्यासो ब्रूते न संशयः ।।

इति श्री व्यासविरचितं आदित्यादिनवग्रहस्तोत्रं संपूर्णम् ।।

जो जपापुष्प के समान अरुणिम आभावाले, महान तेज से संपन्न, अंधकार के विनाशक, सभी पापों को दूर करने वाले तथा महर्षि कश्यप के पुत्र हैं, उन सूर्य को मैं प्रणाम करता हूं। जो दधि, शंख तथा हिम के समान आभा वाले, क्षीर समुद्र से प्रादुर्भूत, भगवान शंकर के शिरोभूषण तथा अमृतस्वरुप हैं, उन चंद्रमा को मैं नमस्कार करता हूं। जो पृथ्वी देवी से उद्भूत, विद्युत् की कान्ति के समान प्रभावाले, कुमारावस्था वाले तथा हाथ में शक्ति लिए हुए हैं, उन मंगल को मैं प्रणाम करता हूं। जो प्रियंगु लता की कली के समान गहरे हरित वर्ण वाले, अतुलनीय सौन्दर्य वाले तथा सौम्य गुण से संपन्न हैं, उन चंद्रमा के पुत्र बुध को मैं प्रणाम करता हूं। जो देवताओं और ऋषियों के गुरु हैं, स्वर्णिम आभा वाले हैं, ज्ञान से संपन्न हैं तथा लोकों के स्वामी हैं, उन बृहस्पति जी को मैं नमस्कार करता हूं। जो हिम, कुन्दपुष्प तथा कमलनाल के तन्तु के समान श्वेत आभा वाले, दैत्यों के परम गुरु, सभी शास्त्रों के उपदेष्टा तथा महर्षि भृगु के पुत्र हैं, उन शुक्र को मैं प्रणाम करता हूं। जो नीले कज्जल के समान आभा वाले, सूर्य के पुत्र, यमराज के ज्येष्ठ भ्राता तथा सूर्य पत्नी छाया तथा मार्तण्ड से उत्पन्न हैं, उन शनैश्चर को मैं नमस्कार करता हूं। जो आधे शरीर वाले हैं, महान पराक्रम से संपन्न हैं, सूर्य तथा चंद्र को ग्रसने वाले हैं तथा सिंहिका के गर्भ से उत्पन्न हैं, उन राहु को मैं प्रणाम करता हूं। पलाश पुष्प के समान जिनकी आभा है, जो रुद्र स्वभाव वाले और रुद्र के पुत्र हैं, भयंकर हैं, तारकादि ग्रहों में प्रधान हैं, उन केतु को मैं प्रणाम करता हूं। भगवान वेदव्यास जी के मुख से प्रकट इस स्तुति का जो दिन में अथवा रात में एकाग्रचित्त होकर पाठ करता है, उसके समस्त विघ्न शान्त हो जाते हैं, स्त्री–पुरुष और राजाओं के दुःस्वप्नों का नाश हो जाता है। पाठ करने वालों को अतुलनीय ऐश्वर्य और आरोग्य प्राप्त होता है तथा उनके पुष्टि की वृद्धि होती है।

ज्योतिष सारिणी

मुख्य विवरण	
लिंग	पुरूष
जन्म दिनांक	10:08:1941
जन्म समय	02:15:00
जन्म दिन	रविवार
जन्म स्थान	new delhi
राज्य	Delhi
देश	India
अक्षांश	028:36:00N
रेखांश	077:12:00E
स्थानीय समय संस्कार	-000:21:11
स्थानीय समय	001:53:48 hrs
समय क्षेत्र	05:30 E
समय संशोधन	-00:00
सांपातिक काल	023:05:35 hrs
इष्ट काल	51: 03: 50 Ghati

पंचांग विवरण	
विक्रम संवत	1998
शक संवत	1863
संवत्सर	वृष
ऋतु	वर्षा
मास	भाद्र
पक्ष	कृष्ण
वार	
तिथि	तृतीया
नक्षत्र (पद)	पूर्वाभाद (2)
योग	अतिगण्ड
करन	विष्टी

अवकहड़ा चक्र	
पाया	रजत
वर्ण	शुद्र
वश्य	जलचर
योनि	शेर (पु0)
गण	मनुष्य
नाड़ी	आदि
रज्जु	नाभि
तत्व	आकाश
तत्वाधिपति	बृहस्पति
विहग	मयूर
नाड़ी पद	मध्य
वेध	उत्तरफाल्गु
आद्याक्षर	सा
दशा बैलेंस	बृहस्पति–९ .० व .1 .0 म .11 द .
वर्तमान दशा	चन्द्र–शनि–केतु
भयात	26: 58: 05 Ghati
भभोग	63: 13: 54 Ghati
सूर्य राशि (वैदिक)	कर्क
सूर्य राशि (पाश्चात्य)	सिहं
अयनांश	N.C.Lahiri
अयनांश मान	023:02:29
देकानेट	2
फेस	IV
सूर्योदय	05:50:28AM
सूर्यास्त	07:02:42PM
जन्मदिन का ग्रह	सूर्य
जन्मसमय का ग्रह	शनि

♊ **लग्न** मिथुन	♒ **राशि** कुम्भ	**नक्षत्र – पद** पूर्वाभाद – 2
☿ **लग्नाधिपति** बुध	♄ **राशिपति** शनि	♃ **नक्षत्रपति** बृहस्पति

घात चक्र

चैत्र अशुभ मास	वृहस्पतिवार अशुभ वार	3 अशुभ प्रहर
धनु अशुभ राशि	कन्या अशुभ लग्न	3, 8, 13 अशुभ तिथि
अरिद्रा अशुभ नक्षत्र	ब्याधात अशुभ योग	किम्सतुघ्न अशुभ करन

शुभ बिन्दु

1 मूलांक	6 भाग्यांक	3, 9 मित्रांक
1, 8 शत्रु अंक	18, 21, 24, 27, 30, 33, 36, 39 शुभ वर्ष	बुधवार, शुक्रवार, शनिवार शुभ दिन
बुध, शुक्र, शनि शुभ ग्रह	बृहस्पति अशुभ ग्रह	वृष, सिहं, तुला, धनु मित्र राशि
कन्या, धनु, कुम्भ, मेष मित्र लग्न	पन्ना शुभ रत्न	पन्नी, संगपन्ना, मरगज शुभ उपरत्न
नीलम भाग्य रत्न	गणेश अनुकूल देवता	कांसा शुभ धातु
हरित शुभ रंग	उत्तर दिशा	सूर्योदय के 2 घंटे बाद शुभ समय
शक्कर, हाथीदांत, कपूर, फल शुभ पदार्थ	मूंग (साबुत) शुभ अन्न	घी शुभ द्रब्य

ग्रह स्थिति (पराशरी)

ग्रह	राशि	अंश	नक्षत्र	स्थिति
सूर्य	कर्क	23:47:42	अश्लेषा (3)	मित्र राशि
चन्द्रमा	कुम्भ	25:44:26	पूर्वाभाद (2)	सम राशि
मंगल	मीन	25:32:30	रेवती (3)	मित्र राशि
बुध (अ.)	कर्क	14:00:17	पुष्य (4)	शत्रु राशि
बृहस्पति	वृष	22:48:58	रोहिणी (4)	शत्रु राशि
शुक्र	सिहं	23:31:29	पुर्वफाल्ग (4)	स्व नक्षत्र
शनि	वृष	04:37:01	कृतिका (3)	मित्र राशि
राहु	कन्या	01:26:07	उत्तरफाल्ग (2)	मित्र राशि
केतु	मीन	01:26:07	पूर्वाभाद (4)	सम राशि
र्हाल	वृष	07:00:34	कृतिका (4)	सम राशि
नेपच्यून	कन्या	02:55:44	उत्तरफाल्ग (2)	सम राशि
प्लूटो	कर्क	11:15:04	पुष्य (3)	सम राशि
लग्न	मिथुन	07:01:34	अरिद्रा (1)	....
10वां कस्प	मीन	22:11:00	पूर्वाभाद (1)	....

ग्रह स्थिति (पराशरी)

	ग्रह	व/अ		राशि	अंश	नक्षत्र	पद	कारक	विशेष
AC	लग्न		♊	मिथुन	07:01:34	अरिद्रा (6)	1		
☉	सूर्य		♋	कर्क	23:47:42	अश्लेषा (9)	3	भ्रात्रि	मित्र राशि
☽	चन्द्रमा		♒	कुम्भ	25:44:26	पूर्वाभाद (25)	2	आत्म	सम राशि
♂	मंगल		♓	मीन	25:32:30	रेवती (27)	3	अमात्य	मित्र राशि
☿	बुध	अ.	♋	कर्क	14:00:17	पुष्य (8)	4	ज्ञाति	शत्रु राशि
♃	बृहस्पति		♉	वृष	22:48:58	रोहिणी (4)	4	अपत्या	शत्रु राशि
♀	शुक्र		♌	सिहं	23:31:29	पुर्वफाल्ग (11)	4	मात्रि	स्व नक्षत्र
♄	शनि		♉	वृष	04:37:01	कृतिका (3)	3	दारा	मित्र राशि
☊	राहु		♍	कन्या	01:26:07	उत्तरफाल्ग (12)	2		मित्र राशि
☋	केतु		♓	मीन	01:26:07	पूर्वाभाद (25)	4		सम राशि
♅	हर्षल		♉	वृष	07:00:34	कृतिका (3)	4		सम राशि
♆	नेपच्यून		♍	कन्या	02:55:44	उत्तरफाल्ग (12)	2		सम राशि
♇	प्लूटो		♋	कर्क	11:15:04	पुष्य (8)	3		सम राशि

लग्न कुण्डली

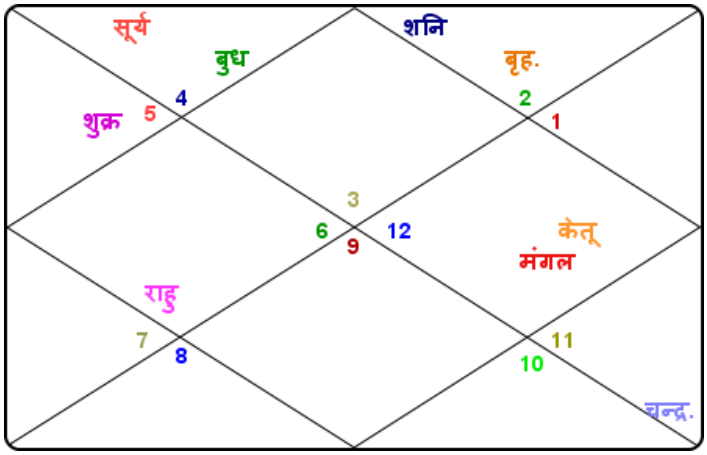

नवांश कुण्डली

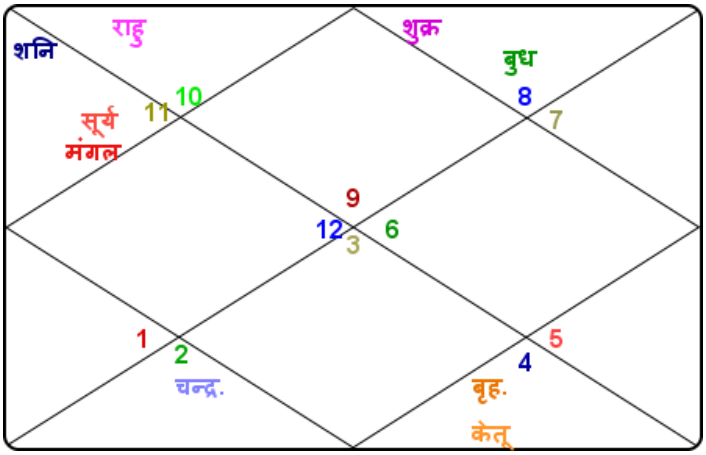

D-16 षोडश वर्ग कुण्डली

जन्म/लग्न कुण्डली (डी 1)

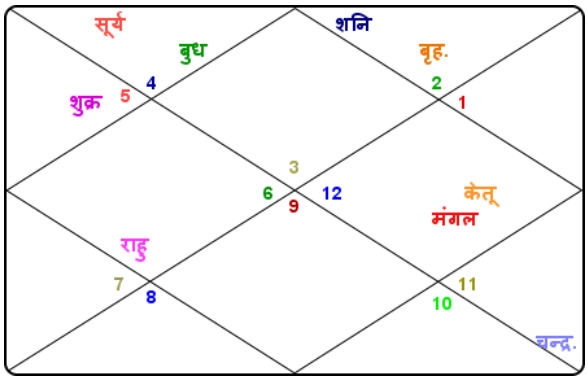

जन्मकुण्डली या लग्न कुण्डली एक व्यक्ति के जीवन की एक विस्तृत तस्वीर है। यह 12 घरों में विभाजित है जो जीवन के विभिन्न पहलुओं का प्रतिनिधित्व करते हैं, प्रत्येक घर एक अलग राशि और ग्रह द्वारा नियंत्रित होता है। विभिन्न घरों में ग्रहों और राशियों के स्थान और परस्पर क्रिया का मूल्यांकन करके, कुण्डली किसी के व्यक्तित्व, रिश्तों, नौकरी, धन और सामान्य जीवन पथ में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

होरा कुण्डली (डी 2)

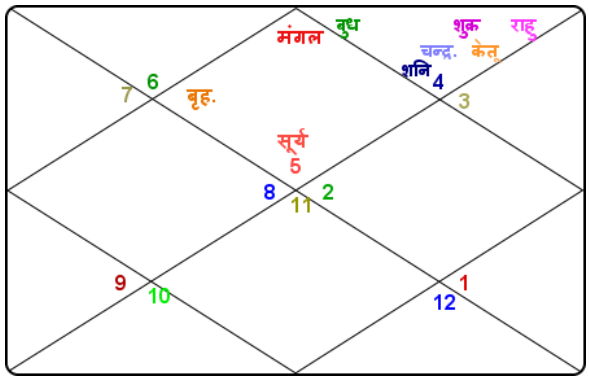

होरा कुण्डली मुख्य जन्म कुण्डली से निर्मित एक विभागीय कुण्डली है जिसका उपयोग समृद्धि और वित्तीय संभावनाओं को निर्धारित करने के लिए किया जाता है। यह जन्म कुंडली में प्रत्येक राशि को आधे में विभाजित करता है, जिसमें सूर्य पहले अर्द्ध भाग पर शासन करता है और चंद्रमा दूसरे पर शासन करता है। ज्योतिषी ग्रहों की स्थिति और होरा कुण्डली के भीतर उनके संबंध या संयोजन का मूल्यांकन करके जीवन भर धन और वित्तीय स्थिरता प्राप्त करने के लिए किसी व्यक्ति की क्षमता का अनुमान लगा सकते हैं।

द्रेष्काण कुण्डली (डी 3)

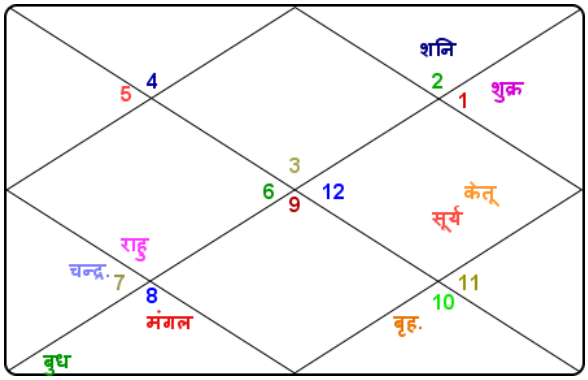

द्रेक्कन कुण्डली, प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 3 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक 10 डिग्री माप का होता है। इस कुण्डली का उपयोग किसी के जीवन पर उसके भाई--बहनों, चचेरे भाई--बहनों और अन्य करीबी रिश्तेदारों के प्रभाव का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह एक व्यक्ति की संचार क्षमता, छोटी यात्रा और साहस पर अंतर्दृष्टि भी देता है, जिससे ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के जीवन के इन क्षेत्रों का अधिक से अधिक ज्ञान प्राप्त करने में सहायता मिलती है।

चतुर्थांश कुण्डली (डी 4)

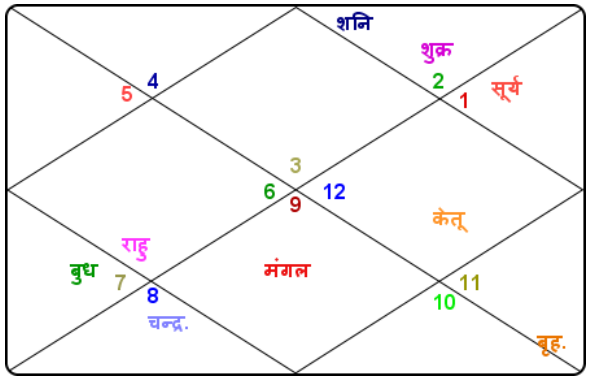

चतुर्थांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 4 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक 7. 5 डिग्री तक फैला हुआ है। इस कुण्डली का उपयोग बड़े पैमाने पर किसी व्यक्ति के घर, जमीन और अoटोमोबाइल के संबंध में उसकी खुशी, संपत्ति और भाग्य का मूल्यांकन करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति की सुरक्षा, भावनात्मक कल्याण, और उनकी मां या मातृभाषा के साथ संबंध में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के जीवन के इन क्षेत्रों के बारे में बेहतर ज्ञान प्राप्त करने में सहायता करता है।

सप्तमांश कुण्डली (डी 7)

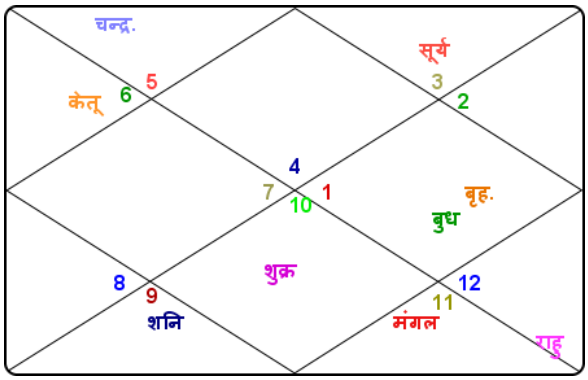

सप्तांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो मुख्य जन्म कुण्डली के प्रत्येक चिन्ह को 7 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप लगभग 4.29 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग सामान्यतः किसी व्यक्ति के जीवन में संतान, प्रजनन क्षमता और प्रसव से संबंधित मुद्दों का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के स्वास्थ्य, कल्याण और बच्चों से उत्पन्न होने वाले सामान्य आनंद के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है, साथ ही साथ किसी व्यक्ति के बच्चों की संख्या के बारे में अंतर्दृष्टि भी प्रदान करता है।

नवांश कुण्डली (डी 9)

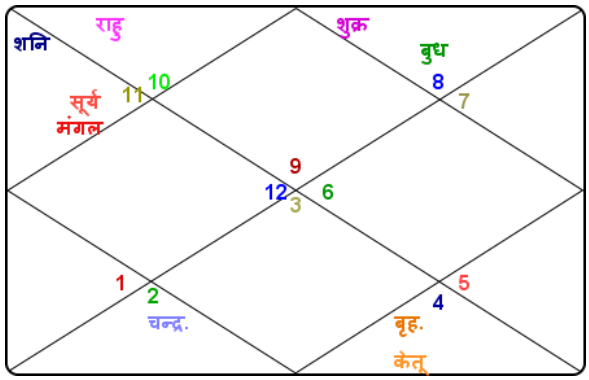

नवांश कुण्डली वैदिक ज्योतिष में एक महत्वपूर्ण संभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 9 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप 3.20 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग बड़े पैमाने पर ग्रहों की ताकत और कमजोरियों, वैवाहिक जीवन की गुणवत्ता और किसी के जीवनसाथी की प्रकृति का निर्धारण करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति के आध्यात्मिक विकास और आकांक्षाओं की पूर्ति में गहरी अंतर्दृष्टि भी देता है, जिससे ज्योतिषियों के लिए व्यक्ति के जीवन के कई क्षेत्रों को समझने में यह एक महत्वपूर्ण उपकरण बन जाता है।

दशमांश कुण्डली (डी 10)

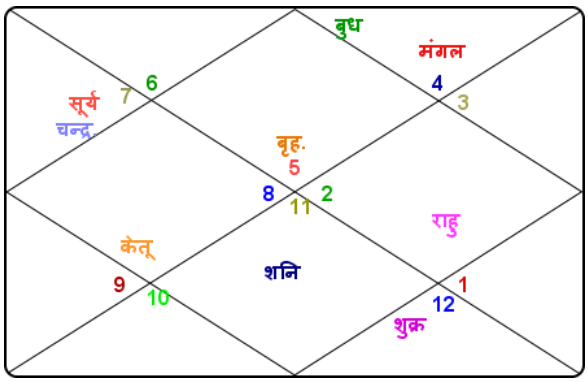

दशमांश कुण्डली एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 10 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 3 डिग्री मापता है। इस कुण्डली का उपयोग अधिकांशतः किसी व्यक्ति के करियर, पेशे और समग्र व्यावसायिक उपलब्धि का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह ज्योतिषियों को पेशेवर प्रगति और सफलता के लिए मार्गदर्शन प्रदान करने के साथ--साथ सर्वोत्तम कार्य मार्ग, संभावित उन्नति और कार्यस्थल की बाधाओं के बारे में जानकारी देता है।

द्वादशांश कुण्डली (डी 12)

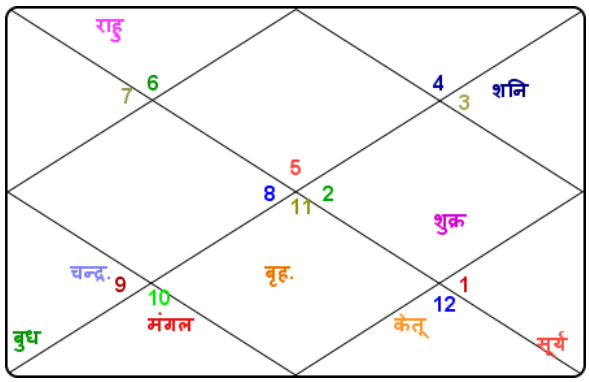

द्वादशांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 12 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 2.5 डिग्री में मापता है। इस कुण्डली का उपयोग आम तौर पर किसी व्यक्ति के माता--पिता, पूर्वजों और पारिवारिक वंश के मुद्दों की जांच करने के लिए किया जाता है। यह एक व्यक्ति के माता--पिता, विरासत और पारिवारिक कर्म के साथ एक व्यक्ति के संबंध को प्रकट करता है, ज्योतिषियों को एक व्यक्ति के जीवन के इन महत्वपूर्ण क्षेत्रों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है।

षोडशांश कुण्डली (डी 16)

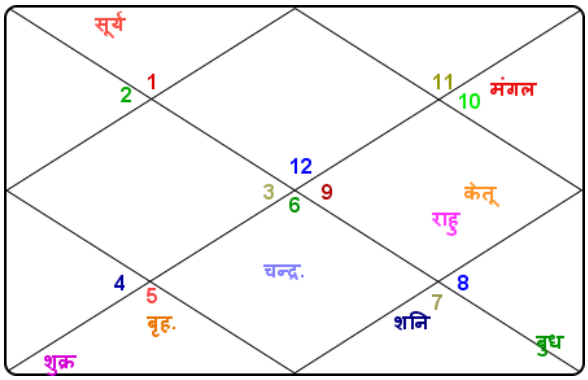

षोडशांश कुण्डली एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 16 बराबर टुकड़ों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप 1.875 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग बड़े पैमाने पर किसी व्यक्ति के अoटोमोबाइल, आराम और विलासिता की विशेषताओं की जांच करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति की वाहन, अचल संपत्ति, और अन्य वस्तुओं को हासिल करने और बनाए रखने की क्षमता को प्रकट करता है जो उनके जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाता है, जिससे ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के अस्तित्व के इन विशिष्ट पहलुओं को समझने में सहायता मिलती है।

विशांश कुण्डली (डी 20)

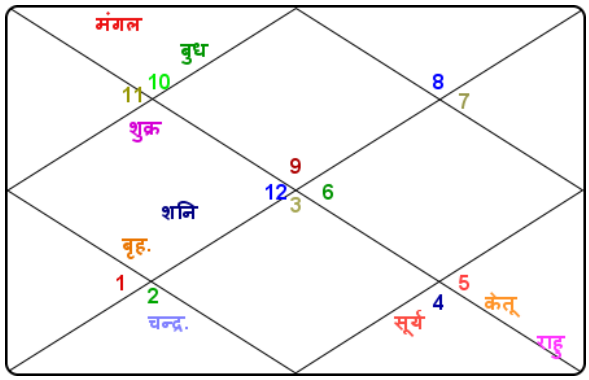

विशांश कुण्डली एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 20 बराबर टुकड़ों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 1.5 डिग्री मापता है। इस कुण्डली का उपयोग बड़े पैमाने पर किसी व्यक्ति के आध्यात्मिक विकास, धार्मिक प्राथमिकताओं और अधिक ज्ञान की खोज का विश्लेषण करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति के अंतर्रात्मा, आध्यात्मिक क्षमता और उनके जीवन में धर्म और आध्यात्मिकता के महत्व के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, जिससे ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के जीवन के इन तत्वों का पता लगाने में सहायता मिलती है।

चर्तुविंशांश कुण्डली (डी 24)

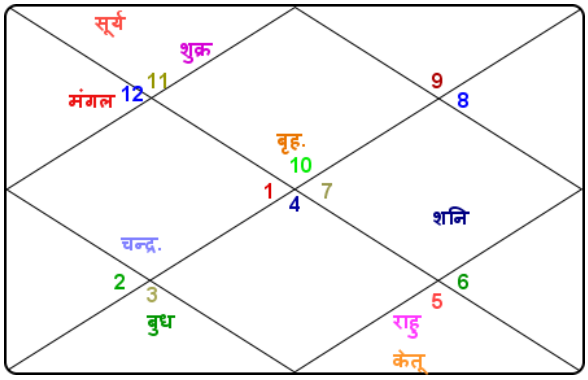

चर्तुविंशांश कुण्डली एक विभाजन कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 24 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक की माप 1.25 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग आमतौर पर किसी व्यक्ति की शिक्षा, प्रतिभा और सीखने की क्षमता का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह कुछ विषयों, विशेषज्ञता के क्षेत्रों और शैक्षिक उपलब्धि के लिए एक व्यक्ति की योग्यता को प्रकट करता है, ज्योतिषियों को अकादमिक उन्नति प्राप्त करने और बौद्धिक क्षमता तक पहुंचने के लिए मागदर्शन प्रदान करने की अनुमति देता है।

सप्तविंशांश कुण्डली (डी 27)

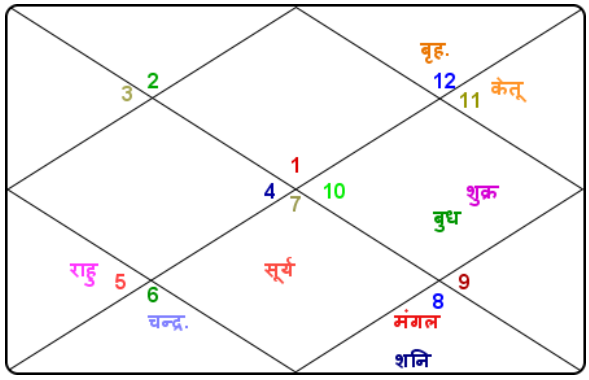

सप्तविंशांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 27 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप 1.11 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग मुख्य रूप से किसी व्यक्ति के नक्षत्रों या चंद्र राशियों की ताकत और उनके जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह ज्योतिषियों को व्यक्ति के स्वभाव, आचरण और अंतर्निहित नक्षत्रों से प्रभावित जीवन की घटनाओं के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करके व्यक्ति के भाग्य और आध्यात्मिक झुकाव के बारे में बेहतर ज्ञान देता है।

त्रिंशांश कुण्डली (डी 30)

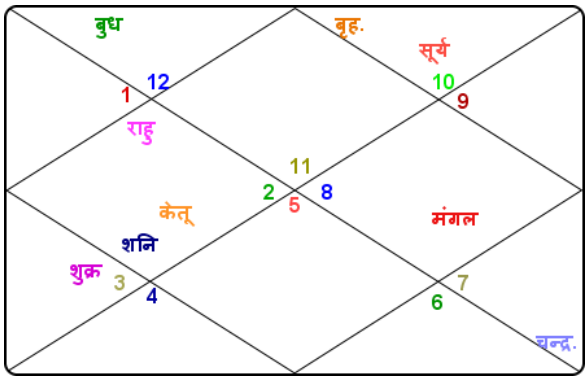

त्रिशांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 30 बराबर टुकड़ों में विभाजित करता है, प्रत्येक को एक डिग्री में मापता है। इस कुण्डली का उपयोग ज्यादातर उन कई कठिनाइयों और आपदाओं का आकलन करने के लिए किया जाता है जो एक व्यक्ति अपने जीवन के दौरान अनुभव कर सकता है। यह एक व्यक्ति की छिपी ताकत, कमजोरियों और उनकी कठिनाइयों के स्रोत को प्रकट करता है, जिससे ज्योतिषियों को बाधाओं पर काबू पाने और जीवन के कई पहलुओं में कठिनाइयों का सामना करने हेतु मार्गदर्शन करने में सहायता मिलती है।

खवेदांश कुण्डली (डी 40)

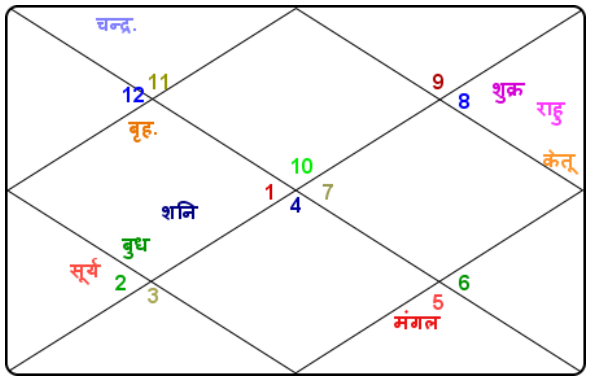

खवेदांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 40 बराबर टुकड़ों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 0.75 डिग्री मापता है। इस कुण्डली का उपयोग आम तौर पर किसी व्यक्ति की समग्र भलाई और शुभता की गहरी समझ प्राप्त करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य के साथ--साथ उनके समग्र सुख और समृद्धि के बारे में जानकारी प्रदान करता है, जिससे ज्योतिषियों को जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने और एक सामंजस्यपूर्ण जीवन शैली प्राप्त करने के बारे में सलाह देने की अनुमति मिलती है।

अक्षवेदांश कुण्डली (डी 45)

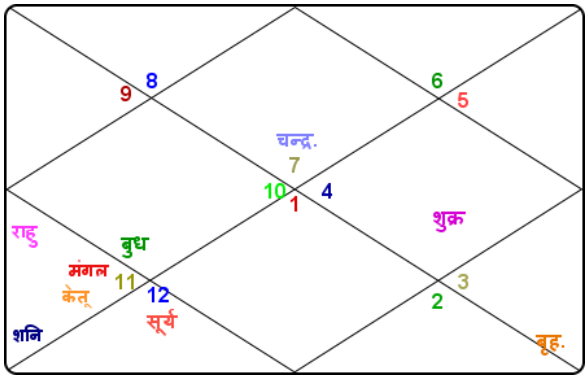

अक्षवेदांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 45 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप 0.67 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग अधिकांशतः किसी व्यक्ति के आध्यात्मिक और दिव्य गुणों का आकलन करने के लिए उपयोग किया जाता है। यह एक व्यक्ति की प्रा.तिक आध्यात्मिक क्षमता, दैवीय आशीर्वाद और आध्यात्मिक विकास स्तर को प्रकट करता है, जिससे ज्योतिषियों को आध्यात्मिक विकास में उन्नति और जागरूकता के उच्च स्तर की प्राप्ति हेतु मार्गदर्शन करने में सहायता मिलती है।

षष्ठांश कुण्डली (डी 60)

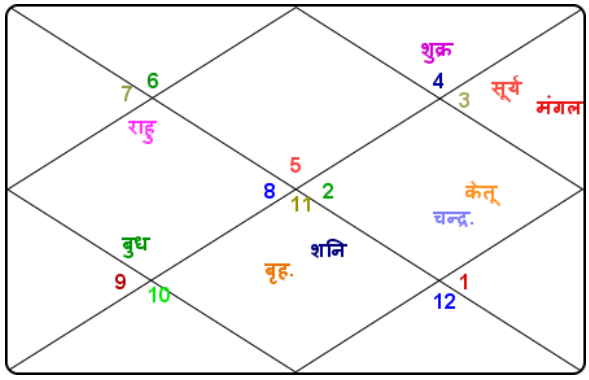

षष्ठांश कुण्डली, एक विभाजन कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 60 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 0.5 डिग्री मापता है। यह कुण्डली अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है और इसका उपयोग मुख्य रूप से किसी व्यक्ति के जीवन को प्रभावित करने वाले सबसे गहरे कर्म प्रभावों को प्रकट करने के लिए किया जाता है। यह एक व्यक्ति के पूर्व जीवन के कर्मों, अव्यक्त झुकावों और उनकी गतिविधियों के सूक्ष्म प्रभावों को प्रकट करता है, जिससे ज्योतिषियों को कर्म असंतुलन को ठीक करने और अत्यधिक संतोषप्रद जीवन जीने का मार्गदर्शन करने में सहायता मिलती है।

षडबल और भावबल

षड्बल

बल का नाम	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
उच्च बल	25.4	37.58	40.82	39.67	45.94	11.16	4.87
सप्त वर्ग बल	86.25	78.75	135	45	86.25	91.88	131.25
युग्म अयुग्म बल	15	15	15	0	0	15	15
केन्द्रादी बल	30	15	60	30	15	15	15
द्रेक्कन बल	0	15	0	15	0	15	0
स्थान बल	**156.65**	**161.33**	**250.82**	**129.67**	**147.19**	**148.03**	**166.12**
वांछित स्थान बल	165	133	96	165	165	133	96
वांछित अंश	94.94	121.3	261.27	78.59	89.21	111.3	173.04
दिग बल	**9.46**	**1.19**	**48.88**	**47.67**	**55.26**	**59.55**	**10.8**
वांछित दिग बल	35	50	30	35	35	50	30
वांछित अंश	27.04	2.37	162.94	136.21	157.9	119.11	36.01
नतोन्नत बल	50.92	9	9	50.92	60	50.92	9
पक्ष बल	10.65	49.35	10.65	10.65	49.35	49.35	10.65
त्रिभाग बल	0	0	60	0	60	0	0
वर्ष बल	0	0	0	0	15	0	0
मास बल	0	0	0	0	0	0	30
दिन बल	45	0	0	0	0	0	0
होरा बल	0	0	0	0	0	0	60
अयन बल	49.31	35.07	38.71	52.63	58.04	36.17	4.9
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
काल बल	**155.88**	**93.42**	**118.36**	**114.19**	**242.39**	**136.44**	**114.54**
वांछित काल बल	112	100	67	112	112	100	67
वांछित अंश	139.18	93.42	176.66	101.96	216.42	136.44	170.96
चेष्टा बल	**49.31**	**49.35**	**15**	**0**	**30**	**45**	**30**
वांछित चेष्टा बल	50	30	40	50	50	30	40
वांछित अंश	98.62	164.51	37.5	0	60	150	75
नैसर्गिक बल	**60**	**51.43**	**17.14**	**25.71**	**34.29**	**42.86**	**8.57**
द्रिक बल	**-27.75**	**4.52**	**9.77**	**-30.32**	**-10.21**	**-10.93**	**-2.21**
कुल षड्बल	**403.55**	**361.24**	**459.98**	**286.92**	**498.91**	**420.95**	**327.83**
षड्बल (रूप में)	**6.73**	**6.02**	**7.67**	**4.78**	**8.32**	**7.02**	**5.46**
न्यूनतम वांछनिय	390	360	300	420	390	330	300
वांछित अंश	103.47	100.35	153.33	68.32	127.93	127.56	109.28
तुलनात्मक स्थिति	**4**	**5**	**2**	**7**	**1**	**3**	**6**
इष्ट फल	**33.58**	**43.07**	**24.74**	**0**	**37.12**	**22.41**	**12.09**
कष्ट फल	**26.42**	**16.93**	**35.26**	**60**	**22.88**	**37.59**	**47.91**
दिप्ति बल	**100**	**49.35**	**39.42**	**20.98**	**20.33**	**37.95**	**26.39**

भावबल

भाव सँख्या	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भाव राशि	मिथुन	कर्क	सिहं	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
भावाधिपति बल	286.92	361.24	361.24	403.55	286.92	459.98	498.91	327.83	327.83	327.83	498.91	420.95
भाव दिग्बल	60	40	10	30	20	50	0	40	20	0	50	40
भाव दृष्टिबल	-3.82	-14.87	-16.1	-3.5	10.83	-21.04	-16.76	-11.59	8.25	9.53	5.25	3.64
भावबल योग	343.1	386.37	355.14	430.05	317.75	488.94	482.16	356.24	356.08	337.36	554.16	464.59
भावबल (रूप में)	5.72	6.44	5.92	7.17	5.3	8.15	8.04	5.94	5.93	5.62	9.24	7.74
तुलनात्मक स्थिति	10	6	9	5	12	2	3	7	8	11	1	4

विंशोत्तरी दशा (1)

बृहस्पति (9.0 व.1.0 म.11 द.)

दशा बैलेंश

N.C.Lahiri (023:02:29)

Ayanamsha

बृहस्पति (16 वर्ष)

10/08/1941 To 19/09/1950

बारहवें	वृष	शत्रु
भाव	राशि	संबंन्ध
	रोहिणी (4)	7 , 10
विशेष	नक्षत्र	भावपति
बृहस्पति	-------	-------
शनि	-------	-------
बुध	26-08-1941	00.00
केतु	02-08-1942	00.04
शुक्र	02-04-1945	00.98
सूर्य	19-01-1946	03.64
चन्द्रमा	21-05-1947	04.44
मंगल	26-04-1948	05.78
राहु	19-09-1950	06.71

शनि (19 वर्ष)

19/09/1950 To 19/09/1969

बारहवें	वृष	मित्र
भाव	राशि	संबंन्ध
	कृतिका (3)	8 , 9
विशेष	नक्षत्र	भावपति
शनि	22-09-1953	09.11
बुध	01-06-1956	12.12
केतु	11-07-1957	14.81
शुक्र	10-09-1960	15.92
सूर्य	23-08-1961	19.09
चन्द्रमा	24-03-1963	20.04
मंगल	02-05-1964	21.62
राहु	09-03-1967	22.73
बृहस्पति	19-09-1969	25.58

बुध (17 वर्ष)

19/09/1969 To 19/09/1986

दूसरे	कर्क	शत्रु
भाव	राशि	संबंन्ध
अस्त	पुष्य (4)	1 , 4
विशेष	नक्षत्र	भावपति
बुध	15-02-1972	28.11
केतु	12-02-1973	30.52
शुक्र	13-12-1975	31.51
सूर्य	19-10-1976	34.34
चन्द्रमा	21-03-1978	35.19
मंगल	18-03-1979	36.61
राहु	04-10-1981	37.60
बृहस्पति	10-01-1984	40.15
शनि	19-09-1986	42.42

केतु (7 वर्ष)

19/09/1986 To 19/09/1993

दसवें	मीन	सम
भाव	राशि	संबंन्ध
वक्री	पूर्वाभाद (4)	
विशेष	नक्षत्र	भावपति
केतु	15-02-1987	45.11
शुक्र	16-04-1988	45.52
सूर्य	22-08-1988	46.69
चन्द्रमा	24-03-1989	47.04
मंगल	20-08-1989	47.62
राहु	07-09-1990	48.03
बृहस्पति	14-08-1991	49.08
शनि	22-09-1992	50.01
बुध	19-09-1993	51.12

शुक्र (20 वर्ष)

19/09/1993 To 19/09/2013

तीसरे	सिहं	शत्रु
भाव	राशि	संबंन्ध
स्वनक्षत्र	पुर्वफाल्ग (4)	12 , 5
विशेष	नक्षत्र	भावपति
शुक्र	19-01-1997	52.11
सूर्य	19-01-1998	55.44
चन्द्रमा	19-09-1999	56.44
मंगल	19-11-2000	58.11
राहु	19-11-2003	59.28
बृहस्पति	20-07-2006	62.28
शनि	19-09-2009	64.94
बुध	20-07-2012	68.11
केतु	19-09-2013	70.94

सूर्य (6 वर्ष)

19/09/2013 To 19/09/2019

दूसरे	कर्क	मित्र
भाव	राशि	संबंन्ध
	अश्लेषा (3)	3
विशेष	नक्षत्र	भावपति
सूर्य	07-01-2014	72.11
चन्द्रमा	08-07-2014	72.41
मंगल	13-11-2014	72.91
राहु	07-10-2015	73.26
बृहस्पति	26-07-2016	74.16
शनि	08-07-2017	74.96
बुध	14-05-2018	75.91
केतु	19-09-2018	76.76
शुक्र	19-09-2019	77.11

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

विंशोत्तरी दशा (2)

चन्द्रमा (10 वर्ष)		
19/09/2019 To 19/09/2029		
नौवें	कुम्भ	सम
भाव	राशि	संबंन्ध
	पूर्वाभाद (2)	2
विशेष	नक्षत्र	भावपति
चन्द्रमा	20-07-2020	78.11
मंगल	18-02-2021	78.94
राहु	20-08-2022	79.53
बृहस्पति	19-12-2023	81.03
शनि	20-07-2025	82.36
बुध	19-12-2026	83.94
केतु	20-07-2027	85.36
शुक्र	21-03-2029	85.94
सूर्य	19-09-2029	87.61

मंगल (7 वर्ष)		
19/09/2029 To 19/09/2036		
दसवें	मीन	मित्र
भाव	राशि	संबंन्ध
	रेवती (3)	11 , 6
विशेष	नक्षत्र	भावपति
मंगल	15-02-2030	88.11
राहु	05-03-2031	88.52
बृहस्पति	09-02-2032	89.57
शनि	21-03-2033	90.50
बुध	18-03-2034	91.61
केतु	14-08-2034	92.60
शुक्र	14-10-2035	93.01
सूर्य	18-02-2036	94.18
चन्द्रमा	19-09-2036	94.53

राहु (18 वर्ष)		
19/09/2036 To 19/09/2054		
चौथे	कन्या	मित्र
भाव	राशि	संबंन्ध
वक्री	उत्तरफाल्ग (2)	
विशेष	नक्षत्र	भावपति
राहु	02-06-2039	95.11
बृहस्पति	26-10-2041	97.81
शनि	01-09-2044	100.21
बुध	21-03-2047	103.06
केतु	07-04-2048	105.61
शुक्र	08-04-2051	106.66
सूर्य	02-03-2052	109.66
चन्द्रमा	01-09-2053	110.56
मंगल	19-09-2054	112.06

वर्तमान दशा/अन्तर/प्रत्यन्तर/ सूक्ष्म/ प्राण दशा

दशा	ग्रह	आरम्भ	समाप्त
महादशा	चन्द्रमा	19:09:2019 (16:52:31)	19:09:2029 (16:52:31)
अन्तर्दशा	शनि	19:12:2023 (22:52:31)	20:07:2025 (20:52:31)
प्रत्यन्तर्दशा	केतु	10:06:2024 (18:32:56)	14:07:2024 (13:50:56)
सूक्ष्मदशा	सूर्य	18:06:2024 (09:05:29)	20:06:2024 (01:39:23)
प्राणदशा	शनि	19:06:2024 (04:21:36)	19:06:2024 (10:46:58)

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

विंशोत्तरी दशा ग्रहों की अवधि के निर्धारण के लिए वैदिक ज्योतिष में प्रयुक्त एक प्रणाली है, जिसे एक व्यक्ति के जीवन में दशा के रूप में भी जाना जाता है। 'विंशोत्तरी' शब्द का अर्थ संस्कृत में '120' है, जो सभी ग्रहों की अवधि के एक पूर्ण चक्र में वर्षों की कुल संख्या का प्रतिनिधित्व करता है।

यह दशा किसी व्यक्ति के जन्म के समय चंद्रमा की स्थिति पर आधारित है, और यह वैदिक ज्योतिष के नौ ग्रहों में से प्रत्येक को निश्चित अवधि प्रदान करती है। इस प्रणाली में स्थिति के आधार पर प्रत्येक ग्रह को 6 से 20 वर्ष तक की एक विशिष्ट संख्या दी जाती है।

प्रत्येक ग्रहों की अवधि के दौरान, विचाराधीन/संबंधित ग्रह का व्यक्ति के जीवन पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। यह प्रभाव सकारात्मक या नकारात्मक हो सकता है, जो व्यक्ति के जन्मकुण्डली और उस समय के विशिष्ट ग्रहों की स्थिति पर निर्भर करता है।

विंशोत्तरी दशा को वैदिक ज्योतिष में एक महत्वपूर्ण उपकरण माना जाता है, क्योंकि यह किसी व्यक्ति के जीवन में प्रमुख घटनाओं और परिवर्तनों की भविष्यवाणी करने के लिए एक विस्तृत और सटीक प्रणाली प्रदान करता है। ज्योतिषियों द्वारा करियर, रिश्ते, स्वास्थ्य, और किसी व्यक्ति के जीवन के अन्य पहलूओं के बारे में भविष्यवाणी करने के लिए इसका व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है और यह भविष्य में मार्गदर्शन या अंतर्दृष्टि की तलाश करने वालों के लिए एक मूल्यवान उपकरण हो सकता है।

बृहस्पति दशा

(10:08:1941 – 19:09:1950)

बृहस्पति अन्तर		
बृहस्पति	-------	--
शनि	-------	--
बुध	-------	--
केतु	-------	--
शुक्र	-------	--
सूर्य	-------	--
चन्द्रमा	-------	--
मंगल	-------	--
राहु	-------	--

शनि अन्तर		
शनि	-------	--
बुध	-------	--
केतु	-------	--
शुक्र	-------	--
सूर्य	-------	--
चन्द्रमा	-------	--
मंगल	-------	--
राहु	-------	--
बृहस्पति	-------	--

बुध अन्तर		
(10:08:1941 To 26:08:1941)		
बुध	-------	--
केतु	-------	--
शुक्र	-------	--
सूर्य	-------	--
चन्द्रमा	-------	--
मंगल	-------	--
राहु	-------	--
बृहस्पति	-------	--
शनि	26-08-1941	00.00

केतु अन्तर		
(26:08:1941 To 02:08:1942)		
केतु	15-09-1941	00.04
शुक्र	11-11-1941	00.10
सूर्य	28-11-1941	00.25
चन्द्रमा	26-12-1941	00.30
मंगल	15-01-1942	00.38
राहु	07-03-1942	00.43
बृहस्पति	21-04-1942	00.57
शनि	14-06-1942	00.70
बुध	02-08-1942	00.85

शुक्र अन्तर		
(02:08:1942 To 02:04:1945)		
शुक्र	11-01-1943	00.98
सूर्य	28-02-1943	01.42
चन्द्रमा	21-05-1943	01.56
मंगल	16-07-1943	01.78
राहु	09-12-1943	01.93
बृहस्पति	17-04-1944	02.33
शनि	19-09-1944	02.69
बुध	04-02-1945	03.11
केतु	02-04-1945	03.49

सूर्य अन्तर		
(02:04:1945 To 19:01:1946)		
सूर्य	16-04-1945	03.64
चन्द्रमा	11-05-1945	03.68
मंगल	28-05-1945	03.75
राहु	11-07-1945	03.80
बृहस्पति	19-08-1945	03.92
शनि	04-10-1945	04.02
बुध	14-11-1945	04.15
केतु	01-12-1945	04.26
शुक्र	19-01-1946	04.31

चन्द्रमा अन्तर		
(19:01:1946 To 21:05:1947)		
चन्द्रमा	28-02-1946	04.44
मंगल	29-03-1946	04.56
राहु	10-06-1946	04.63
बृहस्पति	14-08-1946	04.83
शनि	30-10-1946	05.01
बुध	07-01-1947	05.22
केतु	04-02-1947	05.41
शुक्र	26-04-1947	05.49
सूर्य	21-05-1947	05.71

मंगल अन्तर		
(21:05:1947 To 26:04:1948)		
मंगल	09-06-1947	05.78
राहु	31-07-1947	05.83
बृहस्पति	14-09-1947	05.97
शनि	07-11-1947	06.10
बुध	25-12-1947	06.24
केतु	14-01-1948	06.38
शुक्र	11-03-1948	06.43
सूर्य	28-03-1948	06.59
चन्द्रमा	26-04-1948	06.63

राहु अन्तर		
(26:04:1948 To 19:09:1950)		
राहु	04-09-1948	06.71
बृहस्पति	30-12-1948	07.07
शनि	18-05-1949	07.39
बुध	19-09-1949	07.77
केतु	09-11-1949	08.11
शुक्र	04-04-1950	08.25
सूर्य	18-05-1950	08.65
चन्द्रमा	30-07-1950	08.77
मंगल	19-09-1950	08.97

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

शनि दशा

(19:09:1950 – 19:09:1969)

शनि अन्तर		
(19:09:1950 To 22:09:1953)		
शनि	12-03-1951	09.11
बुध	15-08-1951	09.59
केतु	18-10-1951	10.01
शुक्र	18-04-1952	10.19
सूर्य	12-06-1952	10.69
चन्द्रमा	12-09-1952	10.84
मंगल	15-11-1952	11.09
राहु	29-04-1953	11.27
बृहस्पति	22-09-1953	11.72

बुध अन्तर		
(22:09:1953 To 01:06:1956)		
बुध	08-02-1954	12.12
केतु	07-04-1954	12.50
शुक्र	17-09-1954	12.66
सूर्य	06-11-1954	13.11
चन्द्रमा	26-01-1955	13.24
मंगल	25-03-1955	13.47
राहु	19-08-1955	13.62
बृहस्पति	28-12-1955	14.03
शनि	01-06-1956	14.39

केतु अन्तर		
(01:06:1956 To 11:07:1957)		
केतु	25-06-1956	14.81
शुक्र	31-08-1956	14.88
सूर्य	21-09-1956	15.06
चन्द्रमा	24-10-1956	15.12
मंगल	17-11-1956	15.21
राहु	17-01-1957	15.27
बृहस्पति	12-03-1957	15.44
शनि	15-05-1957	15.59
बुध	11-07-1957	15.76

शुक्र अन्तर		
(11:07:1957 To 10:09:1960)		
शुक्र	20-01-1958	15.92
सूर्य	19-03-1958	16.45
चन्द्रमा	23-06-1958	16.61
मंगल	29-08-1958	16.87
राहु	19-02-1959	17.05
बृहस्पति	23-07-1959	17.53
शनि	22-01-1960	17.95
बुध	04-07-1960	18.45
केतु	10-09-1960	18.90

सूर्य अन्तर		
(10:09:1960 To 23:08:1961)		
सूर्य	27-09-1960	19.09
चन्द्रमा	26-10-1960	19.13
मंगल	15-11-1960	19.21
राहु	07-01-1961	19.27
बृहस्पति	22-02-1961	19.41
शनि	18-04-1961	19.54
बुध	06-06-1961	19.69
केतु	26-06-1961	19.82
शुक्र	23-08-1961	19.88

चन्द्रमा अन्तर		
(23:08:1961 To 24:03:1963)		
चन्द्रमा	10-10-1961	20.04
मंगल	13-11-1961	20.17
राहु	07-02-1962	20.26
बृहस्पति	25-04-1962	20.50
शनि	26-07-1962	20.71
बुध	16-10-1962	20.96
केतु	19-11-1962	21.18
शुक्र	23-02-1963	21.28
सूर्य	24-03-1963	21.54

मंगल अन्तर		
(24:03:1963 To 02:05:1964)		
मंगल	16-04-1963	21.62
राहु	16-06-1963	21.68
बृहस्पति	09-08-1963	21.85
शनि	12-10-1963	22.00
बुध	08-12-1963	22.17
केतु	01-01-1964	22.33
शुक्र	09-03-1964	22.40
सूर्य	29-03-1964	22.58
चन्द्रमा	02-05-1964	22.64

राहु अन्तर		
(02:05:1964 To 09:03:1967)		
राहु	05-10-1964	22.73
बृहस्पति	21-02-1965	23.16
शनि	05-08-1965	23.54
बुध	30-12-1965	23.99
केतु	01-03-1966	24.39
शुक्र	21-08-1966	24.56
सूर्य	12-10-1966	25.03
चन्द्रमा	07-01-1967	25.17
मंगल	09-03-1967	25.41

बृहस्पति अन्तर		
(09:03:1967 To 19:09:1969)		
बृहस्पति	10-07-1967	25.58
शनि	03-12-1967	25.92
बुध	13-04-1968	26.32
केतु	06-06-1968	26.68
शुक्र	07-11-1968	26.82
सूर्य	23-12-1968	27.25
चन्द्रमा	11-03-1969	27.37
मंगल	04-05-1969	27.58
राहु	19-09-1969	27.73

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

बुध दशा

(19:09:1969 – 19:09:1986)

बुध अन्तर		
(19:09:1969 To 15:02:1972)		
बुध	22-01-1970	28.11
केतु	14-03-1970	28.45
शुक्र	08-08-1970	28.59
सूर्य	20-09-1970	28.99
चन्द्रमा	03-12-1970	29.11
मंगल	23-01-1971	29.32
राहु	04-06-1971	29.46
बृहस्पति	29-09-1971	29.82
शनि	15-02-1972	30.14

केतु अन्तर		
(15:02:1972 To 12:02:1973)		
केतु	08-03-1972	30.52
शुक्र	07-05-1972	30.58
सूर्य	25-05-1972	30.74
चन्द्रमा	24-06-1972	30.79
मंगल	16-07-1972	30.87
राहु	08-09-1972	30.93
बृहस्पति	26-10-1972	31.08
शनि	23-12-1972	31.21
बुध	12-02-1973	31.37

शुक्र अन्तर		
(12:02:1973 To 13:12:1975)		
शुक्र	04-08-1973	31.51
सूर्य	24-09-1973	31.98
चन्द्रमा	19-12-1973	32.13
मंगल	18-02-1974	32.36
राहु	23-07-1974	32.53
बृहस्पति	08-12-1974	32.95
शनि	21-05-1975	33.33
बुध	14-10-1975	33.78
केतु	13-12-1975	34.18

सूर्य अन्तर		
(13:12:1975 To 19:10:1976)		
सूर्य	29-12-1975	34.34
चन्द्रमा	24-01-1976	34.39
मंगल	11-02-1976	34.46
राहु	29-03-1976	34.51
बृहस्पति	09-05-1976	34.64
शनि	27-06-1976	34.75
बुध	10-08-1976	34.88
केतु	29-08-1976	35.00
शुक्र	19-10-1976	35.05

चन्द्रमा अन्तर		
(19:10:1976 To 21:03:1978)		
चन्द्रमा	02-12-1976	35.19
मंगल	01-01-1977	35.31
राहु	19-03-1977	35.40
बृहस्पति	27-05-1977	35.61
शनि	17-08-1977	35.80
बुध	30-10-1977	36.02
केतु	29-11-1977	36.22
शुक्र	23-02-1978	36.30
सूर्य	21-03-1978	36.54

मंगल अन्तर		
(21:03:1978 To 18:03:1979)		
मंगल	11-04-1978	36.61
राहु	04-06-1978	36.67
बृहस्पति	22-07-1978	36.82
शनि	18-09-1978	36.95
बुध	08-11-1978	37.11
केतु	29-11-1978	37.25
शुक्र	28-01-1979	37.31
सूर्य	15-02-1979	37.47
चन्द्रमा	18-03-1979	37.52

राहु अन्तर		
(18:03:1979 To 04:10:1981)		
राहु	04-08-1979	37.60
बृहस्पति	06-12-1979	37.99
शनि	02-05-1980	38.33
बुध	11-09-1980	38.73
केतु	05-11-1980	39.09
शुक्र	09-04-1981	39.24
सूर्य	26-05-1981	39.66
चन्द्रमा	11-08-1981	39.79
मंगल	04-10-1981	40.00

बृहस्पति अन्तर		
(04:10:1981 To 10:01:1984)		
बृहस्पति	23-01-1982	40.15
शनि	03-06-1982	40.46
बुध	28-09-1982	40.81
केतु	15-11-1982	41.14
शुक्र	02-04-1983	41.27
सूर्य	13-05-1983	41.65
चन्द्रमा	21-07-1983	41.76
मंगल	08-09-1983	41.95
राहु	10-01-1984	42.08

शनि अन्तर		
(10:01:1984 To 19:09:1986)		
शनि	14-06-1984	42.42
बुध	31-10-1984	42.85
केतु	28-12-1984	43.23
शुक्र	10-06-1985	43.38
सूर्य	29-07-1985	43.83
चन्द्रमा	19-10-1985	43.97
मंगल	15-12-1985	44.19
राहु	11-05-1986	44.35
बृहस्पति	19-09-1986	44.75

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

केतु दशा

(19:09:1986 – 19:09:1993)

केतु अन्तर		
(19:09:1986 To 15:02:1987)		
केतु	28-09-1986	45.11
शुक्र	23-10-1986	45.14
सूर्य	30-10-1986	45.20
चन्द्रमा	12-11-1986	45.22
मंगल	20-11-1986	45.26
राहु	13-12-1986	45.28
बृहस्पति	02-01-1987	45.34
शनि	25-01-1987	45.40
बुध	15-02-1987	45.46

शुक्र अन्तर		
(15:02:1987 To 16:04:1988)		
शुक्र	27-04-1987	45.52
सूर्य	19-05-1987	45.71
चन्द्रमा	23-06-1987	45.77
मंगल	18-07-1987	45.87
राहु	20-09-1987	45.94
बृहस्पति	15-11-1987	46.11
शनि	22-01-1988	46.27
बुध	22-03-1988	46.45
केतु	16-04-1988	46.62

सूर्य अन्तर		
(16:04:1988 To 22:08:1988)		
सूर्य	23-04-1988	46.69
चन्द्रमा	03-05-1988	46.70
मंगल	11-05-1988	46.73
राहु	30-05-1988	46.75
बृहस्पति	16-06-1988	46.81
शनि	07-07-1988	46.85
बुध	25-07-1988	46.91
केतु	01-08-1988	46.96
शुक्र	22-08-1988	46.98

चन्द्रमा अन्तर		
(22:08:1988 To 24:03:1989)		
चन्द्रमा	09-09-1988	47.04
मंगल	22-09-1988	47.08
राहु	24-10-1988	47.12
बृहस्पति	21-11-1988	47.21
शनि	25-12-1988	47.28
बुध	24-01-1989	47.38
केतु	06-02-1989	47.46
शुक्र	13-03-1989	47.49
सूर्य	24-03-1989	47.59

मंगल अन्तर		
(24:03:1989 To 20:08:1989)		
मंगल	01-04-1989	47.62
राहु	24-04-1989	47.64
बृहस्पति	14-05-1989	47.70
शनि	06-06-1989	47.76
बुध	27-06-1989	47.82
केतु	06-07-1989	47.88
शुक्र	31-07-1989	47.91
सूर्य	07-08-1989	47.97
चन्द्रमा	20-08-1989	47.99

राहु अन्तर		
(20:08:1989 To 07:09:1990)		
राहु	16-10-1989	48.03
बृहस्पति	06-12-1989	48.19
शनि	05-02-1990	48.33
बुध	31-03-1990	48.49
केतु	23-04-1990	48.64
शुक्र	26-06-1990	48.70
सूर्य	15-07-1990	48.88
चन्द्रमा	16-08-1990	48.93
मंगल	07-09-1990	49.02

बृहस्पति अन्तर		
(07:09:1990 To 14:08:1991)		
बृहस्पति	22-10-1990	49.08
शनि	15-12-1990	49.20
बुध	02-02-1991	49.35
केतु	22-02-1991	49.48
शुक्र	19-04-1991	49.54
सूर्य	06-05-1991	49.69
चन्द्रमा	04-06-1991	49.74
मंगल	24-06-1991	49.82
राहु	14-08-1991	49.87

शनि अन्तर		
(14:08:1991 To 22:09:1992)		
शनि	17-10-1991	50.01
बुध	13-12-1991	50.19
केतु	06-01-1992	50.34
शुक्र	13-03-1992	50.41
सूर्य	03-04-1992	50.59
चन्द्रमा	06-05-1992	50.65
मंगल	30-05-1992	50.74
राहु	30-07-1992	50.81
बृहस्पति	22-09-1992	50.97

बुध अन्तर		
(22:09:1992 To 19:09:1993)		
बुध	12-11-1992	51.12
केतु	04-12-1992	51.26
शुक्र	02-02-1993	51.32
सूर्य	20-02-1993	51.48
चन्द्रमा	22-03-1993	51.53
मंगल	12-04-1993	51.62
राहु	06-06-1993	51.67
बृहस्पति	24-07-1993	51.82
शनि	19-09-1993	51.95

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

शुक्र दशा

(19:09:1993 – 19:09:2013)

शुक्र अन्तर (19:09:1993 To 19:01:1997)		
शुक्र	10-04-1994	52.11
सूर्य	10-06-1994	52.67
चन्द्रमा	19-09-1994	52.83
मंगल	29-11-1994	53.11
राहु	31-05-1995	53.31
बृहस्पति	09-11-1995	53.81
शनि	20-05-1996	54.25
बुध	09-11-1996	54.78
केतु	19-01-1997	55.25

सूर्य अन्तर (19:01:1997 To 19:01:1998)		
सूर्य	06-02-1997	55.44
चन्द्रमा	09-03-1997	55.49
मंगल	30-03-1997	55.58
राहु	24-05-1997	55.64
बृहस्पति	11-07-1997	55.79
शनि	07-09-1997	55.92
बुध	29-10-1997	56.08
केतु	19-11-1997	56.22
शुक्र	19-01-1998	56.28

चन्द्रमा अन्तर (19:01:1998 To 19:09:1999)		
चन्द्रमा	11-03-1998	56.44
मंगल	15-04-1998	56.58
राहु	15-07-1998	56.68
बृहस्पति	04-10-1998	56.93
शनि	09-01-1999	57.15
बुध	05-04-1999	57.42
केतु	10-05-1999	57.65
शुक्र	20-08-1999	57.75
सूर्य	19-09-1999	58.03

मंगल अन्तर (19:09:1999 To 19:11:2000)		
मंगल	14-10-1999	58.11
राहु	17-12-1999	58.18
बृहस्पति	12-02-2000	58.35
शनि	19-04-2000	58.51
बुध	19-06-2000	58.69
केतु	14-07-2000	58.86
शुक्र	23-09-2000	58.93
सूर्य	14-10-2000	59.12
चन्द्रमा	19-11-2000	59.18

राहु अन्तर (19:11:2000 To 19:11:2003)		
राहु	02-05-2001	59.28
बृहस्पति	25-09-2001	59.73
शनि	18-03-2002	60.13
बुध	20-08-2002	60.60
केतु	23-10-2002	61.03
शुक्र	23-04-2003	61.20
सूर्य	17-06-2003	61.70
चन्द्रमा	16-09-2003	61.85
मंगल	19-11-2003	62.10

बृहस्पति अन्तर (19:11:2003 To 20:07:2006)		
बृहस्पति	28-03-2004	62.28
शनि	30-08-2004	62.63
बुध	15-01-2005	63.06
केतु	13-03-2005	63.43
शुक्र	22-08-2005	63.59
सूर्य	09-10-2005	64.03
चन्द्रमा	30-12-2005	64.17
मंगल	24-02-2006	64.39
राहु	20-07-2006	64.54

शनि अन्तर (20:07:2006 To 19:09:2009)		
शनि	19-01-2007	64.94
बुध	02-07-2007	65.45
केतु	08-09-2007	65.89
शुक्र	18-03-2008	66.08
सूर्य	15-05-2008	66.61
चन्द्रमा	20-08-2008	66.77
मंगल	27-10-2008	67.03
राहु	18-04-2009	67.21
बृहस्पति	19-09-2009	67.69

बुध अन्तर (19:09:2009 To 20:07:2012)		
बुध	13-02-2010	68.11
केतु	14-04-2010	68.51
शुक्र	03-10-2010	68.68
सूर्य	24-11-2010	69.15
चन्द्रमा	18-02-2011	69.29
मंगल	20-04-2011	69.53
राहु	22-09-2011	69.69
बृहस्पति	07-02-2012	70.12
शनि	20-07-2012	70.50

केतु अन्तर (20:07:2012 To 19:09:2013)		
केतु	14-08-2012	70.94
शुक्र	24-10-2012	71.01
सूर्य	14-11-2012	71.21
चन्द्रमा	20-12-2012	71.27
मंगल	14-01-2013	71.36
राहु	19-03-2013	71.43
बृहस्पति	14-05-2013	71.61
शनि	21-07-2013	71.76
बुध	19-09-2013	71.95

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

सूर्य दशा

(19:09:2013 – 19:09:2019)

सूर्य अन्तर		
(19:09:2013 To 07:01:2014)		
सूर्य	25-09-2013	72.11
चन्द्रमा	04-10-2013	72.13
मंगल	10-10-2013	72.15
राहु	27-10-2013	72.17
बृहस्पति	10-11-2013	72.21
शनि	28-11-2013	72.25
बुध	13-12-2013	72.30
केतु	19-12-2013	72.34
शुक्र	07-01-2014	72.36

चन्द्रमा अन्तर		
(07:01:2014 To 08:07:2014)		
चन्द्रमा	22-01-2014	72.41
मंगल	02-02-2014	72.45
राहु	01-03-2014	72.48
बृहस्पति	25-03-2014	72.56
शनि	23-04-2014	72.62
बुध	19-05-2014	72.70
केतु	30-05-2014	72.77
शुक्र	29-06-2014	72.80
सूर्य	08-07-2014	72.89

मंगल अन्तर		
(08:07:2014 To 13:11:2014)		
मंगल	16-07-2014	72.91
राहु	04-08-2014	72.93
बृहस्पति	21-08-2014	72.98
शनि	10-09-2014	73.03
बुध	28-09-2014	73.09
केतु	06-10-2014	73.14
शुक्र	27-10-2014	73.16
सूर्य	02-11-2014	73.21
चन्द्रमा	13-11-2014	73.23

राहु अन्तर		
(13:11:2014 To 07:10:2015)		
राहु	01-01-2015	73.26
बृहस्पति	14-02-2015	73.40
शनि	07-04-2015	73.52
बुध	24-05-2015	73.66
केतु	12-06-2015	73.79
शुक्र	05-08-2015	73.84
सूर्य	22-08-2015	73.99
चन्द्रमा	18-09-2015	74.03
मंगल	07-10-2015	74.11

बृहस्पति अन्तर		
(07:10:2015 To 26:07:2016)		
बृहस्पति	15-11-2015	74.16
शनि	01-01-2016	74.27
बुध	11-02-2016	74.39
केतु	28-02-2016	74.51
शुक्र	17-04-2016	74.55
सूर्य	02-05-2016	74.69
चन्द्रमा	26-05-2016	74.73
मंगल	12-06-2016	74.79
राहु	26-07-2016	74.84

शनि अन्तर		
(26:07:2016 To 08:07:2017)		
शनि	19-09-2016	74.96
बुध	07-11-2016	75.11
केतु	28-11-2016	75.25
शुक्र	24-01-2017	75.30
सूर्य	11-02-2017	75.46
चन्द्रमा	12-03-2017	75.51
मंगल	01-04-2017	75.59
राहु	23-05-2017	75.64
बृहस्पति	08-07-2017	75.78

बुध अन्तर		
(08:07:2017 To 14:05:2018)		
बुध	21-08-2017	75.91
केतु	08-09-2017	76.03
शुक्र	30-10-2017	76.08
सूर्य	14-11-2017	76.22
चन्द्रमा	10-12-2017	76.27
मंगल	28-12-2017	76.34
राहु	13-02-2018	76.39
बृहस्पति	26-03-2018	76.51
शनि	14-05-2018	76.63

केतु अन्तर		
(14:05:2018 To 19:09:2018)		
केतु	22-05-2018	76.76
शुक्र	12-06-2018	76.78
सूर्य	19-06-2018	76.84
चन्द्रमा	29-06-2018	76.86
मंगल	07-07-2018	76.89
राहु	26-07-2018	76.91
बृहस्पति	12-08-2018	76.96
शनि	01-09-2018	77.01
बुध	19-09-2018	77.06

शुक्र अन्तर		
(19:09:2018 To 19:09:2019)		
शुक्र	19-11-2018	77.11
सूर्य	07-12-2018	77.28
चन्द्रमा	07-01-2019	77.33
मंगल	28-01-2019	77.41
राहु	24-03-2019	77.47
बृहस्पति	11-05-2019	77.62
शनि	08-07-2019	77.75
बुध	29-08-2019	77.91
केतु	19-09-2019	78.05

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

चन्द्रमा दशा

(19:09:2019 – 19:09:2029)

चन्द्रमा अन्तर		
(19:09:2019 To 20:07:2020)		
चन्द्रमा	15-10-2019	78.11
मंगल	01-11-2019	78.18
राहु	17-12-2019	78.23
बृहस्पति	27-01-2020	78.35
शनि	15-03-2020	78.47
बुध	27-04-2020	78.60
केतु	15-05-2020	78.72
शुक्र	05-07-2020	78.76
सूर्य	20-07-2020	78.90

मंगल अन्तर		
(20:07:2020 To 18:02:2021)		
मंगल	01-08-2020	78.94
राहु	02-09-2020	78.98
बृहस्पति	01-10-2020	79.07
शनि	04-11-2020	79.14
बुध	04-12-2020	79.24
केतु	16-12-2020	79.32
शुक्र	21-01-2021	79.35
सूर्य	01-02-2021	79.45
चन्द्रमा	18-02-2021	79.48

राहु अन्तर		
(18:02:2021 To 20:08:2022)		
राहु	11-05-2021	79.53
बृहस्पति	23-07-2021	79.75
शनि	18-10-2021	79.95
बुध	04-01-2022	80.19
केतु	05-02-2022	80.40
शुक्र	07-05-2022	80.49
सूर्य	03-06-2022	80.74
चन्द्रमा	19-07-2022	80.82
मंगल	20-08-2022	80.94

बृहस्पति अन्तर		
(20:08:2022 To 19:12:2023)		
बृहस्पति	24-10-2022	81.03
शनि	09-01-2023	81.21
बुध	19-03-2023	81.42
केतु	16-04-2023	81.61
शुक्र	06-07-2023	81.68
सूर्य	31-07-2023	81.91
चन्द्रमा	09-09-2023	81.97
मंगल	07-10-2023	82.08
राहु	19-12-2023	82.16

शनि अन्तर		
(19:12:2023 To 20:07:2025)		
शनि	20-03-2024	82.36
बुध	10-06-2024	82.61
केतु	14-07-2024	82.84
शुक्र	19-10-2024	82.93
सूर्य	17-11-2024	83.19
चन्द्रमा	04-01-2025	83.27
मंगल	07-02-2025	83.40
राहु	04-05-2025	83.50
बृहस्पति	20-07-2025	83.73

बुध अन्तर		
(20:07:2025 To 19:12:2026)		
बुध	02-10-2025	83.94
केतु	01-11-2025	84.15
शुक्र	26-01-2026	84.23
सूर्य	21-02-2026	84.46
चन्द्रमा	05-04-2026	84.53
मंगल	05-05-2026	84.65
राहु	22-07-2026	84.74
बृहस्पति	29-09-2026	84.95
शनि	19-12-2026	85.14

केतु अन्तर		
(19:12:2026 To 20:07:2027)		
केतु	01-01-2027	85.36
शुक्र	05-02-2027	85.40
सूर्य	16-02-2027	85.49
चन्द्रमा	06-03-2027	85.52
मंगल	18-03-2027	85.57
राहु	19-04-2027	85.60
बृहस्पति	17-05-2027	85.69
शनि	20-06-2027	85.77
बुध	20-07-2027	85.86

शुक्र अन्तर		
(20:07:2027 To 21:03:2029)		
शुक्र	30-10-2027	85.94
सूर्य	29-11-2027	86.22
चन्द्रमा	19-01-2028	86.31
मंगल	24-02-2028	86.44
राहु	25-05-2028	86.54
बृहस्पति	14-08-2028	86.79
शनि	19-11-2028	87.01
बुध	13-02-2029	87.28
केतु	21-03-2029	87.51

सूर्य अन्तर		
(21:03:2029 To 19:09:2029)		
सूर्य	30-03-2029	87.61
चन्द्रमा	14-04-2029	87.64
मंगल	25-04-2029	87.68
राहु	22-05-2029	87.71
बृहस्पति	15-06-2029	87.78
शनि	14-07-2029	87.85
बुध	09-08-2029	87.93
केतु	20-08-2029	88.00
शुक्र	19-09-2029	88.03

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

मंगल दशा

(19:09:2029 – 19:09:2036)

मंगल अन्तर

(19:09:2029 To 15:02:2030)

मंगल	28-09-2029	88.11
राहु	20-10-2029	88.14
बृहस्पति	09-11-2029	88.20
शनि	03-12-2029	88.25
बुध	24-12-2029	88.32
केतु	02-01-2030	88.37
शुक्र	26-01-2030	88.40
सूर्य	03-02-2030	88.47
चन्द्रमा	15-02-2030	88.49

राहु अन्तर

(15:02:2030 To 05:03:2031)

राहु	14-04-2030	88.52
बृहस्पति	04-06-2030	88.68
शनि	04-08-2030	88.82
बुध	27-09-2030	88.98
केतु	19-10-2030	89.13
शुक्र	22-12-2030	89.19
सूर्य	10-01-2031	89.37
चन्द्रमा	11-02-2031	89.42
मंगल	05-03-2031	89.51

बृहस्पति अन्तर

(05:03:2031 To 09:02:2032)

बृहस्पति	20-04-2031	89.57
शनि	13-06-2031	89.69
बुध	31-07-2031	89.84
केतु	20-08-2031	89.97
शुक्र	16-10-2031	90.03
सूर्य	02-11-2031	90.18
चन्द्रमा	30-11-2031	90.23
मंगल	20-12-2031	90.31
राहु	09-02-2032	90.36

शनि अन्तर

(09:02:2032 To 21:03:2033)

शनि	14-04-2032	90.50
बुध	10-06-2032	90.68
केतु	04-07-2032	90.84
शुक्र	09-09-2032	90.90
सूर्य	30-09-2032	91.08
चन्द्रमा	02-11-2032	91.14
मंगल	26-11-2032	91.23
राहु	26-01-2033	91.30
बृहस्पति	21-03-2033	91.46

बुध अन्तर

(21:03:2033 To 18:03:2034)

बुध	11-05-2033	91.61
केतु	01-06-2033	91.75
शुक्र	31-07-2033	91.81
सूर्य	19-08-2033	91.97
चन्द्रमा	18-09-2033	92.02
मंगल	09-10-2033	92.11
राहु	02-12-2033	92.16
बृहस्पति	19-01-2034	92.31
शनि	18-03-2034	92.45

केतु अन्तर

(18:03:2034 To 14:08:2034)

केतु	26-03-2034	92.60
शुक्र	20-04-2034	92.63
सूर्य	28-04-2034	92.69
चन्द्रमा	10-05-2034	92.72
मंगल	19-05-2034	92.75
राहु	10-06-2034	92.77
बृहस्पति	30-06-2034	92.83
शनि	24-07-2034	92.89
बुध	14-08-2034	92.95

शुक्र अन्तर

(14:08:2034 To 14:10:2035)

शुक्र	24-10-2034	93.01
सूर्य	14-11-2034	93.21
चन्द्रमा	19-12-2034	93.26
मंगल	13-01-2035	93.36
राहु	18-03-2035	93.43
बृहस्पति	14-05-2035	93.60
शनि	20-07-2035	93.76
बुध	19-09-2035	93.94
केतु	14-10-2035	94.11

सूर्य अन्तर

(14:10:2035 To 18:02:2036)

सूर्य	20-10-2035	94.18
चन्द्रमा	31-10-2035	94.20
मंगल	07-11-2035	94.22
राहु	26-11-2035	94.25
बृहस्पति	13-12-2035	94.30
शनि	02-01-2036	94.34
बुध	21-01-2036	94.40
केतु	28-01-2036	94.45
शुक्र	18-02-2036	94.47

चन्द्रमा अन्तर

(18:02:2036 To 19:09:2036)

चन्द्रमा	07-03-2036	94.53
मंगल	20-03-2036	94.58
राहु	21-04-2036	94.61
बृहस्पति	19-05-2036	94.70
शनि	22-06-2036	94.78
बुध	22-07-2036	94.87
केतु	04-08-2036	94.95
शुक्र	08-09-2036	94.98
सूर्य	19-09-2036	95.08

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

राहु दशा

(19:09:2036 – 19:09:2054)

राहु अन्तर		
(19:09:2036 To 02:06:2039)		
राहु	14-02-2037	95.11
बृहस्पति	25-06-2037	95.52
शनि	28-11-2037	95.88
बुध	17-04-2038	96.30
केतु	14-06-2038	96.69
शुक्र	25-11-2038	96.84
सूर्य	13-01-2039	97.29
चन्द्रमा	05-04-2039	97.43
मंगल	02-06-2039	97.65

बृहस्पति अन्तर		
(02:06:2039 To 26:10:2041)		
बृहस्पति	27-09-2039	97.81
शनि	12-02-2040	98.13
बुध	16-06-2040	98.51
केतु	06-08-2040	98.85
शुक्र	30-12-2040	98.99
सूर्य	12-02-2041	99.39
चन्द्रमा	26-04-2041	99.51
मंगल	16-06-2041	99.71
राहु	26-10-2041	99.85

शनि अन्तर		
(26:10:2041 To 01:09:2044)		
शनि	08-04-2042	100.21
बुध	03-09-2042	100.66
केतु	02-11-2042	101.07
शुक्र	25-04-2043	101.23
सूर्य	16-06-2043	101.71
चन्द्रमा	11-09-2043	101.85
मंगल	10-11-2043	102.09
राहु	15-04-2044	102.25
बृहस्पति	01-09-2044	102.68

बुध अन्तर		
(01:09:2044 To 21:03:2047)		
बुध	11-01-2045	103.06
केतु	06-03-2045	103.42
शुक्र	08-08-2045	103.57
सूर्य	24-09-2045	104.00
चन्द्रमा	10-12-2045	104.12
मंगल	03-02-2046	104.34
राहु	22-06-2046	104.49
बृहस्पति	24-10-2046	104.87
शनि	21-03-2047	105.21

केतु अन्तर		
(21:03:2047 To 07:04:2048)		
केतु	12-04-2047	105.61
शुक्र	15-06-2047	105.67
सूर्य	04-07-2047	105.85
चन्द्रमा	05-08-2047	105.90
मंगल	27-08-2047	105.99
राहु	24-10-2047	106.05
बृहस्पति	14-12-2047	106.21
शनि	13-02-2048	106.35
बुध	07-04-2048	106.51

शुक्र अन्तर		
(07:04:2048 To 08:04:2051)		
शुक्र	07-10-2048	106.66
सूर्य	01-12-2048	107.16
चन्द्रमा	02-03-2049	107.31
मंगल	05-05-2049	107.56
राहु	17-10-2049	107.74
बृहस्पति	12-03-2050	108.19
शनि	01-09-2050	108.59
बुध	03-02-2051	109.06
केतु	08-04-2051	109.49

सूर्य अन्तर		
(08:04:2051 To 02:03:2052)		
सूर्य	24-04-2051	109.66
चन्द्रमा	22-05-2051	109.71
मंगल	10-06-2051	109.78
राहु	29-07-2051	109.83
बृहस्पति	11-09-2051	109.97
शनि	02-11-2051	110.09
बुध	19-12-2051	110.23
केतु	07-01-2052	110.36
शुक्र	02-03-2052	110.41

चन्द्रमा अन्तर		
(02:03:2052 To 01:09:2053)		
चन्द्रमा	16-04-2052	110.56
मंगल	18-05-2052	110.69
राहु	09-08-2052	110.77
बृहस्पति	21-10-2052	111.00
शनि	16-01-2053	111.20
बुध	03-04-2053	111.44
केतु	05-05-2053	111.65
शुक्र	05-08-2053	111.74
सूर्य	01-09-2053	111.99

मंगल अन्तर		
(01:09:2053 To 19:09:2054)		
मंगल	23-09-2053	112.06
राहु	20-11-2053	112.12
बृहस्पति	10-01-2054	112.28
शनि	12-03-2054	112.42
बुध	05-05-2054	112.59
केतु	27-05-2054	112.74
शुक्र	30-07-2054	112.80
सूर्य	18-08-2054	112.97
चन्द्रमा	19-09-2054	113.02

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

गोचर शनि

द्वादशे जन्मगै राशौ द्वितीये च शनैश्चर। सर्धानि सप्त वर्षाणि तथा दुखैर्युतो भवेत।।

(गोचर में जब शनि ग्रह, जन्म चंद्र से बारहवें, पहले और दूसरे भाव में भ्रमण करता है, उस समय (लगभग साढ़े सात वर्ष तक) को शनि साढ़ेसाती के नाम से जाना जाता है।)

प्रथम चक्र

साढ़ेसाती चक्र	गोचर राशि में	आरम्भ का समय	समाप्ति का समय	भ्रमण काल (व—म—दि)	शनि मूर्ति
कंटक शनि	वृष	14/12/1941	14/12/1941	0.0 y.0.0 m.0 d.	लौह
कंटक शनि	वृष	03/03/1942	05/08/1943	1.0 y.5.0 m.3 d.	ताम्र
कंटक शनि	वृष	17/12/1943	23/04/1944	0.0 y.4.0 m.6 d.	स्वर्ण
अष्टम शनि	कन्या	20/09/1950	25/11/1952	2.0 y.2.0 m.6 d.	ताम्र
अष्टम शनि	कन्या	24/04/1953	21/08/1953	0.0 y.3.0 m.28 d.	रजत

द्वितिय चक्र

साढ़ेसाती चक्र	गोचर राशि में	आरम्भ का समय	समाप्ति का समय	भ्रमण काल (व—म—दि)	शनि मूर्ति
प्रथम ढ़ैय्या	मक.	02/02/1961	17/09/1961	0.0 y.7.0 m.14 d.	स्वर्ण
प्रथम ढ़ैय्या	मक.	08/10/1961	27/01/1964	2.0 y.3.0 m.20 d.	स्वर्ण
द्वितिय ढ़ैय्या	कुम्भ	27/01/1964	09/04/1966	2.0 y.2.0 m.12 d.	रजत
द्वितिय ढ़ैय्या	कुम्भ	03/11/1966	20/12/1966	0.0 y.1.0 m.17 d.	रजत
तृतिय ढ़ैय्या	मीन	09/04/1966	03/11/1966	0.0 y.6.0 m.26 d.	रजत
तृतिय ढ़ैय्या	मीन	20/12/1966	17/06/1968	1.0 y.5.0 m.28 d.	स्वर्ण
तृतिय ढ़ैय्या	मीन	28/09/1968	07/03/1969	0.0 y.5.0 m.8 d.	रजत
कंटक शनि	वृष	28/04/1971	10/06/1973	2.0 y.1.0 m.13 d.	स्वर्ण
अष्टम शनि	कन्या	04/11/1979	15/03/1980	0.0 y.4.0 m.10 d.	स्वर्ण
अष्टम शनि	कन्या	27/07/1980	06/10/1982	2.0 y.2.0 m.10 d.	रजत

तृतिय चक्र

साढ़ेसाती चक्र	गोचर राशि में	आरम्भ का समय	समाप्ति का समय	भ्रमण काल (व—म—दि)	शनि मूर्ति
प्रथम ढ़ैय्या	मक.	21/03/1990	20/06/1990	0.0 y.3.0 m.0 d.	रजत
प्रथम ढ़ैय्या	मक.	15/12/1990	05/03/1993	2.0 y.2.0 m.19 d.	ताम्र
प्रथम ढ़ैय्या	मक.	15/10/1993	10/11/1993	0.0 y.0.0 m.26 d.	रजत
द्वितिय ढ़ैय्या	कुम्भ	05/03/1993	15/10/1993	0.0 y.7.0 m.11 d.	लौह
द्वितिय ढ़ैय्या	कुम्भ	10/11/1993	02/06/1995	1.0 y.6.0 m.22 d.	ताम्र
द्वितिय ढ़ैय्या	कुम्भ	10/08/1995	16/02/1996	0.0 y.6.0 m.8 d.	रजत
तृतिय ढ़ैय्या	मीन	02/06/1995	10/08/1995	0.0 y.2.0 m.9 d.	ताम्र
तृतिय ढ़ैय्या	मीन	16/02/1996	17/04/1998	2.0 y.1.0 m.30 d.	लौह
कंटक शनि	वृष	07/06/2000	23/07/2002	2.0 y.1.0 m.15 d.	स्वर्ण
कंटक शनि	वृष	08/01/2003	07/04/2003	0.0 y.2.0 m.28 d.	लौह
अष्टम शनि	कन्या	10/09/2009	15/11/2011	2.0 y.2.0 m.6 d.	स्वर्ण
अष्टम शनि	कन्या	16/05/2012	04/08/2012	0.0 y.2.0 m.19 d.	ताम्र

सूर्य

(सात्विक, आग्नेय, क्षत्रिय)

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः। (30 दिन में 7000 बार)

आस्त्येन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मृर्त्य च।
हिरण्येन सविता रथेनादेवी यति भुवना विपश्यत्।।

राशि (अंश)	कर्क (23:47:42)	प्रसिद्धि
नक्षत्र (पद)	अश्लेषा (3)	शक्ति
कारक	भ्रात्रि	स्वास्थ्य
बल		पिता
स्थान	मित्र राशि में	राजनीतिज्ञ

क्या है सूर्य ?

कारकत्व– पिता, आत्मा, पौरूष सिद्धान्त, प्रेरणा, कार्य, अधिकार।

सूर्य शक्ति की भावना से संबंधित है। सूर्य जिस भी भाव में स्थित होता है, उस भाव को बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। यहां तक कि सूर्य से जुड़ी राशि की विशेषताएं भी सामान्यतः तीव्र होती हैं। वह भाव जिसमें सूर्य स्थित होता है, व्यक्ति के संपूर्ण जीवनकाल के लिए बहुत महत्वपूर्ण होता है। सूर्य व्यक्ति की कुण्डली में जिस भाव व राशि में स्थित होता है, उसकी प्रकृति के अनुसार तथा युति व दृष्टि के द्वारा अन्य ग्रहों व भावों से बने संबंधों के आधार पर व्यक्ति के प्रेरणा शक्ति को दर्शाता है, जो कि व्यक्ति आवश्यक रूप से बनने की आकांक्षा रखता है। यह सूर्य के प्रतीक (पूर्ण या परिपक्वता को प्रदर्शित करता एक चक्र, जिसमें क्षमता/संभावना को प्रदर्शित करता एक बिन्दु) में परिलक्षित होता है।

सूर्य में उपस्थित पौरुष सिद्धान्त रचनात्मकता, उन्नति, इच्छा शक्ति, उद्देश्य, अधिकार, विशिष्टता की भावना, मालिक, पिता और शासक सहित अन्य सभी अधिकारी वर्ग में संचारित होता है। जिस प्रकार एक राजा या किसी देश का शासक एक ऐसा व्यक्ति होता है, जिसके अधीन राष्ट्र के असमान सामाजिक समूह या तो एकजुट होते हैं या विभाजित होते हैं। इसी प्रकार, सूर्य एक ऐसी प्रक्रिया का प्रतीक है, जिसके द्वारा कुण्डली में उपस्थित अन्य ग्रहों की उर्जाएं एकीकृत या बर्बाद हो जाती हैं। सूर्य का सकारात्मक प्रभाव उदारता, स्नेह और रचनात्मकता है, तथा उसका नकारात्मक प्रभाव अहंकार व अक्खड़पन है।

उपाय क्या करें ?

(1) भगवान विष्णु की पूजा करें। (2) विष्णु सहस्रनाम का पाठ करें। (3) आदित्य हृदय स्रोत का पाठ सूर्य के सामने करें। (4) अपने आज्ञा चक्र पर (बिन्दी लगाने का स्थान) पर केसर का तिलक लगायें। (5) मांस–मदिरा से दूर रहें। (6) नमकीन परांठे रविवार को गरीबों में बांटे। (7) बन्दरों की सेवा करें (गुड़, केला, चने)। (8) मुंह में मीठा डालकर अपने काम की शुरुआत करें। (9) अपनी सामर्थ्य अनुसार गेहूं का दान करें या वजनानुसार हर महीने। (10) काले, भूरे और नीले रंग का प्रयोग करने से बचें। सफेद और पीले रंग का ज्यादा इस्तेमाल करें। (11) अपने पिता के चरण स्पर्श करें और पिता से रिश्ते बनाकर रखें। (12) 22वें साल में शादी ना करें। (13) सूर्य नमस्कार, गायत्री मंत्र का जाप करें एवं ॐ का उच्चारण करें।

सूर्य

(सात्विक, आग्नेय, क्षत्रिय)

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः। (30 दिन में 7000 बार)

आस्त्येन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मृर्त्य च।
हिरण्येन सविता रथेनादेवी यति भुवना विपश्यत्।।

कुण्डली में क्या है सूर्य का फल ?

मिथुन लग्न में सूर्य धन स्थान में कर्क राशि में होता है, जिसका स्वामी चंद्र सूर्य का मित्र है अतः यह सूर्य मिश्रित फल प्रदान करेगा। मिथुन लग्न में धनस्थ सूर्य होने से आप लोभी प्रवृत्ति के होंगे। आपको धन की प्राप्ति के लिये कठिन परिश्रम करना पड़ेगा। आप आर्थिक दृष्टि से सुखी तो रहेंगे, किन्तु अधिक समृद्ध होने की आपकी इच्छा बनी ही रहेगी। आप स्वभाव से नम्र, बुद्धिमान, स्वाभिमानी तथा सत्कार्यों में धन खर्च करने वाले होंगे किन्तु कुटुम्बी जनों से आपके सम्बन्ध अच्छे नहीं रहेंगे। आपके मित्रों की संख्या कम हो सकती है तथा आवश्यकता के समय आपको कहीं से भी सहायता नहीं मिल पायेगी, इसके अलावा आपके भाई-बहनों से भी सम्बन्ध बिगड़ सकते हैं।

आपको आँखों के रोगों के कारण पीड़ा हो सकती है। व्यवसाय के लिये यह सूर्य अच्छे फल देगा, आप पुरुषार्थी होंगे एवं आप खर्चीले स्वभाव के व्यक्ति हो सकते हैं। सूर्य की सप्तम पूर्ण दृष्टि अष्टम भाव पर पड़ती है, परन्तु वहाँ मकर राशि विद्यमान है, जिसका स्वामी शनि है, इस कारण यह आपको अच्छे फल प्रदान नहीं करेगा, अतः आपके स्वास्थ्य में गिरावट हो सकती है तथा अचानक धन की प्राप्ति का योग भी नहीं है। आपकी दैनिक जीवन चर्या में भी व्यवधान हो सकता है, किन्तु आपका साहस तथा आत्मबल बना रहेगा। आपके अपने पिता से सम्बन्ध अच्छे रहेंगे, साथ ही सत्ता पक्ष से आपके सम्बन्ध अच्छे रहेंगे।

चन्द्रमा

(सात्विक, जलीय, वैश्य)

ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः सोमाय नमः। (11000 बार)

दधिशंखतुशाराभं क्षीरोदोर्णवसभवम् नवम्।
भाशिनं भवत्या भाम्भोर्मुकुटभुशणम्।।

राशि (अंश)	कुम्भ (25:44:26)	जलीय स्थान
नक्षत्र (पद)	पूर्वाभाद (2)	माता
कारक	आत्म	हृदय
बल		मस्तिष्क
स्थान	सम राशि में	रक्त

क्या है चन्द्रमा ?

कारकत्व– स्त्रीयोचित सिद्धान्त, माता, मन, भावना/सहजवृत्ति/प्रतिक्रिया।

सूर्य के बाद दूसरा सबसे महत्वपूर्ण ग्रह चंद्रमा है। यह चक्रीय परिवर्तन और अन्तःप्रेरणा की भावना को व्यक्त करता है। परिवार और सामाजिक प्रतिक्रियाएं चंद्रमा से जुड़े हुए हैं। जिस प्रकार वास्तविक जीवन में चंद्रमा सूर्य के प्रकाश को दर्शाता है, उसी प्रकार ज्योतिषशास्त्र में चंद्रमा व्यक्ति के स्वाभाविक और भावनात्मक प्रतिक्रिया को दर्शाता है। व्यक्ति के जन्म के समय चंद्रमा जिस राशि में स्थित होता है, उसे जन्म राशि कहते हैं, जो कि सामान्यतः व्यक्ति के व्यक्तित्व को प्रभावित करता है। जिस प्रकार सूर्य का संबंध क्रिया से है, उसी प्रकार चंद्रमा का संबंध प्रतिक्रिया से है। ये प्रतिक्रियात्मक भावनाएं बाल्यकाल में व्यापक रूप से अचैतन्य होती हैं, केवल तब प्रकट होती हैं, जब कोई व्यक्ति सूर्य द्वारा प्रदर्शित सच्चे आत्म के बारे में जागरूक हो जाता है। इसके परिणामस्वरूप, चंद्रमा अपनी स्थित राशि व भाव तथा अन्य ग्रहों के साथ पारस्परिक संबंधों के माध्यम से एक बच्चे के रूप में व्यक्ति के भावनात्मक विकास के बारे में बता सकता है और यह बाद के जीवन में किस प्रकार उभरेगा, यह भी प्रकट कर सकता है।

चंद्रमा के माध्यम से स्त्रीयोचित सिद्धान्त– प्राकृतिक आदतों, घरेलू वातावरण, सुरक्षात्मक प्रवृत्ति, मनोदशा, कल्पना, खाने के तौर–तरीके व प्राथमिकताएं, अतीत के प्रति रवैया, सार्वजनिक व्यक्ति बनना या आम लोगों तक पहुंचने की क्षमता, चक्रिय परिवर्तन को प्रदर्शित करने वाला भाग्य, व्यक्ति में अपनेपन की भावना और महिला, विशेषकार मां का संचालन होता है। व्यापारिक चतुराई, कल्पनाशील प्रकृत्ति, माता से संबंधित अन्तःप्रेरणा व धैर्य व्यक्ति पर पड़ने वाले चंद्रमा के सकारात्मक प्रभाव हैं, जबकि हठधर्मिता, अविश्वसनीयता, तर्कहीन व्यवहार और अस्थिर/चंचल मन चंद्रमा के नकारात्मक प्रभाव को दर्शाते हैं।

उपाय क्या करें ?

(1) अपनी मां को सम्मान दें और रोजाना चरण स्पर्श करें। (2) अमावस्या को दूध और दूध से बनी वस्तुयें बांटे। (3) सोमवार को दूध, शहद से भगवान शिव का अभिषेक करें। (4) रुद्राष्टक का पाठ, ॐ नमो शिवाय का जाप, महामृत्युंजय का जाप करें। (5) सिरहाने दूध रखकर बबूल या पीपल पर डालें (रविवार को छोड़कर)। (6) चांद की रौशनी में बैठकर उं का उच्चारण करें। (7) चावल उबाल कर, दूध, चीनी मिलाकर गरीबों को खिलायें। (8) छोटे बच्चों को दूध का दान करें, खासकर मजदूर के बच्चों को। (9) वीराने में खड़े पीपल को दूध, पानी से सींचे। (10) जिन वृक्षों को कोई जल नहीं देता – सींचना शुरु करें। (11) घर के वायव्य कोण (उत्तर, पश्चिम) को खुला, हवादार रखें। (12) सफेद कपड़े में चावल बांधकर किसी शिव मंदिर में दान करें।

चन्द्रमा

(सात्विक, जलीय, वैश्य)

ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः सोमाय नमः। (11000 बार)

दधिशंखतुशाराभं क्षीरोदोर्णवसभवम् नवम्।
भाशिनं भवत्या भाम्भोर्मुकुटभुशणम्।।

कुण्डली में क्या है चन्द्रमा का फल ?

आपका जन्म मिथुन लग्न में हुआ है। चन्द्रमा आपके जन्म लग्न से नवम् स्थान पर कुम्भ राशि में स्थित है, जिसके स्वामी शनि से चन्द्रमा की शत्रुता है। सामान्यतः नवमस्थ चन्द्रमा अच्छा फल देता है, चन्द्रमा आपको शुभ फल ही प्रदान करेगा। यह चन्द्रमा आपको विचारवान तथा सदाचारी बनाता है। आपका स्वभाव मिलनसार होने से आपके मित्र अधिक रहेंगे और परिजनों का सहयोग भी आपको प्राप्त हो सकता है। बचपन में आपका स्वास्थ्य खराब रहेगा, बाद में भी कभी-कभी आप बीमार हो सकते हैं, मुख्यतः आप सर्दी की बीमारियों, गले व छाती के रोगों से ग्रस्त हो सकते हैं, शारीरिक कमजोरी से रोगों के आक्रमण की सम्भावना अधिक होगी। आपकी बुद्धि अच्छी होगी। वेद, पुराण धर्म शास्त्र आदि ग्रन्थों के स्वाध्याय में भी आपकी रुचि होगी। आपकी प्रवृत्ति धार्मिक होगी तथा पूजा-पाठ आदि भी करते रहेंगे। आपका भाग्योदय 24वें में वर्ष होने की प्रबल सम्भावना है।

आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी, आप परिश्रमी तथा कार्यकुशल होंगे तथा अपनी बुद्धि से धन का संचय करने में सफल रहेंगे। स्वभाव से मितव्ययी रहने से आपके खर्चे भी सीमित ही रहेंगे। शारीरिक श्रम के स्थान पर मानसिक श्रम के कार्यों में आपकी रुचि होगी। आपको पर्यटन में रुचि रहेगी तथा आप प्रवास भी कर सकते हैं। चन्द्रमा अपनी सप्तम् पूर्ण दृष्टि से तृतीय स्थान में सिंह राशि को देखता है, जिसके स्वामी सूर्य से चन्द्रमा की मित्रता है। आपको भाई-बहनों का सुख प्राप्त होगा, साथ ही अपने पराक्रम तथा पुरुषार्थ से आप अपने भाग्य को उन्नत करने में सफल होंगे। अपनी माता से आपके सम्बन्ध मधुर रहेंगे, साथ ही आपको ज़मीन, मकान तथा वाहन आदि का सुख प्राप्त होगा।

मंगल

(तामसीक, आग्नेय, क्षत्रिय)

ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः। (20 दिन में 10000 बार)

धरणीगर्भसंभूतं विद्युत कान्ति सम प्रभम्।
कुमार भाकृिहस्तं च मंगल प्रणामाभ्यहम्।।

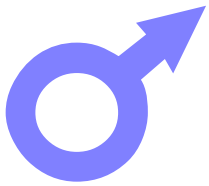

राशि (अंश)	मीन (25:32:30)	भाई
नक्षत्र (पद)	रेवती (3)	अचल सम्पत्ति
कारक	अमात्य	क्रोध, हिंसा, घृणा
बल		मांसपेशी
स्थान	मित्र राशि में	बहादुरी

क्या है मंगल ?

कारकत्व– युद्ध, शक्ति, आन्तरिक बल, पौरुष, महात्वाकांक्षा, दृढ़ संकल्प एवं छोटे भाई/बहन।

मंगल को सबसे शक्तिशाली ग्रह माना जाता है। यह अग्नि और उर्जा का प्रतीक है। सहज स्तर पर मंगल अस्तित्व के लिए लड़ने के दृढ़ संकल्प की भावना को दर्शाता है। जैसा कि जीवन के लिए खतरनाक परिस्थिति में व्यक्ति या तो युद्ध कर सकता है या पलायन कर सकता है। व्यक्ति केवल उसके लिए ही लड़ेगा, जिसको वह महत्व देता है। व्यक्ति किसे महत्व देता है, इसका निर्धारण बुध से होता है, अतः कुण्डली में मंगल के निहितार्थ को जानने के लिए संयुक्त रूप से बुध का भी परीक्षण करना होगा। जहां बुध व्यक्ति के महत्वपूर्ण पक्ष को दर्शाता है, वहीं मंगल यह दर्शाता है, कि कैसे व्यक्ति उसे हासिल करता है या संरक्षित करता है। परिणामस्वरूप मंगल उन सभी गुणों को दर्शाता है, जो व्यक्ति को अपने सपनों को प्राप्त करने में मदद करते हैं और इस प्रकार उसकी आत्म–छवि को बढ़ाते हैं। अतः मंगल द्वारा प्रस्तुत सबसे प्रारम्भिक गुण साहस, निडरता, पहल, शारीरिक और मानसिक आन्तरिक बल हैं।

एक योद्धा के रूप में, मंगल धातु से बनी वस्तुओं– लोहे की तलवार, ढाल, कवच, हथियार से घिरे हुए होने पर अथवा इन सभी वस्तुओं की देखभाल करने वाले व्यक्तियों पर अत्यंत प्रसन्न होता है। आधुनिक समय में इस प्रवृत्ति की व्याख्या धारदार/नुकीले धातु के उपकरणों, धातु गलाने के उद्योग, मशीनों से संबंधित लोगों अथवा इन मशीनों के साथ कार्य करने वाले लोगों जैसे इंजीनियर और तकनीशियन से की जा सकती है। मंगल के सकारात्मक प्रभाव स्वतंत्रता के प्रति प्रेम, दबे–कुचलों की रक्षा, कठोर परिश्रम करने की प्रकृति, प्रतिस्पर्द्धी स्वभाव तथा नेतृत्व की इच्छा के रूप में दृष्टिगोचर होते हैं, जबकि नकारात्मक प्रभाव व्यक्ति को झगड़ालु प्रवृति, संघर्ष–प्रेमी, प्रचण्ड व कलहकारी बनाता है।

उपाय क्या करें ?

(1) बड़े भाई का सम्मान करें, चरण स्पर्श करते रहें। (2) हनुमान जी को सिन्दूर को चोला चढ़ायें। (3) हनुमान चालीसा, बजरंग बाण, हनुमान अष्टक का पाठ करें। (4) मंगलवार के दिन हनुमान जी के मंदिर में अनार का भोग दें। (5) रक्तदान, महादान करें। (6) मीठी रोटियों का दान करें। (7) सफेद तिल और देसी शक्कर मिलाकर कीड़े मकोड़ों को डालें। (8) मंगल की होरा में (यानि मंगलवार सुबह) बन्दरों को गुड़ डालें। (9) हनुमान जी या दुर्गा जी को मंदिर में लाल रंग का झण्डा चढ़ायें। (10) सुन्दर काण्ड का पाठ हर तरह के मंगल दोष से रक्षा करता है। (11) सूर्य के सामने बजरंग बाण का पाठ करने से शत्रु नाश होगा। (12) मांस–मदिरा से दूर रहें। (13) जमीन पर सोना शुरु करें। (14) तांबे के गिलास में पानी पियें।

मंगल

(तामसीक, आग्नेय, क्षत्रिय)

ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः। (20 दिन में 10000 बार)

धरणीगर्भसंभूतं विद्युत कान्ति सम प्रभम्।
कुमार भाकृिहस्तं च मंगल प्रणामाभ्यहम्।।

कुण्डली में क्या है मंगल का फल ?

आपका जन्म मिथुन लग्न में हुआ है। मंगल आपके जन्म लग्न से दशम स्थान में मीन राशि में स्थित है, जिसके स्वामी गुरु मंगल के मित्र हैं। सामान्यतः दशमस्थ मंगल शुभ माना जाता है। षष्ठेश तथा एकादशेश मंगल दशमस्थ होने से आपको अच्छे फल प्रदान करेगा। मंगल आपको दीर्घायु तथा सच्चरित्र व्यक्ति बनायेगा। आपका स्वभाव गम्भीर तथा सौम्य रहेगा तथा आपके मित्र भी अच्छी प्रवृत्ति के होंगे, जो आपके सहायक रहेंगे। आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा और कभी-कभी होने वाले सामान्य रोगों की आप परवाह भी नहीं करेंगे। अपने पिता से आपके अच्छे सम्बन्ध नहीं रहेंगे, जबकि सत्ता पक्ष आपके अनुकूल रहेगा। आपके व्यवहार से शत्रु भी आपके मित्र बन जायेंगे तथा समाज में आपकी प्रतिष्ठा रहेगी।

आपकी आर्थिक स्थिति मध्यम रहेगी। आप व्यापार से धनार्जन करना पसन्द करेंगे, किन्तु व्यापार में उतार-चढ़ाव से अस्थिरता हो सकती है। यदि आप सर्विस करेंगे, तो आपको कठिनाईयाँ आ सकती हैं तथा पदोन्नति में भी बाधाएँ उत्पन्न हो सकती हैं, जिससे आप धन का संग्रह धीरे-धीरे ही कर पायेंगे। मंगल की चतुर्थ पूर्ण दृष्टि लग्न में मिथुन राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी बुध से मंगल की शत्रुता है। आप स्वाभिमानी तथा गम्भीर प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे। आप पुरुषार्थी तथा दृढ़ व्यक्तित्व के धनी होंगे। मंगल की सप्तम पूर्ण दृष्टि चतुर्थ स्थान में कन्या राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी बुध से मंगल की शत्रुता है। अपनी माता से आपके सम्बन्ध सामान्य रहेंगे। आपको भौतिक सुख-सुविधाओं की प्राप्ति में समय लग सकता है। मंगल की अष्टम पूर्ण दृष्टि पंचम स्थान में तुला राशि में पड़ती है, जिसका स्वामी शुक्र मंगल से सम है। आपकी बुद्धि अच्छी रहेगी तथा आप उच्च शिक्षा प्राप्त करेंगे, किन्तु आपका सन्तान सुख आपको कम ही प्राप्त हो पायेगा।

बुध (अस्त)

(राजसी, संसारिक, शुद्र)

ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः। (21 दिन में 19000 बार)

प्रियंगुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यम् सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणामाम्यहम्।।

राशि (अंश)	कर्क (14:00:17)	दत्तक पुत्र
नक्षत्र (पद)	पुष्य (4)	बुद्धिमता
कारक	ज्ञाति	शिक्षण, शिक्षा
बल		वेद पुराण
स्थान	शत्रु राशि में	व्यवसाय, व्यापार

क्या है बुध ?

कारकत्व– व्यापार और व्यवसाय, संवाद कौशल, बुद्धिमता, मामा/मौसी।

बुध का सूचक शब्द संचार है। चूंकि बुध की कक्षीय अवधि अन्य सभी ग्रहों से सबसे छोटी है, जिससे बुध सबसे तेज ग्रह बन जाता है और इसीलिए संचार जो कि मानव जीवन की सबसे तेज गतिविधियों में से एक है, बुध उसका प्रतिनिधित्व करता है। व्यक्ति की कुण्डली में, बुध अत्यधिक आत्म–जागरूकता का अवसर प्रदान करते हुए, प्रबुद्ध विचार की लौ कुण्डली के शेष हिस्से में संचारित करता है। विशेष रूप से बुध जिस भाव व राशि में स्थित होता है, उसके माध्यम से वह मानसिक आवृत्ति प्रकट करता है, जो व्यक्ति के विचार और सामान्य रूप से संवाद को संचालित करता है। विशेष रूप से युति/दृष्टि द्वारा स्थापित किए गए अन्य ग्रहों के साथ संपर्कों के माध्यम से, बुध सीखने के लिए व्यक्ति की उपयुक्तता को भी दर्शाता है, भले ही व्यक्ति का दृष्टिकोण या राय तर्क पर आधारित हो या उसकी भावनाओं और आदतों पर आधारित हो।

अपनी सर्वोच्च अभिव्यक्ति में, बुध बुद्धि और आत्म–ज्ञान की शक्ति का प्रतीक है तथा अपनी निम्नतर अभिव्यक्ति में, बुध चालबाज, धोखेबाज और निम्न स्तर की कुटिलता से भरे हुए मस्तिष्क का प्रतिनितिधत्व करता है। अन्य स्तरों पर, बुध बुद्धि और तार्किक उद्देश्यपूर्ण मस्तिष्क के कार्य से मेल खाता है। मानसिक धारणा के इन पहलुओं को जीवन के प्रारम्भ में ही रोपित कर दिया जाता है, अतः बुध प्रारम्भिक विद्यालयी अनुभवों का प्रतिनिधित्व करता है, जो कि बाद में विज्ञान की खोज में खिलते हैं। उसकी संवादशील योग्यता अनेक स्रोतों– व्यापार, वाणिज्य, व्यवसाय, परिवहन एवं छोटी या कम दूरी की यात्राओं के माध्यम से निकलती है। बुध की संवाद/संचार में गहन रुचि की अभिव्यक्ति तर्क–वितर्क, विचार–विमर्श, लेखन, पठन के माध्यम से विचारों के आदान–प्रदान के द्वारा होती है। भाषाएं और संचार के साधन– टेलिफोन, टेलिविजन, कम्प्यूटर, अखबार, पुस्तकें। बुध का सकारात्मक प्रभाव व्यक्ति की चतुराई, उत्तम स्मरण शक्ति, तर्कसंगत व संवादशील मस्तिष्क द्वारा दृष्टिगोचर होता है, जबकि घबराहट, मानसिक सुस्ती, मंदता और तर्कपूर्ण व्यंग्यात्मक प्रकृति बुध के नकारात्मक प्रभाव को प्रदर्शित करते हैं।

उपाय क्या करें ?

(1) अपनी बुआ, मौसी, बेटे से संबंध अच्छे रखें। (2) दुर्गा जी की उपासना करें, दुर्गा सप्तशती का पाठ करें, अष्टमी का व्रत रखें। (3) कन्याओं की, बेटियों की सेवा करें, अपशब्द न बोलें। (4) गरीब कन्याओं की शिक्षा और शादी में योगदान दें। (5) साबुत हरे मूंग और बाजरा (भिंगोकर) कबूतरों को डालें। (6) फिटकरी से दांत साफ करें। (7) हिजड़ों को हरे वस्त्र का दान करें। (8) पिंजरे से तोते आजाद करायें। (9) घर के उत्तर में हरा रंग करायें और दीवार घड़ी स्थापित करें। (10) अपने घर में फूलों वाले पौधे जरुर लगायें। (11) झूठ बोलने की आदत छोड़ें। (12) हरी ईलायची मुंह में डालकर रखें। (13) घर में कच्ची जमीन पर घास उगाए या पुदीना, धनिया गमले में उगायें। (14) गायों की चारा–पानी का प्रबंध करें। (15) मंदिर या धर्मस्थान में हरी सब्जियों का दान करें।

बुध (अस्त)

(राजसी, संसारिक, शुद्र)

ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः। (21 दिन में 19000 बार)

प्रियंगुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यम् सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणामाम्यहम्।।

कुण्डली में क्या है बुध का फल ?

आपका जन्म मिथुन लग्न में हुआ है। बुध आपके जन्म लग्न से द्वितीय स्थान में कर्क राशि में स्थित है, जिनके स्वामी चन्द्रमा से बुध की शत्रुता है। सामान्यतः द्वितीय स्थान में बुध अच्छे फल प्रदान करता है, लग्नेश तथा चतुर्थेश बुध द्वितीय स्थान में आपके लिए शुभ फलदायक रहेगा। बुध आपको विद्वान, धार्मिक तथा गुणवान व्यक्ति बनाता है। आपका स्वभाव मृदु होगा। आपके मित्रों की संख्या अधिक होगी तथा परिजनों से भी आपका स्नेह रहेगा। आपका स्वास्थ्य सामान्य रहेगा। बाल्यावस्था में आपको त्वचा रोग तथा वातविकार हो सकते हैं। आपकी बुद्धि तीव्र रहेगी तथा शैक्षणिक जीवन में साहित्य, कला, आयुर्वेद आदि विषयों में आपकी अधिक रुचि रहेगी, इसके अतिरिक्त आपको पर्यटन, ज्योतिष, स्वाध्याय आदि का भी शौक रहेगा।

भाई–बहनों से आपके सम्बन्ध अच्छे रहेंगे, माता से आपको स्नेह रहेगा, आपको कुटुम्ब का सुख भी प्राप्त होगा, साथ ही आपको ज़मीन–जायदाद और वाहन आदि का सुख भी प्राप्त होगा। आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। आप लेखक, चित्रकार, प्रोफेसर, चिकित्सक, कलाकार आदि के रुप में स्थापित होकर धनार्जन करेंगे, इसके अतिरिक्त आपको राजकीय सर्विस प्राप्त होना भी सम्भव है। व्यापार में भी आपको अच्छा धन लाभ होगा, आप खर्चीले स्वभाव के हो सकते हैं, किन्तु आमदनी अधिक होने से आप धन–संग्रह करने में समर्थ होंगे। बुध की सप्तम् पूर्ण दृष्टि अष्टम् स्थान में मकर राशि में पड़ती है, जिनके स्वामी शनि से बुध की शत्रुता है। आप दीर्घायु होंगे और आपको वसीयत जैसे साधनों से गुप्त धन की प्राप्ति भी होगी।

बृहस्पति

(सात्विक, आग्नेय, शुभ)

ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरुवे नमः। (19000 बार)

देवानां च ऋशीणां च गुरु कान्चन सन्निभम्।
बुधिभूतं त्रिलोकेश तं गुरुं प्रणामाम्यहम्।।

4

राशि (अंश)	वृष (22:48:58)	गुरु
नक्षत्र (पद)	रोहिणी (4)	दादा--दादी
कारक	अपत्या	धर्म, धार्मिक क्रियाकलाप
बल		विश्वास
स्थान	शत्रु राशि में	भक्ति, सद्गुण

क्या है बृहस्पति ?

कारकत्व- शिक्षा/बुद्धिमत्ता, नैतिकता, धर्म, उन्नति, विस्तार, प्रसन्नता, स्वयं द्वारा अर्जित धन और संतान।

बृहस्पति का सूचक शब्द विस्तार है। जैसाकि यह सौर-मंडल का सबसे बड़ा ग्रह है, इसलिए ज्योतिष शास्त्र में उन्नति और विस्तार का प्रतिनिधित्व बृहस्पति द्वारा किए जाने में कोई आश्चर्य नहीं है। सामान्यतः बृहस्पति जीवन के उस क्षेत्र में बहुत अनुकूल प्रतिफल प्रदान करता है, जिसका संबंध उस भाव से होता है, जिसमें बृहस्पति स्थित हो। भौतिक दृष्टि से देखा जाये, तो बृहस्पति शारीरिक विकास, विशेषकर कोशिकीय विकास और पाचन के माध्यम से पालन-पोषण का प्रतिनिधित्व करता है। किन्तु कुण्डली में बृहस्पति का प्रमुख महत्व उसके सामाजिक ग्रह के रूप में है, जो कि शनि के साथ वह साझा करता है। सूर्य, चंद्रमा, मंगल, बुध और शुक्र सभी ग्रह पैतृक या पर्यावरणीय कारकों के संदर्भ के बिना विशेष रूप से व्यक्ति के चरित्र के व्यक्तिगत पहलुओं से निपटते हैं। इसके विपरीत बृहस्पति यह दर्शाता है, कि व्यक्ति अपने अस्तित्व का औचित्य सिद्ध करने के लिए किस प्रकार जीवनभर विकास करता है।

इस संदर्भ में वृद्धि का अर्थ है कि व्यक्ति समाज में प्रचलित मान्यताओं की प्रतिक्रिया के रूप में कैसे उन्नति करता है तथा किस हद तक इनके साथ मिश्रित होता है या उन्हें चुनौती देता है। संसार में एक स्थान प्राप्त करने की स्थिति में, बृहस्पति द्वारा अधिग्रहित राशि, भाव एवं सबसे अधिक महत्वपूर्ण अन्य ग्रहों व भावों के साथ उसके दृष्टि संबंध व्यक्ति की सामाजिक अपेक्षाओं और आदर्शों को तथा उन्हें साकार करने के अवसरों का निर्माण करने के बारे में दर्शाते हैं। अन्य स्तरों पर, बृहस्पति ईश्वर के प्रति व्यक्ति की धारणा, धार्मिक विश्वास, दर्शनशास्त्र, कानून की भावना और सभी सैद्धान्तिक विचारों को दर्शाता है। वह उच्च शिक्षा, नैतिकता, राजनीति, आध्यात्मिक व भौतिक समृद्धि, प्रतिष्ठा, सम्मान, विदेश से संबंधित कोई कार्य, अपव्ययिता, मोटापा एवं अत्यधिक भोजन/अधिक खपत को भी दर्शाता है। व्यक्ति का आशावादी, सहानुभूतिशील, दयालु और खेल प्रेमी होना बृहस्पति के सकारात्मक प्रभावों का संकेत देता है, जबकि लापरवाह, अतिआशावादी, असावधान, फिजूलखर्ची और आसक्ति उसके नकारात्मक प्रभावों को दर्शाते हैं।

उपाय क्या करें ?

(1) अपने पिता और दादा से आर्शीवाद लें। (2) बुजुर्गो की सेवा करें। (3) वृद्ध आश्रम में अन्न का दान करें। (4) दूध में हल्दी, केसर डालकर पियें। (5) मांस, मदिरा से दूर रहें। (6) बरगद के पेड़ पर हल्दी और गुड़ डालकर जल चढ़ायें, केले के पेड़ की पूजा करें। (7) अपने गुरु का साथ कभी न छोड़ें। (8) अपनी नाभि, कंठ, और माथे पर हल्दी या केसर से तिलक लगायें। (9) आधे-अधूरे कपड़े ना पहनें। (10) उत्तर-पूर्व में जल स्रोत स्थापित करें। (11) घर का मंदिर उत्तर-पूर्व में रखें। (12) गले में सोना धारण करें या पीले रंग का धागा (तिहरा) धारण करें। (13) केसर और हल्दी से दूध के साथ रुद्राभिषेक करें। (14) गरीब बच्चों की शिक्षा की जिम्मेदारी उठायें। (15) योगा, प्राणयाम जरुर करें।

बृहस्पति

(सात्विक, आग्नेय, शुभ)

ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरुवे नमः। (19000 बार)

देवानां च ऋशीणां च गुरु कान्चन सन्निभम्।
बुधिभूतं त्रिलोकेश तं गुरुं प्रणामाम्यहम्।।

4

कुण्डली में क्या है बृहस्पति का फल ?

आपका जन्म मिथुन लग्न में हुआ है। गुरु आपके जन्म लग्न से द्वादश स्थान में वृष राशि में स्थित है, जिसके स्वामी शुक्र से गुरु की शत्रुता है। सामान्यतः द्वादशस्थ गुरु अच्छे फल नहीं देता है, सप्तमेश तथा दशमेश गुरु द्वादश स्थान में आपको अशुभ फल प्रदान करेगा। गुरु आपको कृपण तथा प्रवासी व्यक्ति बनाता है। आप कठोर एवं रुखे स्वभाव के व्यक्ति हो सकते हैं तथा आपकी प्रवृत्ति विश्वसनीय नहीं होंगी, जिससे आपके मित्र कम तथा शत्रु अधिक होंगे तथा परिजन भी आपकी उपेक्षा कर सकते हैं। आपका स्वास्थ्य कमजोर हो सकता है, जिससे आपको आँखों के रोग, गुप्त रोग, मन्दाग्नि आदि रोग हो सकते हैं, इसके अलावा तपेदिक या हृदय रोग का भी आपको खतरा हो सकता है रोगों के कारण आपके शरीर में कमज़ोरी हो सकती है। आपकी बुद्धि मध्यम रहेगी। आपका रुझान ललित कला, साहित्य, काव्य, वाणिज्य की ओर होगा, साथ ही संगीत, नाट्य, पर्यटन आदि में आपकी रुचि होगी, किन्तु अध्ययन काल में आपको बाधाओं या असफलताओं का सामना भी करना पड़ सकता है।

आपका वैवाहिक जीवन सुखमय नहीं होगा। आपकी पत्नी चंचल, लोभी, खर्चीली तथा तेज स्वभाव की स्त्री हो सकती हैं, आपके साथ उनके सम्बन्ध अच्छे नहीं रहेंगे और सन्तान सुख प्राप्ति में बाधा उत्पन्न हो सकती है। अपने पिता के साथ आपके सम्बन्ध बिगड़ सकते है तथा सत्ता पक्ष की प्रतिकूलता से आपको आर्थिक हानि होना सम्भव है। आपकी आर्थिक स्थिति मध्यम रहेगी। आप शिक्षक, लेखक, कलाकार, कवि, साहित्यकार आदि बनकर धन अर्जित करेंगे, इसके अलावा आपको राजकीय सर्विस भी प्राप्त होगी, किन्तु आपके व्यापार में उतार–चढ़ाव अधिक होगा व लाभ भी कम ही प्राप्त हो पायेगा। गुरु की पंचम पूर्ण दृष्टि चतुर्थ स्थान में कन्या राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी बुध से गुरु की शत्रुता है। अपनी माता से आपके सम्बन्ध अच्छे नहीं रहेंगे और ज़मीन, मकान, वाहन आदि सुखों की प्राप्ति में आपको बाधा उत्पन्न हो सकती है। गुरु की सप्तम पूर्ण दृष्टि षष्ठ स्थान में वृश्चिक राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी मंगल से गुरु की मित्रता है। आपको रोगों से कष्ट हो सकता है तथा शत्रुओं के कुचक्रों से भी आपको हानि हो सकती है। गुरु की नवम पूर्ण दृष्टि अष्टम स्थान में मकर राशि में पड़ती है, जो गुरु की नीच राशि है। आपका आयु पक्ष मध्यम होगा और आपको अचानक धन हानि भी हो सकती है।

शुक्र

(राजसी, वायुमय, ब्राह्मण)

ॐ द्रां द्रीं द्रौम सः शुक्राय नमः। (6000 बार)

हिमकुन्द मृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्व भास्त्र प्रवक्तारं भर्गव प्रणामाम्यहम्।।

राशि (अंश)	सिहं (23:31:29)	विवाह, पत्नी
नक्षत्र (पद)	पुर्वफाल्ग (4)	यौन--इच्छा
कारक	मात्रि	इत्र, सुगंध, फूल
बल	स्व नक्षत्र	संगीत, नृत्य, नाट्क
स्थान	शत्रु राशि में	विलासितापूर्ण वस्तुएँ

क्या है शुक्र ?

कारकत्व- कला, सुख-सुविधा, बिना अपने परिश्रम के आसानी से प्राप्त धन, प्रेम, स्नेह, सौन्दर्य और यौन संबंध।

पारम्परिक रूप से शुक्र जीवन में सौहार्द, स्नेह और संबंधों की आवश्यकता को दर्शाता है। हालांकि, अधिक मौलिक स्तर पर, शुक्र का संबंध व्यक्ति को आकर्षित और घृणित करने वाली वस्तुओं से तथा इन प्रभावों के प्रति व्यक्ति की प्रतिक्रिया से है। तुलना करना इसमें शामिल एक प्रक्रिया है, जो यह निर्णय करने का प्रयास करती है, कि व्यक्ति की अपनी आवश्यकताओं के अनुसार क्या अच्छा या बुरा है। कभी-कभी, यह सहकारिता और साझा करने के व्यवहार के परिणामस्वरूप होता है, क्योंकि अधिकांश लोग अकेला या अलोकप्रिय होने के बजाय दूसरों के साथ बंधे रहना पसन्द करते हैं। प्रेम के संदर्भ में, शुक्र प्रेम के प्रति व्यक्ति की प्रतिक्रिया को प्रकट करता है, जब उसे प्रेम की प्राप्ति होती है, बजाय इसके कि व्यक्ति स्वयं के प्रति प्रेम को भावनात्मक रूप से कैसे अभिव्यक्त करे। भावनात्मक अभिव्यक्ति का कार्य मंगल का है।

इस बात का ध्यान रखें कि शुक्र शायद ही कभी मुत में, बदले में बिना कोई उम्मीद किए कुछ देता है। इसलिए सौहार्दपूर्ण रिश्तों को आकर्षित करने की व्यक्ति की क्षमता शुक्र द्वारा अधिग्रहित राशि और भाव पर निर्भर करता है और विशेष रूप से शुक्र दृष्टि के माध्यम से जिन ग्रहों से संपर्क बनाता है उनसे। अन्य स्तरों पर, शुक्र के संविभाग के अन्तर्गत शारीरिक आकर्षण या प्रतिकर्षण के अतिरिक्त, सौन्दर्य, कला, सभी प्रकार के करीबी संबंध, आधुनिकता, स्वाद, रूचि, फैशन, स्त्री एवं स्त्रीयोचित कामुकता, शारीरिक कुशलता, कुटनीति, घमंड, मुद्रा विनिमय के सभी साधन एवं आसानी से प्राप्त धन शामिल हैं। व्यक्ति का मित्रवत व्यहार, कलात्मकता, उत्तम आचरण तथा स्नेहशील प्रकृति शुक्र के सकारात्मक प्रभाव को दर्शाते हैं, जबकि स्वार्थपूर्ण एवं अनुचित रूप से अत्यधिक रोमांटिक होना शुक्र के नकारात्मक प्रभाव के सूचक हैं।

उपाय क्या करें ?

(1) पत्नी का सम्मान करें, नारी जाति को सम्मान दें। (2) अपने शरीर की साफ-सफाई का ध्यान रखें - साफ-सुथरे कपड़े पहनें। (3) इत्र का प्रयोग करें। (4) गाय के दूध की खीर बनाकर लक्ष्मी जी को भोग लगायें और प्रसाद के रुप में बांटे (शुक्वार को)। (5) श्री सूक्तम जी, कनकधारा स्रोत का पाठ करें। (6) संध्या समय गाय के देसी घी की ज्योति जलायें। (7) अपने घर के दक्षिण-पूर्व में गुलाबी रंग के पर्दे लगायें या पेंट करवायें। (8) दक्षिण-पूर्व में संध्या समय देसी घी की ज्योत जलायें। (9) गरीब कन्याओं की शादी में श्रृंगार का सामान दान करें। (10) अपने घर में केवड़ा, गुलाबजल का छिड़काव करें, गुलाब की पंखुड़ियां मंदिर में चढ़ायें। (11) मंदिर में रुई की बत्तीयां, मिट्टी के दीपक और देसी घी का दान करें।

शुक्र

(राजसी, वायुमय, ब्राह्मण)

ॐ द्रां द्रीं द्रौम सः शुक्राय नमः। (6000 बार)

हिमकुन्द मृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्व भास्त्र प्रवक्तारं भर्गव प्रणामाम्यहम्।।

कुण्डली में क्या है शुक्र का फल ?

आपका जन्म मिथुन लग्न में हुआ है। शुक्र आपके जन्म लग्न से तृतीय स्थान में सिंह राशि में स्थित है, जिसके स्वामी सूर्य से शुक्र की शत्रुता है। सामान्यतः तृतीयस्थ शुक्र मिश्रित फल प्रदान करता है, पँचमेश तथा द्वादशेश शुक्र तृतीय स्थान में स्थित होकर आपको अच्छे फल प्रदान करेगा। शुक्र आपको समाज में प्रख्यात, पराक्रमी, सुखी तथा कृपण व्यक्ति बनाता है। आपका स्वभाव स्वाभिमानी होगा किन्तु आगन्तुकों से आपका व्यवहार अच्छा रहेगा। मित्रों तथा परिजनों से आपके सम्बन्ध अच्छे रहेंगे तथा समाज में आपकी प्रतिष्ठा रहेगी। आपका स्वास्थ्य सामान्यतः अच्छा ही रहेगा, किन्तु कभी-कभी गले के रोगों से आपको कष्ट हो सकता है। आपकी बुद्धि अच्छी रहेगी और शैक्षणिक जीवन में आपका रुझान गणित, साहित्य, संगीत, भाषा, दर्शन आदि विषयों में रहेगा, इसके अलावा गायन-वादन, नाट्य आदि विद्याओं में भी आपकी रुचि रहेगी।

आप साहसी तथा पुरुषार्थी व्यक्ति होंगे और भाई-बहनों से आपके सम्बन्ध सामान्य रहेंगे। आपका वैवाहिक जीवन सुखमय रहेगा। आपकी पत्नी सुन्दर, सुशिक्षित, बुद्धिमती किन्तु अभिमानी हो सकती हैं, उनके साथ आपके सम्बन्ध मधुर तथा व्यवहार अच्छा रहेगा। आपके सन्तान सुख में कमी सम्भव है, प्रथम सन्तान पुत्र हो सकता है। आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी और आप साहित्यकार, भाषाविद्, निर्देशक, संगीतकार, प्राध्यापक, लेखक आदि बनकर धनार्जन करेंगे तथा व्यापार में आपको लाभ होगा, इसके अलावा आप अर्थ संग्रह करने में भी समर्थ रहेंगे। शुक्र की सप्तम् पूर्ण दृष्टि नवम् स्थान में कुम्भ राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी शनि से शुक्र की मित्रता है। धर्म में आपकी आस्था रहेगी तथा 25वें वर्ष में आपका भाग्य उदय होना सम्भव है।

शनि

(तामसी, वायुमय, चंडाल)

ॐ प्रां प्रीं प्रोम सः शनै नमः। (23000 बार)

नीलांजन समाभासं रवि पुत्र यमाग्रजम्।
छाया मार्तण्ड सम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।

राशि (अंश)	वृष (04:37:01)	धैर्य
नक्षत्र (पद)	कृतिका (3)	मृत्यु, बुढ़ापा
कारक	दारा	पाप, आलस्य
बल		मुसीबत, गरीबी
स्थान	मित्र राशि में	नौकर, दासता, गुलामी

क्या है शनि ?

कारकत्व– भय, दुख, बुढ़ापा, प्रतिबंध, अवसाद।

बृहस्पति के विस्तारवादी प्रकृति को संतुलन करने के लिए, शनि का ज्योतिषीय कार्य प्रतिबंधित करना है। सीमा और कठिनाई शनि के प्रमुख गुण हैं। एक व्यक्ति सदैव शनि द्वारा अधिग्रहित भाव के अधिकार क्षेत्र के अन्तर्गत गतिविधियों में सीमा व बंधनों का सामना करता है। यह प्रायः कष्टप्रद होता है, किन्तु व्यक्ति के विकास के लिए कोई भी भाग कम महत्वपूर्ण नहीं है, क्योंकि शनि बृहस्पति के प्रबंधनीय सीमाओं के भीतर ही आगे बढ़ने का आग्रह करता है।

कुण्डली में शनि की स्थिति दर्शाती है, कि व्यक्ति समाज में कहां और कैसे अपनी पहचान बनाना चाहता है। शनि का अन्य ग्रहों और भाव के साथ स्थापित दृष्टि संबंध व्यक्ति के रास्ते में आने वाली बाधाओं पर ध्यान केन्द्रित करते हैं। ये आत्म–प्रवृत्त हो सकते हैं अथवा उन घटनाओं के बारे में हो सकते हैं, जो व्यक्ति के नियंत्रण से बाहर प्रतीत होते हैं। दोनों ही स्थितियों में, शनि सीखाता है कि वास्तविकता के साथ कठोर टकराव के माध्यम से तथा परिस्थितियों को सीमित करने के माध्यम से, व्यक्ति को अपनी महात्वाकांक्षाओं को प्राप्त करने से पहले अपने आप में क्या परिवर्तन करना चाहिए। चूंकि कुछ ही लोग बाधा, विलम्ब या कठिनाइयों को गरिमापूर्ण ढंग से स्वीकार करते हैं, इसलिए शनि को दुख व उदासी से भरे हुए दर्दनाक और यातनापूर्ण अनुभवों का कारण माना जाता है।

अपने सबसे रचनात्मक रूप में, शनि कठोर परिश्रम, आत्म–अनुशासन, धैर्य और परम्परा के गुणों की एक सच्ची समझ से पैदा हुए ज्ञान को प्रदान करता है। क्योंकि शनि व्यक्ति की दृढ़ता, लगन या सफलता का परीक्षण करता है, इसलिए वह दृढ़ता व धैर्य के साथ सकारात्मक रूप से जुड़ा होता है। किन्तु यदि शनि की उर्जा को उपेक्षित कर दिया जाए अथवा वह बहुत अधिक हावी हो जाए, तो व्यक्ति के आत्म–विश्वास को बाधित करके और उसके उद्देश्यों को विफल करके, यह दमनकारी भी हो सकता है। फिर वह कठिनाई, धीमापन, जड़ता और तनाव को जन्म देता है। शनि के नियम सभी नियमों और विनियमों, ब्रह्माण्ड के भौतिक नियमों, सरकार और सभी अधिकारी वर्ग, परिक्षाओं और शिक्षकों, आर्थिक मंदी, दर्शनशास्त्र, समय, अवसाद, अकेलापन, भय और उम्र बढ़ने की प्रकिया के बीच अन्य चीजों तक फैला हुआ है। शनि का सकारात्मक पक्ष तप, लगन, अनुशासन और विश्वसनीयता है, जबकि अवसाद, आत्मकरूणा और जटिल व्यवहार उसके नकारात्मक गुण हैं।

उपाय क्या करें ?

(1) अपने अधीनस्थ कर्मचारियों का सम्मान करें। (2) कौओं को खीर, दही, रोटी देते रहें। (3) अमावस्या को खीर बनाकर बांटें। (4) पीपल विशेषतया जो वीराने में पाये जाते हैं – उन्हे अमावस्या, संक्रान्ति और पूर्णिमा पर दूध और जल से सींचें। (5) मजदूरों के बच्चों को दूध पिलायें। (6) गरीबों को जूते का दान करें। (7) मां काली, भैरो जी और शनिदेव की उपासना करें। (8) हनुमान जी को शनिवार को सिन्दूर का चोला चढ़ायें। (9) उड़द की दाल, बैंगन आलू की सब्जी और रोटी गरीबों को बांटे। (10) काले गुलाब जामुन का दान शनिदेव के मंदिर के बाहर करें। (11) काले तिल, सूखा नारियल और शक्कर मिलाकर कीड़े–मकौड़ों को लगातार डालें। (12) पैरों की मालिश करते रहें। (13) घर में कबाड़, कचड़ा, रद्दी, पुराने कपड़े इकठ्ठे न होने दें।

शनि

(तामसी, वायुमय, चंडाल)

ॐ प्रां प्रीं प्रोम सः शनै नमः। (23000 बार)

नीलांजन समाभासं रवि पुत्र यमाग्रजम्।
छाया मार्तण्ड सम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।

कुण्डली में क्या है शनि का फल?

आपका जन्म मिथुन लग्न में हुआ है। शनि आपके जन्म लग्न से द्वादश स्थान में वृष राशि में स्थित है, जिसके स्वामी शुक्र से शनि की मित्रता है। सामान्यतः द्वादशस्थ शनि अच्छे फल नहीं देता है। अष्टमेश तथा नवमेश शनि द्वादश स्थान में आपके लिए अशुभफल प्रदान करेगा। शनि आपको अभिमानी प्रवृत्ति का व्यक्ति बनाता है। आप कठोर तथा क्रोधी स्वभाव के व्यक्ति हो सकते हैं और अत्यधिक क्रोधी होने पर आप हिंसक भी हो सकते हैं। आपके रुखे व्यवहार से मित्र भी आपके विरोधी बन सकते हैं। मित्रों तथा परिजनों से आपके सम्बन्ध विशेष अच्छे (घनिष्ठ) नहीं रहेंगे। आपका स्वास्थ्य कमजोर रहेगा। आपको आँखों के रोग, त्वचा रोग तथा किसी शारीरिक दोष से कष्ट हो सकता है, इसके अतिरिक्त आप में आत्मघात की प्रवृत्ति भी हो सकती है। बाल्यावस्था में भी आपको जल, विष तथा साँप का खतरा हो सकता है।

आपकी बुद्धि मध्यम रहेगी। शैक्षणिक जीवन में आपका रुझान साहित्य, कला, दर्शन, रसायन, इतिहास, चिकित्सा आदि विषयों में रहेगा। गूढ़ विषयों के अध्ययन में तथा पर्यटन में भी आपकी रुचि होगी। अध्ययन काल में आपको कुछ बाधाओं या असफलताओं का सामना भी करना पड़ सकता है। आपका आयु पक्ष मध्यम रहेगा। आपको कभी-कभी आकस्मिक धन हानि भी हो सकती है। आपकी धर्म में आस्था कम हो सकती है और आपका भाग्य चमकने में समय लग सकता है। आपकी आर्थिक स्थिति औसत रहेगी। आप शिक्षक, लेखक, रसायनज्ञ, साहित्यकार, चिकित्सक, इतिहासकार, कलाकार आदि बनकर धन अर्जित करेंगे, किन्तु व्यापार में आपको उतार-चढ़ाव की स्थिति का सामना करना पड़ सकता है तथा हानि भी हो सकती है, जबकि आयात-निर्यात के व्यापार में आपको लाभ होगा।

शनि अपनी तृतीय पूर्ण दृष्टि से द्वितीय स्थान में कर्क राशि को देखता है, जिसके स्वामी चन्द्रमा से शनि की शत्रुता है। आपके धन जमा करने के प्रयासों में बाधा उत्पन्न हो सकती है तथा कुटुम्बियों के साथ आपके मतभेद रह सकते हैं। शनि की सप्तम पूर्ण दृष्टि षष्ठ स्थान में वृश्चिक राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी मंगल की शनि से शत्रुता है। आपको रोगों तथा शत्रुओं से पीड़ा हो सकती है। गुप्त शत्रु भी आपको क्षति पहुँचा सकते हैं, तथापि अपने पराक्रम से आप इनको दबाने में सफल होंगे। शनि अपनी दशम पूर्ण दृष्टि से नवम स्थान में कुम्भ राशि को देखता है, जो शनि की स्वराशि है। आपकी प्रवृत्ति आस्तिक नहीं होगी और आपके भाग्य उदय होने में विलम्ब भी हो सकता है।

राहु

(ड्रैगन का सिर, शीर्ष, आरोही नोड)

ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः। (40 दिन में 18000 बार)

अर्थकायं महावीर्य चंद्रादित्य चिमर्दनम्।
सिंहिकाग र्भसंभूतं राहूं प्रणामाम्यहम्।।

राशि (अंश)	कन्या (01:26:07)	बुरी आदतें
नक्षत्र (पद)	उत्तरफाल्गु (2)	विधवा
कारक		अनैतिक संबंध
बल		झूठ
स्थान	मित्र राशि में	अनुसंधान

क्या है राहु ?

कारकत्व– संरक्षण, सामाजिक स्थिति, सफलता और दादा।

पहले से छठी राशि में स्थित राहु उत्तम फल प्रदान करता है। जीवन में प्रसन्नता और शक्तिशाली स्थिति के लिए राहु केन्द्र और त्रिकोण भाव में बहुत उत्तम होता है।

उपाय क्या करें ?

(1) मां सरस्वती की उपासना करें। (2) ससुराल में रिश्ते बनाकर रखें। चोटी के स्थान पर कुछ बाल कभी न कटवायें। (3) किसी गरीब कन्या का कन्यादान करें और उनकी शादी में यथासंभव मदद करें। (4) तम्बाकू, सिगरेट कभी न छुयें। (5) मछली कभी न खायें। (6) संध्या समय कभी शराब न पीयें। (7) भगवान शिव पर गन्ने के रस का अभिषेक करें। (8) भगवान शिव पर चंदन के पाउडर से लेप करें, चन्दन का इत्र लगायें। (9) पंचमी का व्रत करें, नागों की पूजा करें। (10) मछलियों को जौ के आटे की गोलियां डालें। (11) पवित्र सरोवर या नदी में स्नान करते रहें। (12) चांदी के गिलास में दूध पियें। (13) पक्षियों को दूध में जौ भिगोकर सुबह डालें। (14) वजन के बराबर अनाज गरीबों में बांटें। (15) हाथी को गन्ना खिलायें।

राहु

(ड्रैगन का सिर, शीर्ष, आरोही नोड)

ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः। (40 दिन में 18000 बार)

अर्थकायं महावीर्य चंद्रादित्य चिमर्दनम्।
सिंहिकाग र्भसंभूतं राहूं प्रणामाम्यहम्।।

कुण्डली में क्या है राहु का फल?

आपका जन्म मिथुन लग्न में हुआ है। राहु आपके जन्म लग्न से चतुर्थ स्थान में कन्या राशि में स्थित है, जो राहु की स्व राशि है। सामान्यतः चतुर्थस्थ राहु अच्छे फल नहीं देता है, चतुर्थ स्थान में कन्या राशि का राहु आपको मिश्रित फल देगा। राहु आपको साहित्य तथा कला प्रेमी, सामाजिक कार्यों में रुचि लेने वाला तथा सम्पन्न व्यक्ति बनाता है। आपका स्वभाव मिलनसार रहेगा। समाज सेवा तथा सार्वजनिक कार्यों में आप बढ़-चढ़ कर रुचि लेंगे। समाज में आपका सम्मान रहेगा। मित्रों तथा परिजनों से आपके सम्बन्ध मधुर रहेंगे। आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, किन्तु कभी-कभी आपको छाती तथा फेफड़ों से सम्बन्धित रोग हो सकते हैं। आपकी बुद्धि तीव्र रहेगी और आप बहुमुखी प्रतिभा के धनी रहेंगे तथा शैक्षणिक जीवन में आपका रुझान साहित्य, अर्थशास्त्र, कला, विधि, भाषा, इलेक्ट्रॉनिक्स आदि विषयों में रहेगा, इसके अतिरिक्त आप विदेशी भाषा तथा साहित्य एवं तकनीकी क्षेत्र में कम्प्यूटर विज्ञान आदि में विशेषज्ञता प्राप्त करेंगे। देश-विदेश के भ्रमण में आपकी रुचि रहेगी। माता का सुख आपको कम ही प्राप्त होगा।

आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। आप प्राध्यापक, लेखक, कलाकार, वकील, मजिस्ट्रेट तकनीकी विशेषज्ञ, भाषाविद् आदि बनकर धन अर्जित करेंगे तथा आपको सरकारी नौकरी प्राप्त होने की भी प्रबल सम्भावना है। व्यापार में भी आपको अच्छा लाभ सम्भव है तथा वस्त्र व्यापार से आपकी उन्नति होगी, इसके अतिरिक्त आपको ज़मीन, मकान एवं वाहन आदि भौतिक सुखों की भी प्राप्ति होगी। राहु की पँचम् पूर्ण दृष्टि अष्टम् स्थान में मकर राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी शनि से राहु की मित्रता है। आप दीर्घायु होंगे और कभी-कभी आपको आकस्मिक धन लाभ भी होगा। राहु अपनी सप्तम् पूर्ण दृष्टि से दशम् स्थान में मीन राशि को देखता है, जिसके स्वामी गुरु से राहु के सम्बन्ध सम हैं। पिता से आपके वैचारिक मतभेद हो सकते हैं तथा सत्ता पक्ष से आपके सम्बन्ध सामान्य रहेंगे। राहु की नवम् पूर्ण दृष्टि द्वादश स्थान में वृष राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी शुक्र से राहु की मित्रता है। आपका खर्च अधिक रहेगा तथा आयात-निर्यात के व्यापार में आपको पर्याप्त लाभ होगा।

केतु

(ड्रैगन की पूंछ, पार्श्वभाग/पूछांग, अवरोही नोड)

ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः। (40 दिन में 17000 बार)

केतु कृणवन्न केतवे पेशो मर्या अपेशसे।
समुशद्भिरु जायथाः।।

राशि (अंश)	मीन (01:26:07)	मोक्ष
नक्षत्र (पद)	पूर्वाभाद (4)	दासता
कारक		षड़यंत्र
बल		दण्ड, कारावास
स्थान	सम राशि में	बुरी आत्मा

क्या है केतु ?

कारकत्व– आध्यात्मिकता के प्रति झुकाव, अनासक्ति

केतु सातवीं से बारहवीं राशि में उत्तम फल प्रदान करता है। कुण्डली में सुव्यवस्थित केतु अपने वरिष्ठों का विश्वास हासिल करने तथा विदेश से लाभ प्राप्ति का सूचक है। जबकि पीड़ित केतु अकथनीय चिन्ताओं व परेशानियों का कारक है।

उपाय क्या करें ?

(1) गणेश जी की उपासना करें। (2) हर बुधवार को दूर्वा और लड्डू का भोग लगायें। (3) कुत्तों की सेवा करें। (4) सफेद तिल और शक्कर को सूर्योदय से पहले जीव–जन्तुओं के लिए दान करें। (5) बिस्तर पर कभी भी काली, नीली चादर न बिछायें। (6) गले में धागे, ताबीज, गण्डे धारण न करें। (7) दूध और केसर का सेवन करें। (8) धर्मस्थान पर झण्डा दान करें। (9) किसी गरीब कन्या की शादी में पलंग का दान करें। (10) वृद्धाश्रम में मीठा बांटें। (11) गुप्त दान करते रहें। (12) खट्टी–मीठी गोलियां बांटे।

केतु

(ड्रैगन की पूंछ, पार्श्वभाग/पूछांग, अवरोही नोड)

ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः। (40 दिन में 17000 बार)

केतु कृणवन्न केतवे पेशो मर्या अपेशसे।
समुशद्भिउर जायथाः।।

कुण्डली में क्या है केतु का फल ?

आपका जन्म मिथुन लग्न में हुआ है। केतु आपके जन्म लग्न से दशम् स्थान में मीन राशि में स्थित है, जो केतु की स्वराशि है। सामान्यतः दशम् स्थान में केतु अच्छे फल प्रदान करता है, दशम् स्थान में मीन राशि का केतु आपको शुभ फल प्रदान करेगा। केतु आपको विद्वान, शास्त्र ज्ञाता, प्रवासी तथा शत्रुविजयी व्यक्ति बनाता है। आपको उत्तम वैभव प्राप्त होगा और आप यशस्वी रहेंगे। आप मिलनसार स्वभाव के व्यक्ति होंगे। मित्रों तथा परिजनों से आपके सम्बन्ध मधुर रहेंगे। आपके मित्र अधिक रहेंगे और ज़रुरत के समय सहयोग प्राप्त होगा। समाजसेवा तथा सार्वजनिक कार्यों में आपका योगदान रहेगा, जिससे समाज में आपको प्रतिष्ठा प्राप्त होगी और आपके कार्य सुगमता से पूर्ण होंगे। आपका स्वास्थ्य प्रायः उत्तम रहेगा, किन्तु कभी-कभी आपको कफ सम्बन्धी विकार हो सकते हैं। आपकी बुद्धि उत्तम रहेगी तथा शैक्षणिक जीवन में आपका रुझान साहित्य, रसायन, चिकित्सा, इतिहास, भाषा, विधि आदि विषयों में रहेगा, इसके अतिरिक्त ज्योतिष, तंत्र-मंत्र तथा ऐतिहासिक ग्रन्थों के अध्ययन में आपकी रुचि रहेगी।

पर्यटनप्रिय व्यक्ति होने से जलीय स्थानों (नदी, झील अथवा सागर के तटवर्ती स्थानों) के भ्रमण में आपका शौक रहेगा। आपका विदेशयात्रा का योग भी है, आपको प्रवास से लाभ होगा। पिता से आपके सम्बन्ध सामान्य रहेंगे, जबकि सत्ता पक्ष से आपको सम्मान प्राप्त होगा। आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम रहेगी और आप प्राध्यापक, लेखक, न्यायाधीश, वकील, भाषाविद्, इतिहासकार, चिकित्सक, बैंक, बीमा कर्मचारी आदि बनकर धन अर्जित करेंगे। व्यापार में आपको सामान्य लाभ की प्राप्ति होगी, इसके अतिरिक्त राजनीति के क्षेत्र में आप कुशल राजनीतिज्ञ बन कर उच्च पद प्राप्त करेंगे।

केतु अपनी पँचम् पूर्ण दृष्टि से द्वितीय स्थान में कर्क राशि को देखता है, जिसके स्वामी चन्द्रमा से केतु की शत्रुता है। आप अर्थसंग्रह के लिए कठोर परिश्रम करेंगे, किन्तु कुटुम्बियों से आपके सम्बन्ध बहुत अच्छे नहीं रहेंगे। केतु की सप्तम् पूर्ण दृष्टि चतुर्थ स्थान में कन्या राशि पर पड़ती है, जिसके स्वामी बुध से केतु के सम्बन्ध सम हैं। माता से आपके सम्बन्ध सामान्य रहेंगे। आपको भूमि, भवन, वाहनादि का सुख भी प्राप्त हो सकता है। केतु अपनी नवम् पूर्ण दृष्टि से षष्ठम् स्थान में वृश्चिक राशि को देखता है, जिसके स्वामी मंगल से केतु की मित्रता है। आपका स्वास्थ्य सामान्य रहेगा और अपनी बुद्धि तथा पराक्रम से आप शत्रुओं को पराजित करने में समर्थ रहेंगे।

वाह्य व्यक्तित्व

वैदिक ज्योतिष में आपका नक्षत्र, लग्न और लग्न स्वामी एक दिव्य मानचित्र बनाते हैं, जो आपके बाहरी व्यक्तित्व के बारे में हमारी समझ का मार्गदर्शन करता है। ये दिव्य संकेत न केवल आपके मार्ग को रोशन करते हैं बल्कि उन मूल विशेषताओं को भी दर्शाते हैं जो दुनिया के साथ आपकी पारस्परिक क्रिया को आकार देते हैं। प्राचीन ज्ञान पर आधारित इस भविष्यवाणी का उद्देश्य व्यावहारिक रहस्योद्घाटन करना और आपकी आत्म–जागरूकता को बढ़ाना, आपके जीवन की यात्रा को गहन तरीकों से समृद्ध करना है।

पूर्वाभाद (2) अधिपति – बृहस्पति

आपकी जन्मकुण्डली में जन्म नक्षत्र पूर्वभद्रा है, आप औसत लंबाई वाले तथा लंबी गर्दन वाले व्यक्ति हो सकते हैं। आपके होठ कुछ मोटे हो सकते हैं।

लग्न – मिथुन

आपका जन्म मिथुन लग्न में हुआ है, आप मध्यम कद वाले, दुबले–पतले, सुंदर, गहरे भूरे बाल वाले तथा चमकदार काली आंखों वाले ब्यक्ति होंगे। आपके हाथ एवं बांह लंबे होंगे। आप हमेशा बेचैन रहेंगे तथा आप बहुत तेजी से चल सकते हैं। आपकी चाल अल्हड़ हो सकती है तथा आप फैशनेबल कपड़े पहनना पसंद करेंगे। आप पीले वर्ण के हो सकते हैं। आपके बाल घुंघराले हो सकते हैं तथा आपकी आंखें भूरी हो सकती हैं।

लग्नेश – बुध (अस्त), नक्षत्र–पुष्य

आपकी कुण्डली में बुध लग्नाधिपति है, आपका शरीर दुबला और वाणी स्पष्ट होगी। आप मौज–मस्ती करने वाले तथा द्विअर्थी भाषा का प्रयोग करने वाले व्यक्ति हो सकते हैं। आप दूसरों की आवाज की नकल करने वाले व्यक्ति हो सकते हैं तथा आपकी नसें उभरी हुई हो सकती हैं। सांवले वर्ण के व्यक्ति हो सकते हैं।

आंतरिक व्यक्तित्व

आपके वैदिक कुण्डली में आपके लग्न, लग्नेष और विभिन्न भावाधिपतियों की स्थिति आपके आंतरिक व्यक्तित्व को बहुत प्रभावित करती है। ये मानसिक प्रवृत्तियों, संभावित चुनौतियों और सफलता के क्षेत्रों का संकेत देते हैं। इन पर चिंतन करने से आपके निर्णयों को निर्देशित करने और जीवन की जटिलताओं से निपटने में मदद मिल सकती है, यह आपके भाग्य को आकार देने की आपकी स्वतंत्र इच्छा एवं शक्ति को ध्यान में रखता है।

लग्न – मिथुन

सकारात्मक : आप बहुमुखी प्रतिभा के धनी, निपुण तथा सुगठित शरीर वाले आकर्षक, रसिक, तीव्र बुद्धि वाले, जिम्मेदार एवं संतुलित व्यक्ति हो सकते हैं। नकारात्मक : आपकी आत्मशक्ति कमजोर तथा असंगत हो सकती है। आप छानबीन करने वाले तथा कूटनीतिज्ञ व्यक्ति हो सकते हैं। आप झूठ को सच साबित कर सकते हैं। आप बदला लेने वाले या बहुत जल्द परेशान होने वाले व्यक्ति हो सकते हैं। आप अपने अंदर सत्ता का सुख प्राप्त करने की चाहत रख सकते हैं। लेकिन वास्तविकता में उसके लिए मेहनत नहीं कर सकते हैं।

लग्नेश – बुध (अस्त), नक्षत्र–पुष्य

सकारात्मक : आप व्यापार में बहुत ज्यादा चतुर, हर तरह की जानकारी एवं सूझ–बूझ रखने वाले, साहसी, चतुर, खुशहाल एवं आनंदित व्यक्ति होंगे।
नकारात्मक : आप औरतों के शौकीन हो सकते हैं। आप मतलबी और ज्यादा चालाक हो सकते हैं। आपके अंदर छुपाने की आदत हो सकती है तथा आप निम्न तबके के लोगों की संगति में रह सकते हैं।

आंतरिक व्यक्तित्व के मुख्य बिन्दु

(1) बुध आपकी कुण्डली में लग्नेश हैं, और भाव संख्या 2 में स्थित है। आप स्वार्थी तथा अपनी भलाई अधिक सोचने वाले व्यक्ति होंगे।
(2) सूर्य आपकी कुण्डली में तृतियेश हैं, और भाव संख्या 2 में स्थित है। आप बहुत अच्छे वक्ता होंगे।
(3) बुध आपकी कुण्डली में चतुर्थेश हैं, और भाव संख्या 2 में स्थित है। आप मधुर वाणी बोलने वाले व्यक्ति होंगे।
(4) मंगल आपकी कुण्डली में षष्ठेश हैं, और भाव संख्या 10 में स्थित है। आप नास्तिक या संदेहवादी व्यक्ति हो सकते हैं तथा दूसरा धर्म अपना सकते हैं।
(5) बृहस्पति आपकी कुण्डली में सप्तमेश हैं, और भाव संख्या 12 में स्थित है। आप थोड़े कमजोर आशिक हो सकते हैं तथा आपको औरतों का सम्मान करने वाला बनना पड़ेगा।
(6) शुक्र आपकी कुण्डली में द्वादशेश हैं, और भाव संख्या 3 में स्थित है। आप अक्सर उदास रह सकते हैं।

स्वास्थ्य अवलोकन

आपका स्वास्थ्य एक महत्वपूर्ण स्तंभ है जो आपके जीवन की यात्रा का समर्थन करता है, और वैदिक ज्योतिष के माध्यम से, विशेष रूप से आपके लग्न और नक्षत्रों के अध्ययन से, हम आपके स्वास्थ्य संबंधी प्रवृत्तियों की गहन समझ प्राप्त कर सकते हैं। ये भविष्यवाणियाँ संभावित स्वास्थ्य-संबंधी मुद्दों और आपके स्वास्थ्य को बनाए रखने या सुधारने के तरीकों के बारे में मार्गदर्शन प्रदान करती हैं। यह जानकर कि आगे क्या होने वाला है, आप आवश्यक परिवर्तन करने, निवारक उपाय करने और स्वस्थ आदतें स्थापित करने के लिए बेहतर ढंग से तैयार रह सकते हैं। इसलिए, ये स्वास्थ्य भविष्यवाणियाँ एक रोडमैप के रूप में काम करती हैं, जो आपको अधिक संतुलित, सक्रिय और स्वास्थ्य के प्रति जागरूक जीवन जीने में सक्षम बनाती हैं।

पूर्वाभाद (2) अधिपति – बृहस्पति

बाईं जांघ का संबंध पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र से होता है।

लग्न – मिथुन

मिथुन लग्न से संबंधित शारीरिक अवयव हाथ, कंधा, भुजाएं व उंगलियां, तंत्रिका तंत्र, रक्त और फेफड़ा है। इसके अतिरिक्त इन अंगों से संबंधित हड्डियों का संबंध भी मिथुन लग्न से होता है।

आपकी आयु लंबी होगी। बीच-बीच में कुछ छोटी-मोटी स्वास्थ्य संबंधित परेशानियां आ सकती हैं, लेकिन कोई स्वास्थ्य संबंधित बड़ी समस्या नहीं हो सकती।

अच्छे स्वास्थ्य के लिए क्या उपाय करें ?

मनुष्य के जीवन में सुख–दुख का आना जाना तो सदैव लगा रहता है परन्तु सामान्यतः देखा जाए तो उसे सबसे अधिक कष्ट उसके शारीरिक अस्वस्थता के समय ही होता है। यदि शारीरिक रूप से व्यक्ति अस्वस्थ है तो उसके आस–पास का वातावरण कितना ही सुखमय क्यों न हो उससे उसको किसी प्रकार के सुख की अनुभूति नहीं होती। कहा जाता है कि जान है तो जहान है। वास्तविकता भी यही है कि व्यक्ति यदि स्वस्थ्य रहेगा तभी उसका जीवन जीवंत माना जाएगा, तभी उसे जीवन के अन्य सुखों का भरपूर आनन्द प्राप्त होगा अन्यथा जीवन के किसी भी प्रकार के सुख से वह वंचित रह जाएगा। इसलिए स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहना और उसके लिए सभी प्रकार के चिकित्सीय व आवश्यक होने पर ज्योतिषिय उपाय आदि भी करना चाहिए। चिकित्सा के बिना स्वास्थ्य का ठीक हो पाना संभव नहीं हो सकता, परन्तु कई बार ऐसा होता है कि चिकित्सीय उपचार का व्यक्ति के रोग पर कोई असर ही नहीं होता ऐसी स्थिति में यदि ग्रहों की दशा को देखकर उपचार के साथ–साथ ज्योतिषिय उपाय भी किया जाय तो संभवतः रोग से निजात शीघ्रता से पाया जा सके।

(1) खुले आकाश में सूर्य को साक्षी मानते हुए हनुमान चालीसा, बजरंग बाण, हनुमानष्टक का पाठ करने से दुर्घटना का भय खत्म होता है।
(2) सूर्य के सामने गायत्री मंत्र या अपने धर्म के अनुसार मूल मंत्र का जाप करने से आयु में वृद्धि होती है – रोगों से छुटकारा मिलता है।
(3) हर अमावस्या, संक्रान्ति या पूर्णिमा को गरीबों को अन्न का दान करें या खाना खिलायें।
(4) अनाथालय, कोढ़ी आश्रम, अंधविद्यालय और पशुओं के अस्पताल में दवाईयों का दान करें।
(5) सिक्के सिरहाने रखकर सुबह गरीबों को बांटें।
(6) कभी भी उत्तर की तरफ सिर और पूर्व की तरफ पैर करके न सोयें।
(7) कपूर की टिकिया अपने पास रखें और शाम को जला दें – इससे नकारात्मक उर्जा खत्म होगी।
(8) बुर्जुगों से आर्शीवाद लेते रहिए, विशेषतया सफेद बालों वाले बुजुर्गो से।
(9) आपके सोने वाले कमरे में नाकारात्मक उर्जा ना रहे – इसके लिए – पानी में सिरका (सफेद) और नमक डालकर रखें। सुबह उसे नाली में डाल दें – आपको तरो–ताजगी महसूस होती रहेगी।

शिक्षा, बुद्धि और पढ़ाई

आगामी वैदिक ज्योतिष भविष्यवाणी, आपके लग्न, लग्नेश और विभिन्न भावेषों की स्थिति के आधार पर आपके शैक्षिक पथ और बौद्धिक क्षमताओं में गहन अंतर्दृष्टि प्रदान करेगी। यह प्राचीन ज्ञान आपकी अंतर्निहित शक्तियों, संभावित चुनौतियों और आपके अधिगम की दिशा को समझने में आपकी मदद कर सकता है। आपके भविष्य को आकार देने में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका को देखते हुए, इस भविष्यवाणी की सराहना करना आपकी क्षमता को उजागर करने तथा आपकी शिक्षा एवं बौद्धिक गतिविधियों में रणनीतिक विकल्प बनाने की कुंजी हो सकती है।

लग्न – मिथुन

आप उत्तम बुद्धि के स्वामी होंगे, लेकिन आपको बहुत ज्यादा समझ या बुद्धि की तीव्रता की कमी हो सकती है। आप डिग्री प्राप्त करने तक अच्छी शिक्षा प्राप्त करेंगे।

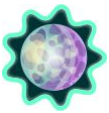

लग्नेश – बुध (अस्त), नक्षत्र–पुष्य

सकारात्मक : आप बहुत बुद्धिमान, उत्तम शिक्षा प्राप्त करने वाले, चतुर, हंसमुख तथा हमेशा सीखने वाले व्यक्ति होंगे।

नकारात्मक : आप प्रेम प्रसंगों के कारण रास्ते से भटक सकते हैं। आप बहुत ही मतलबी, समाज के नियमों को ना मानने वाले तथा निम्न तबके के लोगों के साथ रहने वाले व्यक्ति हो सकते हैं।

शिक्षा, बुद्धि और पढ़ाई के मुख्य बिन्दु

(1) बुध आपकी कुण्डली में चतुर्थेश हैं, और भाव संख्या 2 में स्थित है। आप बिना किसी रुकावट के अपनी शिक्षा पूर्ण करेंगे।
(2) शुक्र आपकी कुण्डली में पंचमेश हैं, और भाव संख्या 3 में स्थित है। आप उत्तम बुद्धि के स्वामी होंगे। आपकी कल्पनाशक्ति एवं सोचने की क्षमता अधिक होगी। आप काफी पढ़े--लिखे, शिक्षित तथा रहस्यमय विषयों की तरफ आकर्षित होने वाले होंगे।

शिक्षा में सुधार, और पढ़ाई में उन्नति के लिए क्या उपाय करें ?

प्राचीन समय में शिक्षा का स्वरूप वर्तमान शिक्षा से पूर्णतया भिन्न था। तब शिक्षा को अर्थोपार्जन का माध्यम न मानकर ज्ञान व मोक्ष प्राप्ति का माध्यम माना जाता था। इसलिए उस समय की शिक्षा में इस प्रकार की प्रतियोगिता नहीं थी जो कि वर्तमान समय की शिक्षा में दृष्टिगोचर होती है। इस वैज्ञानिक युग में जिस गति से विकास हुआ उसी गति से अर्थोपार्जन के लिए अनेकोंनेक स्रोत खुलते चले गए एवं इस विकास की गति को अत्यधिक गति प्रदान के लिए शिक्षा का महत्व दिन प्रतिदिन बढ़ता चला गया। आज स्थिति यह है कि यदि कोई अशिक्षित रह जाता है तो उसे निश्चित तौर पर इस विकसित युग में अविकसित होकर ही जीना पड़ेगा। शिक्षा प्राप्त करना भी अब उतना आसान नहीं है। इस क्षेत्र में प्रतियोगिता ही एक मात्र बाधा नहीं है बल्कि अन्य अनेक बाधाएं भी हैं।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली तो ऐसी हो गई है कि उससे धनोपार्जन का माध्यम बनाने के लिए पहले उसमें धन का निवेश करना भी आवश्यक है। ऐसी बाधाएं तो सामाजिक तौर पर सबको पार करनी पड़ती हैं, परन्तु जीवन में व्यक्तिगत रूप से भी कई बार शिक्षा के मार्ग में बाधाएं आने लगती हैं। इन बाधाओं के कारण व्यक्ति का भविष्य बाधित होता है, उसका विकास बाधित होता है या संक्षिप्त में कहा जाए तो उसके जीवन का प्रत्येक क्षेत्र प्रभावित होता है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि वह या उसकी संतान उच्च से उच्च शिक्षा ग्रहण कर सके, किन्तु इन बाधाओं के कारण सबके लिए ऐसा संभव नहीं होता। ज्योतिषशास्त्र की दृष्टि से व्यक्ति के शिक्षा में आने वाली बाधाओं में भी ग्रहों का प्रभाव समाहित होता है। ग्रहों के प्रतिकूल होने की दशा में शिक्षा बाधित होती है। इसलिए इन बाधाओं से सचेत रहने के लिए इसके बारे में जानना भी आवश्यक है।

(1) मां सरस्वती की पूजा करने के साथ अपनी जीभ पर केसर से उँ लिखें और उँ का उच्चारण करें।
(2) पढ़ते समय आपका मुंह हमेशा उत्तर–पूर्व में हों और पीठ दक्षिण या दक्षिण– पश्चिम की तरफ।
(3) माथे पर बिन्दी लगाने के स्थान पर दूध और हल्दी से तिलक लगायें और इसी स्थान, जिसको आज्ञा चक बोलते हैं, चन्दन का लेप करके सायें – बुद्धि, विवेक का विकास होगा, शिक्षा में रुचि बनी रहेगी।
(4) अनाथालयों में बच्चों के लिए कॉपी, किताब का प्रबंध करें।
(5) शुक्वार को लाल फल बांटने से भी शिक्षा बाधा दूर होती है।
(6) बृहस्पतिवार के दिन चार लड्डू हाथ लगाकर बरगद और पीपल के नीचे जीव–जन्तुओं को डालें।
(7) अन्धेरे रास्ते में रोशनी का प्रबंध करें।
(8) मछलियों को जौ के आटे में गुड़ डालकर रोटी बनाकर या गोलियां बनाकर डालें।

यात्रा और कारोबार

आगामी वैदिक ज्योतिष भविष्यवाणी आपकी यात्रा एवं व्यावसायिक प्रयासों से संबंधित संभावनाओं पर प्रकाश डालेगी। आपके लग्न और विभिन्न भावाधिपतियों की स्थिति पर विचार करके, हम आपके जीवन के इन क्षेत्रों में संभावित अवसरों, चुनौतियों और रुझानों का पता लगा सकते हैं। इन ज्योतिषीय अंतर्दृष्टि को समझना महत्वपूर्ण है क्योंकि यह यात्रा और व्यवसाय में आपके निर्णय लेने में मार्गदर्शन कर सकता है, जिससे आपको अधिक आत्मविश्वास और रणनीतिक दूरदर्शिता के साथ अपना पथ प्रशस्त करने में सहायता मिलेगी।

लग्न – मिथुन

आप किसी ऐसे व्यवसाय में सफल हो सकते हैं जिसमें कि भाषण कला की जरुरत हो सकती है, जैसे कि रंगमंच के कलाकार, वकील या सलाहकार की भूमिका में आप सफलता प्राप्त करेंगे। आपके व्यवसाय में कठिन मेहनत की जरुरत हो सकती है। आप अक्सर सड़क मार्ग के माध्यम से कई छोटी–बड़ी यात्रायें कर सकते हैं।

यात्रा और कारोबार के मुख्य बिन्दु

(1) बुध आपकी कुण्डली में लग्नेश हैं, और भाव संख्या 2 में स्थित है। आप अपना पद एवं आमदनी बढ़ाने के लिए बहुत कठिन परिश्रम करेंगे।
(2) शुक्र आपकी कुण्डली में पंचमेश हैं, और भाव संख्या 3 में स्थित है। आप छोटी––छोटी कई यात्रायें कर सकते हैं।
(3) मंगल आपकी कुण्डली में षष्ठेश हैं, और भाव संख्या 10 में स्थित है। आपको अपने रोजगार के क्षेत्र में सफलता की प्राप्ति कठिनाई से हो सकती है। आपको किसी के मार्गदर्शन की आवश्यकता होगी।
(4) शनि आपकी कुण्डली में नवमेश हैं, और भाव संख्या 12 में स्थित है। आप आध्यात्मिक गुरु के रुप में अव्वल दर्जे के चालाक ब्यक्ति होंगे।
(5) बृहस्पति आपकी कुण्डली में दशमेश हैं, और भाव संख्या 12 में स्थित है। आप व्यापार के क्षेत्र में बहुत बुरी तरह असफल हो सकते हैं।
(6) शुक्र आपकी कुण्डली में द्वादशेश हैं, और भाव संख्या 3 में स्थित है। आप लंबी दूरी की कई यात्रायें कर सकते हैं।

कारोबार/ब्यापार नौकरी की समस्यायें दूर करने के लिए क्या उपाय करें ?

भौतिक संसार में रहते हुए मनुष्य की अनेक आवश्यकताओं का जन्म होता है। जिन्हें पूरा करने के लिए उसे विभिन्न प्रकार के कार्य व व्यवसाय को अपनाना पड़ता है। सभी प्रकार की जरूरतों को पूर्ण करने हेतु मनुष्य का आर्थिक रूप से सुदृढ़ होना आवश्यक है। जबकि वर्तमान समय में इस तरह की परिस्थिति व प्रतिस्पर्द्धा का माहौल बन गया है कि सभी एक दूसरे से आर्थिक व सामाजिक स्तर पर आगे निकलना चाहते हैं। ऐसी परिस्थिति में कोई बहुत आगे निकल जाता है तथा कोई इतना पिछे रह जाता है कि उसके लिए अपनी आम जरूरतों को पूरा कर पाना भी कठिन होने लगता है। जीवन का प्रत्येक पक्ष किसी न किसी रूप से आर्थिक पक्ष से अवश्य जुड़ा हुआ है। ऐसे में व्यवसाय, नौकरी आदि में किसी भी प्रकार की बाधा आना जीवन में कठिनाई उत्पन्न कर देता है।

ये बाधाएं किसी भी प्रकार की हो सकती हैं जैसे किसी प्रकार की कोई व्यापारिक दुर्घटना, हानि, ऋण में वृद्धि, शत्रुओं द्वारा किया षडयंत्र आदि। यद्यपि बाह्य तौर पर इन्हें परिस्थितिजन्य माना जाता है, परन्तु ज्योतिषशास्त्र के अनुसार इस प्रकार की बाधाएं ग्रहों के प्रतिकूल प्रभावों के कारण उत्पन्न होती हैं। यदि व्यक्ति अपनी जन्मकुण्डली में स्थित ग्रहों के प्रतिकूल प्रभावों को समय रहते जान कर उसके लिए उपाय करे तो संभवतः वह इन बाधाओं को दूर करने में सफल भी हो सकता है।

(1) जौ का भूना आटा, नारियल का कसा हुआ बादाम, छुहारा (कसा हुआ) देसी शक्कर मिलाकर रोजाना पेड़ों के नीचे डालें जहां काले कीड़े-मकौड़े हों।
(2) शहद और काले तिल पीपल के नीचे शनिवार और मंगलवार को डालें।
(3) वृद्धा आश्रम में जाकर फल बांटें।
(4) गरीब कन्याओं की यथासंभव सहायता करें। बुध को मजबूती मिलेगी। व्यापार में बरकत बनी रहेगी।
(5) पिंजरों में बन्द पक्षियों को आजाद करायें।
(6) सरकारी नौकरी की बाधा दूर करने के लिए सूर्यदेव को केसर युक्त जल चढ़ायें और आदित्य हृदय स्रोत का पाठ करें।
(7) अपनी पत्नी को श्रृंगार का सामान देते रहें।

आर्थीक स्थिति

जीवन में अपनी वित्तीय संभावनाओं और चुनौतियों को समझना महत्वपूर्ण है, और वैदिक ज्योतिष इस क्षेत्र में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकता है। आपके लग्न और विभिन्न भावाधिपतियों की स्थिति के विश्लेषण के माध्यम से, हम धन–संपदा के संभावित मार्गों को चित्रित कर सकते हैं, बाधाओं की पहचान कर सकते हैं और उपचारात्मक उपाय सुझा सकते हैं। इस ज्ञान को अपनाने से आप अधिक जानकारीपूर्ण वित्तीय निर्णय लेने में सक्षम हो सकते हैं, जिससे समृद्धि एवं सुरक्षा को बढ़ावा मिलेगा। यह याद रखना आवश्यक है कि ये भविष्यवाणियाँ केवल मार्गदर्शन के रूप में कार्य करती हैं, आपके स्वयं के कार्यों और विकल्पों का आपके वित्तीय भविष्य पर अंतिम प्रभाव पड़ता है।

लग्न – मिथुन

आप धन बचत करने में सक्षम होंगे, लेकिन इसका अधिकांश भाग आपके सामने ही बर्बाद हो सकता है। आपको अपने पिता से उत्तराधिकार के रूप में कुछ नहीं मिल सकता है या दान या चंदा की तरह प्राप्त हो सकता है। आप अपनी जिंदगी में बहुत बेहतर कर सकते हैं। आप अपनी मर्जी से खर्चे करेंगे।

आर्थीक स्थिति के मुख्य बिन्दु

(1) बुध आपकी कुण्डली में लग्नेश हैं, और भाव संख्या 2 में स्थित है। आप हमेशा पैसे के बारे में सोचने वाले व्यक्ति हो सकते हैं। पैसे की तरफ आपका व्यवहार बिल्कुल स्वार्थी हो सकता है। आपकी स्वयं की आय उत्तम हो सकती है।
(2) चन्द्रमा आपकी कुण्डली में द्वितियेश हैं, और भाव संख्या 9 में स्थित है। आपकी आर्थीक स्थिति काफी सुदृढ़ होगी।
(3) बुध आपकी कुण्डली में चतुर्थेश हैं, और भाव संख्या 2 में स्थित है। आपकी आर्थिक स्थिति बहुत उत्तम होगी।
(4) मंगल आपकी कुण्डली में षष्ठेश हैं, और भाव संख्या 10 में स्थित है। आप कोई भी रोजगार कर लें, उसमें आपको सफलता प्राप्त करने के लिए कड़ी मेहनत की आवश्यकता पड़ सकती है।
(5) बृहस्पति आपकी कुण्डली में सप्तमेश हैं, और भाव संख्या 12 में स्थित है। आप सट्टेबाजी या जुआ में अपनी संपत्ति बर्बाद कर सकते हैं।
(6) शनि आपकी कुण्डली में अष्टमेश हैं, और भाव संख्या 12 में स्थित है। आपको अचानक से धन हानि, चोरी का सामना करना पड़ सकता है या अचानक से कर्ज में डूब सकते हैं।
(7) शनि आपकी कुण्डली में नवमेश हैं, और भाव संख्या 12 में स्थित है। आप आध्यात्मिक गुरु बनने का दिखावा कर सकते हैं, लेकिन वास्तविकता में आप बहुत चालाक ब्यक्ति हो सकते हैं।
(8) बृहस्पति आपकी कुण्डली में दशमेश हैं, और भाव संख्या 12 में स्थित है। आपको व्यापार में हानि का सामना करना पड़ सकता है।
(9) मंगल आपकी कुण्डली में एकादशेश हैं, और भाव संख्या 10 में स्थित है। आपको अपनी मेहनत के अनुरुप धन की प्राप्ति होगी। व्यापार में आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

आर्थिक समस्याओं को दूर करने के लिए क्या उपाय करें ?

मनुष्य के गृहस्थ जीवन में प्रवेश करने के साथ ही असीमित आवश्यकताएं उत्पन्न होने लगती हैं। वह अपनी सभी प्रकार की आवश्यकताओं को पूरा करने की इच्छा करता है, परन्तु आर्थिक परिस्थितियां सदैव अनुकूल नहीं होतीं और वह अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए विभिन्न प्रकार के उपाय करने लगता है। उसे जिस प्रकार से उचित लगता है वह प्रयत्न करता है कि उसकी व उसके परिवार की सभी आवश्यकताएं पूर्ण हो जाएं। इसी प्रयत्न में वह कई बार कर्जदार बनता चला जाता है। संभवतः कई बार जीवन में अकस्मात ऐसी परिस्थितियां भी उत्पन्न हो जाती हैं। जब व्यक्ति को ना चाहते हुए भी ऋण लेना पड़ता है। जीवन में ऋण लेना और उसे समय से चुका पाना कठिन कार्य होता है। कई बार स्थिति इतनी कष्टमय हो जाती है कि व्यक्ति का जीना दूभर हो जाता है।

ज्योतिष शास्त्र की दृष्टि में ऐसी परिस्थितियां ग्रहों के प्रभाव से उत्पन्न होती हैं। आर्थिक रूप से कर्जदार बनने की स्थिति में ज्योतिष में छठवें भाव व उसके स्वामी शनि को उसका कारण माना जाता है। ऐसी ही अनेक ग्रह स्थिति होती हैं जिसके कारण व्यक्ति को कर्ज लेना पड़ता है। इसे यदि पहले से जान लिया जाए तो कुछ हद तक परिस्थिति को अनुकूल बनाने का प्रयास किया जा सकता है।

(1) श्मशान में चुपके से कुछ पैसे रखकर आया करें – सिक्के।
(2) दूध का ज्यादा से ज्यादा दान करें, खासकर के गरीब कन्याओं को। बुध और चन्द्र को बल मिलेगा।
(3) श्री सूक्तम जी, कनकधारा, विष्णुसहस्रनाम, का पाठ, कभी भी धन बाधा नहीं होने देगी। मुश्किल समय में भी बरकत आती रहेगी।
(4) शुक्रवार के दिन घर में खीर का भोग बनाकर संध्या समय देसी घी की ज्योति जलायें और लक्ष्मी पूजन करें और खीर कन्याओं में बांटे – लक्ष्मी जी का साक्षात वास होता है।
(5) पत्नी को लक्ष्मी स्वरुपा मानकर आदर–सत्कार पूर्वक व्यवहार करें। शुक्र बलवती रहेगा। धन–सम्पदा की कमी नहीं रहेगी।
(6) घर में कच्चा स्थान रखें। फल, फूल वाले पौधे जरुर लगायें। दक्षिण–पश्चिम में भारी पौधे रखें। घर में बरकत रहेगी।
(7) शुक्रवार के दिन गरीब लोगों को, वृद्ध आश्रम में रहने वाले को फल बांटें।
(8) जौ का आटा, काले तिल और शक्कर, बादाम (महीन पीसकर) छुहारे काटकर+देसी घी में हल्के भूनकर – मिलाकर पेड़ों के नीचे डालें – कीड़े–मकौड़ो को।

शादी–विवाह और जीवनसाथी

आपके वैदिक ज्योतिष चार्ट में लग्न और विभिन्न भावाधिपतियों की स्थिति को समझना अविश्वसनीय रूप से महत्वपूर्ण है। यह न केवल आपकी व्यक्तिगत विशेषताओं के बारे में जानकारी प्रदान करता है, बल्कि जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं, जैसे विवाह और आपके जीवन साथी के स्वभाव पर भी प्रकाश डालता है। ये ज्योतिषीय व्याख्याएं आपको संभावित चुनौतियों के लिए तैयार होने और इन महत्वपूर्ण जीवन की घटनाओं के लिए अनुकूल समय का लाभ उठाने की अनुमति देती हैं। इन भविष्यवाणियों से सीखकर, आप नियंत्रण की भावना और अपने भाग्य की दिशा प्राप्त कर सकते हैं, जिससे अंततः अधिक सूचित निर्णय लेना और व्यक्तिगत विकास संभव हो सकता है।

लग्न – मिथुन

आपकी शादी अच्छे घर में होगी, लेकिन अपने जीवनसाथी के साथ आपका मनमुटाव या कलह हो सकता है, जिसकी वजह से आपका अलगाव भी हो सकता है, आपको पारिवारिक जिम्मेदारीयों को अच्छी तरह निभाना चाहिए।

विवाह और जीवनसाथी के मुख्य बिन्दु

(1) बुध आपकी कुण्डली में चतुर्थेश हैं, और भाव संख्या 2 में स्थित है। आप अपने जीवनसाथी एवं परिवार का ध्यान रखने वाले एवं उनको प्यार करने वाले होंगे।
(2) बृहस्पति आपकी कुण्डली में सप्तमेश हैं, और भाव संख्या 12 में स्थित है। औरतों की वजह से आपका झगड़ा हो सकता है। आपके जीवनसाथी अक्सर बीमार रह सकते हैं। आपके जीवनसाथी किसी बीमारी से अक्सर ग्रसित रह सकते हैं। अपने जीवनसाथी के साथ किसी गलतफहमी के कारण आपका मनमुटाव या झगड़ा हो सकता है। आपको अपने जीवनसाथी से आपको ज्यदा प्यार नहीं मिल सकता है, जिसकी वजह से आप चिंतित रह सकते हैं।
(3) शनि आपकी कुण्डली में अष्टमेश हैं, और भाव संख्या 12 में स्थित है। आप घर––गृहस्थी को लेकर चिंतित हो सकते हैं।

शीघ्र विवाह और विवाह बाधा दूर करने के लिए क्या उपाय करें ?

सामान्यतः गृहस्थ जीवन में प्रवेश करने के लिए प्रथम और अनिवार्य शर्त विवाह को माना जाता है। इसलिए इसका हमारे जीवन में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। जीवन में अनेक प्रकार की बाधाएं आती हैं जिनमें विवाह से संबधित बाधाएं भी होती हैं। जैसे इच्छानुकुल वर या वधु का न मिलना, विवाह योग्य आयु होने पर विवाह न हो पाना, विवाह में किन्ही कारणवश विलम्ब होना, वर या वधु के सर्वगुण सम्पन्न होने के बाद भी विवाह न हो पाना, विवाह के लिए आर्थिक अभाव का आड़े आना आदि। ज्योतिषिय दृष्टिकोण से ऐसी बाधाओं या कठिनाईयों का कारण व्यक्ति के जन्म कुंडली में स्थित ग्रहों के प्रतिकूल प्रभाव के कारण होता है। विवाह तथा वैवाहिक जीवन को ग्रहों के अच्छे व बुरे प्रभाव सर्वथा प्रभावित करते हैं। यदि इनके अशुभ प्रभावों को विवाह के पूर्व ही ज्ञात कर लिया जाए तो इन प्रतिकूल प्रभावों का निवारण कर वैवाहिक जीवन को सुखमय बनाया जा सकता है।

(1) विष्णुसहस्रनाम का पाठ कई बाधाओं से मुक्ति दिलाता है और शादी के योग सुगमता से बनते हैं।
(2) हल्दी के गांठों को केसर और सिन्दूर सफेद कपड़े में बांधकर, चांदी के गिलास में उत्तर–पूर्व में रखें और हर मंगलवार जलेबी का दान गरीबों में करें तो कभी भी आपको शादी की रुकावटों का सामना नहीं करना पड़ेगा।
(3) हनुमान जी की प्रेमपूर्ण रुप से गुरु या भाई रुप में पूजा की जायें – सुन्दर काण्ड का पाठ, हनुमान चालीसा, हनुमान अष्टक का पाठ मंगल दोष से मुक्ति में सहायक होते हैं।
(4) हर वीरवार को बूंदी के 11 लड्डू पेड़ों के नीचे जीव–जंतुओं के निमित्त डालें।
(5) जिन घरों में बच्चों के शादी के योग नहीं बनते, वहां रामायण का पाठ करवाकर शुद्धि कराई जाए – शांति पाठ कराकर, हर अमावस्या को पितरों के नाम का भोजन गरीबों को खिलाया जाये – हर तरह की विघ्न बाधा का नाश होता हे।
(6) शुक्र के दूषित होने से या मंगल दोष, राहु दोष, अंगारक दोष होने से शादी नहीं हो रही है तो श्री सूक्तम जी का पाठ शादी की बहुत सी विघ्न–बाधाओं का नाश करेगा।

पारिवारिक जीवन

वैदिक ज्योतिष के माध्यम से अपने पारिवारिक जीवन को समझना, विशेष रूप से आपके लग्न और विभिन्न गृह स्वामियों की स्थिति के विश्लेषण के माध्यम से, समृद्ध अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकता है। ये भविष्यवाणियाँ आपके पारिवारिक रिश्तों की गुणवत्ता, पारिवारिक गतिशीलता और संभावित मुद्दों या आशीर्वादों की एक झलक प्रदान करती हैं। इस ज्ञान के होने से, आप अपने पारिवारिक जीवन की जटिलताओं को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं, मजबूत रिश्तों को बढ़ावा दे सकते हैं, और आने वाली किसी भी चुनौती के लिए तैयार हो सकते हैं। यह ज्ञान आपके समग्र कल्याण को बढ़ाते हुए, अधिक सामंजस्यपूर्ण पारिवारिक वातावरण में योगदान देता है।

लग्न – मिथुन

आपको पारिवारिक खुशियां पर्याप्त मात्रा में प्राप्त नहीं हो सकती हैं। आपके भाई–बहनों की संख्या अच्छी–खासी होगी एवं आप आर्थिक तौर पर उनसे बेहतर होंगे। आपकी माता सम्मानित परिवार से संबंध रखने वाली होंगी, लेकिन बहुत कम आयु में आपका उनसे अलगाव हो सकता है। आपको संतान की प्राप्ति अवश्य होगी, लेकिन उनमें से कम से कम एक संतान से आपका अलगाव आपके अपने जीवनकाल में हो सकता है। धन संबंधित मामलों को लेकर आपका अपने पिता के साथ कोई गलतफहमी हो सकती है।

पारिवारिक जीवन के मुख्य बिन्दु

(1) बुध आपकी कुण्डली में लग्नेश हैं, और भाव संख्या 2 में स्थित है। आप अपने परिवार के लिए आदरणीय होंगे क्योंकि आप ही उनकी रोजी––रोटी का एकमात्र साधन होंगे।
(2) सूर्य आपकी कुण्डली में तृतियेश हैं, और भाव संख्या 2 में स्थित है। आपको अपने भाई––बहनों की जिम्मेदारी का निर्वाहन करना पड़ सकता है।
(3) बुध आपकी कुण्डली में चतुर्थेश हैं, और भाव संख्या 2 में स्थित है। आप अपने परिवार का ध्यान रखने वाले होंगे एवं आप उन्हें बहुत ज्यादा प्यार करेंगे।
(4) शुक्र आपकी कुण्डली में पंचमेश हैं, और भाव संख्या 3 में स्थित है। आपको अपने भाई एवं बहनों से प्यार एवं खुशियां प्राप्त होती रहेंगी।
(5) मंगल आपकी कुण्डली में षष्ठेश हैं, और भाव संख्या 10 में स्थित है। अपने पिता के साथ आपका संबंध तनावपूर्ण हो सकता है।
(6) शनि आपकी कुण्डली में अष्टमेश हैं, और भाव संख्या 12 में स्थित है। आपकी किसी संतान को शारिरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है।
(7) शुक्र आपकी कुण्डली में द्वादशेश हैं, और भाव संख्या 3 में स्थित है। आप अपने भाई––बहनों से दूर रह सकते हैं।

सुखी वैवाहिक/पारिवारिक जीवन के लिए क्या उपाय करें ?

ब्यक्ति के विवाहोपरान्त दाम्पत्य जीवन की शुरुआत होती है। यह जीवन का वह भाग है जिसमें व्यक्ति का सर्वाधिक समय व्यतीत होता है। इसलिए इसके सुखमय अथवा कष्टमय होने से व्यक्ति का सारा जीवन प्रभावित होता है। दाम्पत्य जीवन पति–पत्नी दोनों के आपसी समझ, सामंजस्य, प्रेम, समर्पण, सहानुभूति, मधुरता, अपनापन आदि से मिलकर बनता है। यदि इनके विपरीत गुणों का समावेश दाम्पत्य जीवन में होने लगता है, तो परिस्थिति सुखमय होने की बजाय कष्टमय होने लगती है। सामान्यतः पति–पत्नी दोनों की ही यह जिम्मेदारी होती है कि वे अपने–अपने दायित्वों का पालन निष्ठा व प्रेम से करें। जिससे कि घर–परिवार में कलह क्लेश की स्थिति उत्पन्न न हो, परन्तु किन्हीं कारण वश ऐसा सदैव कर पाना संभव नहीं हो पाता है और दाम्पत्य सुख लुप्त होने लगता है। ज्योतिषशास्त्र में दाम्पत्य जीवन में होने वाले वाद–विवाद, कलह, अशांति आदि को दाम्पत्य सुख में बाधक माना गया है, जो कि ग्रहों के प्रतिकूल होने के कारण उत्पन्न होता है। यदि ग्रहों की प्रतिकूलता को पहले ही ज्ञात करके उसके अनुसार आचरण व उपाय किया जाय तो दाम्पत्य जीवन को सुखमय बनाया जा सकता है।

(1) दाम्पत्य सुख के लिए अपने शयनकक्ष में राधा–कृष्ण की तस्वीर जरुर लगायें।
(2) आपके शयनकक्ष में कोई शीशा न हो या ऐसा कोई कांच जिसमें आपकी परछाई नजर आती हो।
(3) आपके घर में फल–फूलों वाले पौधे जिसमें कांटे ना हो जरुर लगायें, बुध और शुक्र दाम्पत्य सुख की वृद्धि करते हैं।
(4) गुलाब की पत्तियां, जामुन की पत्तियां, अशोक के पत्ते आपने शयन कक्ष में रखें। सूखने पर बदलते रहें।
(5) उं सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके शरणये त्रयम्बके गौरी नारायणी नमोस्तुते का जाप घर में सुख समृद्धि और मांगलिक कार्यों को प्रेरित करेगा।
(6) पूर्णिमा, संक्रांति और अमावस्या पर नौ अनाज भिंगोकर (9 किलो) अगर पक्षियों को डाला जाए तो दाम्पत्य सुख की हर बाधा का नाश होता है।
(7) अगर शराब पीने की वजह से परिवार में अशान्ति आती है तो भैरो जी को पिता के रुप में मानते हुए सवा किलो जलेबी का प्रसाद चढ़ाए और समस्या के समाधान की आस्थापूर्वक प्रार्थना करें।
(8) बबूल के पेड़ को, पीपल के पेड़ को, बरगद को जो वीराने में खड़े होते हैं – जिन्हें कोई जल नहीं देता, देसी शक्कर – सफेद तिल और जल मिलाकर अर्पण करें – दाम्पत्य सुख बना रहेगा।
(9) गरीब कन्याओं को लाल जोड़ा या हरा जोड़ा – शादी के लिए दान किया जाये तो भी दाम्पत्य सुख बना रहता है।

जीवन शैली और सामाजिक स्थिति

आपके वैदिक ज्योतिष चार्ट में लग्न और विभिन्न भावाधिपतियों की स्थिति का विश्लेषण करने से आपकी जीवनशैली और सामाजिक स्थिति के बारे में गहन जानकारी मिल सकती है। ये भविष्यवाणियाँ आपको इस बारे में मार्गदर्शन कर सकती हैं कि आप कैसा जीवन जी सकते हैं और समाज में आपकी स्थिति क्या है। इन्हें समझने से आपको अपना मार्ग अधिक प्रभावी ढंग से संचालित करने और अपने ज्योतिषीय स्थिति की क्षमता का दोहन करने में मदद मिल सकती है। यह ज्ञान आपको रणनीतिक निर्णय लेने की दूरदर्शिता से सुसज्जित करता है, संभावित रूप से आपकी सामाजिक स्थिति एवं जीवनशैली में सुधार करता है, इस प्रकार समग्र खुशी और सफलता में योगदान देता है।

लग्न – मिथुन

दुर्भाग्य कई बार आपके सामने खड़ा हो सकता है। अधिक एवं अपनी मर्जी के मुताबिक खर्चे करने के बावजूद आप जीवन का आनंद प्राप्त करेंगे। आप अपने जीवन के उत्तरार्ध में धार्मिक एवं रुढ़ीवादी बन सकते हैं। आपको सत्ता एवं अधिकार पसंद होगा, लेकिन आप उसे सही ढ़ंग से उपयोग नहीं कर सकते है। आप लोगों के बीच में रहना पसंद करेंगे तथा आपके मित्रों का दायरा बड़ा होगा। आपके कुछ दुश्मन भी हो सकते हैं एवं आपके दुश्मन बीच–बीच में आपको अक्सर परेशान करते रह सकते हैं।

जीवन शैली और सामाजिक स्थिति के मुख्य बिन्दु

(1) बुध आपकी कुण्डली में लग्नेश हैं, और भाव संख्या 2 में स्थित है। आप अपने खान––पान के मामले में बहुत तुनकमिजाज हो सकते हैं।
(2) सूर्य आपकी कुण्डली में तृतियेश हैं, और भाव संख्या 2 में स्थित है। आपको गाना गाने में दिलचस्पी हो सकती है। इसके साथ ही आप एक अच्छे वक्ता हो सकते हैं।
(3) बुध आपकी कुण्डली में चतुर्थेश हैं, और भाव संख्या 2 में स्थित है। आप धनी और संपन्न व्यक्ति होंगे।
(4) मंगल आपकी कुण्डली में षष्ठेश हैं, और भाव संख्या 10 में स्थित है। आप धार्मिक नहीं हो सकते हैं तथा पुराने रीति रिवाजों की आलोचना कर सकते हैं। आप दूसरे धर्म को अपना सकते हैं।
(5) बृहस्पति आपकी कुण्डली में सप्तमेश हैं, और भाव संख्या 12 में स्थित है। महिलाओं के कारण आपको अपमानित होना पड़ सकता है।

मकान/आवास सुख के लिए क्या उपाय करें ?

मनुष्य का जीवन प्राप्त होने के बाद उसके जीवन में तरह–तरह की जरूरतें आती हैं, परन्तु जो मूलभूत आवश्यकताएं हैं उनमें से सबसे पहले वह भोजन और फिर वस्त्र के बारे में सोचता है और जब उसे पूरा कर लेता है तो उसके बाद उसे अपने रहने के लिए एक ऐसे आवास की जरूरत महसूस होती है जिसमें वह सुख–शांति से अपने परिवार के साथ रह सके। चूंकि प्रत्येक व्यक्ति की यह इच्छा होती है कि उसके पास उसका स्वयं का घर व सभी प्रकार की भौतिक सुख सुविधाएं हों, परन्तु वास्तव में सब कुछ हासिल कर पाना इतना आसान भी नहीं होता है। इन्हें प्राप्त करनें में अनेक बाधाएं आती हैं। किसी के जीवन में ये बाधाएं अधिक होती हैं तो किसी में कुछ कम एवं किसी को बहुत आसानी से सब कुछ उपलब्ध हो जाता है। ज्योतिष में इसी उतार–चढ़ाव के खेल को ग्रहों व भाग्य का खेल कहा जाता है जो कि सबका अलग–अलग होने के कारण सबको अलग–अलग परिस्थितियों में जीवन व्यतीत करना पड़ता है।

(1) जिस घर में या भूमि पर रहते हैं रोजाना भूमि को प्रणाम करें, दूध से धुलाई करें और हनुमान जी की उपासना करें। भाग्यानुसार और कर्मानुसार आपको आवास सुख शानदार मिलेगा।
(2) अपने घर के पृथ्वी तत्व यानि दक्षिण–पश्चिम यानि राहु के स्थान पर बड़े और भारी पेड़–पौधे लगायें, घर में बरकत और सुख समृद्धि बनी रहेगी। अपने भाई से हमेशा बना कर रखें।
(3) अपनी पत्नी के भाई के साथ स्नेह भाव रखें।
(4) मकान खरीदने में अगर समस्या आती है तो हनुमान जी की उपासना करें,। सिन्दूर का चोला चढ़ायें और आंखों में सफेद सुरमा लगायें।
(5) मंगल की शुभता के लिए शहद और सफेद तिल मंगलवार को, वीरवार को, रविवार को पहली होरा में पेड़ों के नीचे जीव–जंतुओं को डालें। कभी भी अमंगल नहीं होगा।
(6) पिछले जन्म के पितृ भ्रमण और पापकर्म की वजह से मकान सुख नहीं है, तो बेज़ुबानों की सेवा करें, वृक्षों को जल दें, बंजर भूमि को सींचें।

अच्छे वाहन सुख के लिए क्या उपाय करें ?

आधुनिक समय में भौतिक भोग विलास की वस्तुएं इस प्रकार से जीवन में अपना स्थान बनाती जा रहीं हैं कि उनके बिना जीवन कठिन प्रतीत होने लगता है। इस वैज्ञानिक युग में जितनी तेज गति से विकास हो रहा है व्यक्ति को भी उसी के अनुसार अपनी गति बढ़ानी पड़ रही है। अब वो समय नहीं रहा कि लोग बैलगाड़ी से एक स्थान से दूसरे स्थान पर कई–कई दिन में जाएं। इसके लिए आधुनिक वाहनों का जीवन में महत्व बढ़ता ही जा रहा है, बल्कि ये कह सकते हैं कि यह इच्छा ही नहीं आवश्यकता बन गई है। चूंकि सभी के लिए वाहन आवश्यक होता जा रहा है, परन्तु यह आवश्यक नहीं कि सबको वाहन सुख प्राप्त ही हो। किसी के पास अनेकोनेक वाहन होते हैं तो कोई उसे लाख प्रयत्न करने के बाद भी प्राप्त नहीं कर पाता है, कोई व्यक्ति वाहन होते हुए भी उसका भरपूर सुख नहीं उठा पाता है आदि की तरह जीवन में अनेक ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न होती हैं।

ज्योतिष की दृष्टि से देखा जाय तो यह अन्तर व्यक्ति के जन्म के समय में स्थित ग्रहों के प्रभाव के कारण होता है। यदि व्यक्ति अपने जन्मकुण्डली में स्थित ग्रहों के प्रभाव को पहले ही जान कर उसके अनुसार वाहन का जीवन में प्रयोग करे तो वह स्वयं की सुरक्षा के साथ–साथ वाहन का सुख भी भरपूर प्राप्त कर सकता है।

(1) लक्ष्मी जी और संतोषी मां की पूजा करें। श्री सूक्तम, कनकधारा और लक्ष्मी महातम का पाठ करने से वाहन सुख में कभी कमी नहीं आती।
(2) अपने हाथों से मीठी खील, दूध का छीटा देकर हर शुकवार को सूर्य उदय होने पर पेड़ों के नीचे – जहां कीड़े–मकौड़े हो डालें।
(3) वाहन अगर बार–बार खराब होता है तो सफेद गाय के मूत्र से छीटे दें।
(4) नारी जाति का सम्मान करें, मंदिर में रुई की बत्तियां, घी और मिट्टी के दीपक दे, गायों की सेवा करें।
(5) घर में नंगे पैर कभी न चलें।

भाग्यवृद्धि के लिए क्या उपाय करें ?

इस संसार में आस्तिक एवं नास्तिक दोनों की तरह के मनुष्य हैं। भले ही नास्तिक मनुष्य ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करते हैं। इसलिए उनके लिए भाग्य भी जीवन में कोई मायने नहीं रखता है, परन्तु चाहे अनचाहे ढंग से सबको इस सत्य को कभी न कभी स्वीकार करना पड़ता है कि ऐसी कोई शक्ति अवश्य है जो हमारे कर्मों के आधार पर हमारे भाग्य का निर्माण करती है। ऐसी धारणा है कि व्यक्ति के पूर्व जन्म में किए गए कर्मों का फल उसे अगले जन्म में प्राप्त होता है एवं इस कर्मों के फल को ही सामान्य शब्दों में भाग्य का लिखा माना जाता है जो कि व्यक्ति को वर्तमान में प्राप्त होता है। इसलिए मनुष्य का जीवन केवल भाग्य से ही प्रभावित नहीं होता अपितु उसे उसका कर्म भी उतना ही प्रभावित करता है अर्थात व्यक्ति के भाग्य का निर्माण उसके कर्मों के आधार पर ही होता है।

अब प्रश्न यह उठता है कि यदि हमारा भाग्य हमारे किए गए कर्मों से बनता है तो क्यों कोई व्यक्ति वर्तमान में इमानदारी, सच्चाई, परोपकार आदि सद्गुणों का अनुसरण करने के बाद भी जीवन में अनेक कठिनाईयों को झेलता है, जबकि दूसरा व्यक्ति कुमार्ग पर चलते हुए भी सुखी जीवन व्यतीत करता है। यदि ध्यान से देखा जाय तो यह ज्ञात होता है कि कुमार्ग पर चलकर अर्जित की हुई खुशियां अधिक समय तक नहीं टिकतीं हैं। जबकि व्यक्ति के सद्कर्म उसके भाग्य में आने वाले अवरोधों को समाप्त करने में मदद करते हैं। यह विषय अत्यंत जटिल एवं तर्क योग्य है कि भाग्य श्रेष्ठ है या कर्म तथा भाग्य की वास्तविकता क्या है ? साधारण शब्दों में कहा जा सकता है कि जैसे ईश्वर सत्य है उसी प्रकार व्यक्ति का भाग्य भी उसके साथ होता है जो कि उसके कर्मों के आधार पर परिवर्तित होता रहता है।

(1) दीन-दुखियों की सेवा करें।
(2) अन्न का दान जरुरतमंदों को करें।
(3) पशु-पक्षियों के लिए अन्न जल का प्रबंध करें।
(4) लूले, लंगड़े की सेवा, दवाई का दान, अंध विद्यालय, वृद्ध आश्रम और अनाथालय में सामर्थ्यनुसार सेवा करते रहें।
(5) कमजोर के प्रति दया भाव रखें।
(6) मां-बाप की सेवा करें। बुर्जुगों से आर्शीवाद लें।
(7) पीपल, बरगद और कीकर भी बुर्जुग ही हैं, सेवा करते रहें।
(8) मांस-मदिरा का सेवन न करें। तामसिक वृतियों से परहेज करें।
(9) पिंजरे से पक्षियों को आजाद करायें। कसाई से जानवर आजाद कराकर जंगलों में छोड़ दें।
(10) असहाय लोगों को जरुरतनुसार मदद करें, चाहे दवाई हों, अन्न, जूता या कपड़ा हों।
(11) अच्छे कर्मों से जीवन यापन करिये - वर्तमान में सुधरेगा तो भविष्य भी प्रबल होगा।

क्या है कालसर्प योग ?

जब कुण्डली में सारे ग्रह राहु और केतु के अंशो के बीच में आ जाते हैं, तो कुण्डली को कालसर्प योग से ग्रसित माना जाता है। यदि एक भी ग्रह राहु और केतु के अंशो के बाहर रह जाता है, तो पूर्ण कालसर्प योग नहीं माना जाएगा। हालांकि, सारे ग्रह केतू और राहु के अंशों के बीच में आ जायें, तो भी आंशिक कालसर्प योग माना जाएगा।

कालसर्प योग का सामान्य प्रभाव–

1– किसी भी शुभ और महत्वपूर्ण कार्य को करते समय परेशानियों का सामना करना।
2– मानसिक तनाव।
3– आत्मविश्वास में कमी।
4– स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां।
5– गरीबी और धन की कमी।
6– व्यापार में घाटा और नौकरी में परेशानी।
7– उत्तेजना और बेकार की चिंताएं।
8– मित्रों और शुभचिन्तकों से मनमुटाव।
9– मित्रों और शुभचिन्तकों की तरफ से विश्वासघात।
10– मित्रों, शुभचिन्तकों और रिश्तेदारों की ओर से किसी भी तरह का सहयोग नहीं प्राप्त होना।

आपकी कुण्डली में कालसर्प योग मौजूद नहीं है।

मांगलिक दोष (कुज दोष)

मांगलिक दोष (कुज दोष) निर्धारण के नियम

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजः।
मन्गलिक दोषवान्नारी पुंसां स्त्रीविनाशिनी।।

यदि कुण्डली में मंगल लग्न से पहले, चौथे, सातवें, आठवें या बारहवें भाव में स्थित हो तो मंगल दोष या कुज दोष का निर्माण होता है।

यदि कुण्डली में मंगल चंद्रमा से पहले, चौथे, सातवें, आठवें या बारहवें भाव में स्थित हो तो मंगल दोष या कुज दोष का निर्माण होता है।

यदि कुण्डली में मंगल शुक्र से पहले, चौथे, सातवें, आठवें या बारहवें भाव में स्थित हो तो मंगल दोष या कुज दोष का निर्माण होता है।

आपकी कुण्डली में मांगलिक दोष (कुज दोष)

आपकी कुण्डली में, मंगल शुक्र राशि से आठवीं राशि में स्थित है। आपकी कुण्डली में कुज दोष (या मांगलिक दोष) उपस्थित है।
आपकी जन्मकुण्डली में, मंगल शुक्र–राशि से आठवें भाव में स्थित है। यह आभासी रूप से कुज दोष (या मांगलिक दोष) का निर्माण करता है। लेकिन, चूंकि मंगल बृहस्पति की राशि में स्थित है, अतः यह एक अपवाद है– जैसाकि यह दोष स्वतः समाप्त हो जाता है। आपकी कुण्डली में कुज दोष तकनीकि रूप से अनुपस्थित माना जाएगा।

मांगलिक दोष (कुज दोष) का प्रभाव

मंगल दोष के प्रभाव से विवाह में देरी हो सकती है या विवाह होने में कई बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है। विवाह होने के बाद वर या वधू या दोनों को शारीरिक,

मानसिक या आर्थिक रूप से कई परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। इसके प्रभाव से आपसी मतभेद/विवाद हो सकते हैं, एक–दूसरे पर दोषारोपण कर सकती हैं तथा तलाक की भी नौबत आ सकती है। दोष का प्रभाव अधिक होने की स्थिति में विवाहित दम्पत्ति में से किसी की या दोनों की सेहत अक्सर खराब रह सकती है या अकाल मृत्यु के भी शिकार हो सकते हैं।

मांगलिक दोष (कुज दोष) का उपाय

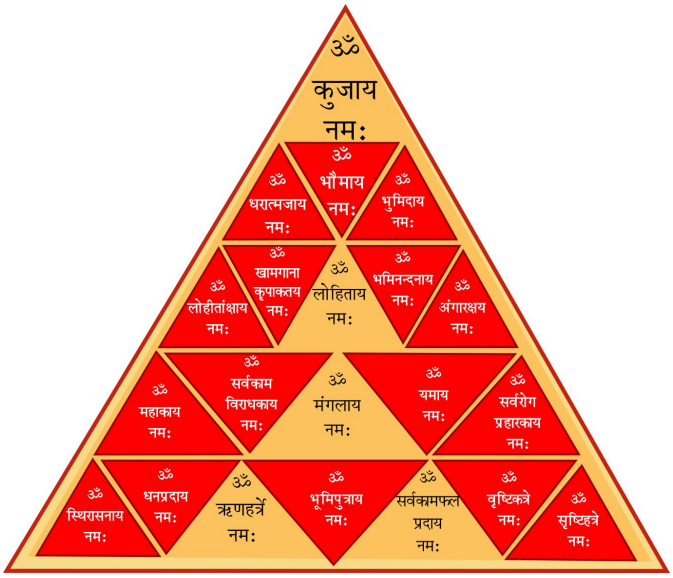

मंगल दोष को दूर करने के लिए वैदिक ज्योतिष से निम्न उपाय करें :–

मंगलवार (सूर्योदय से अगले दिन सूर्योदय तक) को उपवास करें। दिन के दौरान नमक का सेवन ना करें और यदि संभव हो, तो केवल तरल पदार्थों जैसे, चाय, कॉफी, दूध फलों का रस एवं दही आदि का ही सेवन करें। शाम के समय रोली से किसी थाली में एक त्रिकोण बनायें एवं पंचोपचार (लाल चंदन, लाल फल, धूप, दीपक एवं भोज्य पदार्थ) से पूजा करें। उसके बाद सूर्यास्त से पहले गेहूं के आटे की रोटी, घी एवं गुड़ का सेवन करें।

मंगल दोष का प्रभाव अधिक होने की स्थिति में लगातार 108 दिनों तक रोज 21 बार मंगल चंडिका स्त्रोत का पाठ करें। सुबह में पूर्वाभिमुख बैठकर पंचमुखी दीपक जलायें एवं अपने इष्ट देव तथा मंगल की पंचोपचार से पूजा करें और निम्नलिखित मंत्र का जाप करें।

रक्ष रक्ष जगन्मातर्देवि मंगलचंडिके । हारिके विपदां राशे हर्षमंगलकारिके ।।
हर्षमंगलदक्षे च हर्षमंगलदायिके । शुभे मंगलदक्षे च शुभे मंगलचंडिके ।।
मंगले मंगलार्हे च सर्वमंगलमंगले । सदा मंगलदे देवि सर्वेषां मंगलालये ।।

केमुद्रुम योग

ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः सोमाय नमः। (11000 बार)

दधिशंखतुशाराभं क्षीरोदोर्णवसभवम् नवम्।
भाशिनं भवत्या भाम्भोर्मुकुटभुशणम्।।

क्या है केमुद्रुम योग ?

आपकी कुण्डली में केमुद्रम योग प्रभावी नहीं है। आपको इस योग से संबंधित कोई उपाय की आवश्यकता नहीं है।

उपाय क्या करें ?

(1) रुद्राष्टक का निरन्तर जप करें।
(2) सुबह केसर और दूध का सेवन करें।
(3) पंचामृत से भगवान शिव का अभिषेक करें।
(4) चांद की रौशनी में सफेद वस्त्र पहन कर गायत्री मंत्र का जाप करें।
(5) रात को सोते समय सफेद चंदन का लेप करें।
(6) अपनी मां से और सभी मां जैसी व्यक्ति से आर्शीवाद लेते रहे।
(7) विधवा औरतो की यथासंभव सहायता करते रहे।
(8) गरीब लोगों को दूध का दान करें।

जीवन रत्न

यह रत्न आपके लिये धन, प्रतिष्ठा, यश, स्वास्थ्य, आयु में वृद्धि करने वाला रहेगा।

☿ ग्रह विवरण

लग्न	मिथुन
नक्षत्र	पूर्वाभाद – 2
लग्नाधिपति	बुध
उच्चस्थ	------
मूलत्रिकोन	------
स्वराशिगत	------
अस्त	हाँ
नीचस्थ	------
वक्री	------
केन्द्रगत	------
त्रिकोनगत	------
मारक भाव में	हाँ
त्रिक भाव में	------
केन्द्राधिपति	हाँ
त्रिकोनाधिपति	------
मारकेश	------
त्रिकभावपति	------

ओं चन्द्रपुत्राय विद्महे रोहिणीप्रियाय धीमहि तन्नो बुधः प्रचोदयात्।

सौम्योदङ्मुख पीतवर्ण मगधश्चात्रेय गोत्रोद्भवो।
बाणेशानदिशः सुहृच्छनिभृगुः शत्रु सदा शीतगुः।।
कन्या युग्मपतिर्दशाष्ट चतुरः षड्नेत्रकः शोभनो।
विष्णुः पौरुषदेवते शशिसुतः कुर्यात् सदा मंगलम्।।

ऊँ ब्रां ब्रीं ब्रों सः बुधाय नमः (19000 जप)

रत्न विवरण

रत्न	पन्ना (एमरल्ड)
उप–रत्न	
बैरूज(एक्वामेरीन), मरगज(नेफ्नाइट)	
दिन	बुधवार
नक्षत्र	आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती
विपरीत–रत्न	
मोती, मूंगा	
मंत्र	
ऊँ ब्रां ब्रीं ब्रों सः बुधाय नमः (19000 जप)	
दान विवरण 1	
पन्ना, स्वर्ण, काँस्य, मूंग, खांड, घृत, कपूर, कस्तूरी	
दान विवरण 2	
हरा वस्त्र, सर्वपुष्प, हाथी दाँत, शस्त्रा, फल	
रत्न कैसे धारण करें	
पन्ना तीन या छः रत्ती का स्वर्ण की अंगूठी में जड़वाकर दाहिने हाथ की कनिष्ठा अंगुली में बुधवार को प्रातः दूध व गंगाजल से शुद्ध करके धूप अगरबत्ती करने के बाद बुध के तांत्रिक मंत्र की एक माला का जाप करके सूर्योदय से लेकर एक घंट के बीच धारण करना उत्तम फलप्रद रहता है।	

प्रोग्राम का निष्कर्ष

आपका लग्नेश बुध है। चूंकि आपका लग्नेश किसी मारक भाव में स्थित है, इसलिए आपका बुध के लिए कोई रत्न धारण करना आपके लिए उपयुक्त नहीं होगा।

यद्यपि इस प्रोग्राम में हम रत्न धारण करने या ना करने की बहुत सी कण्डीशन को चेक कर रहें हैं, फिर भी विद्वान ज्यातिषी की सलाह अंतिम मानी जायेगी।

ज्योतिषी का निष्कर्ष

भाग्य रत्न

यह रत्न आपके लिये भाग्योदय कारक, धन वृद्धि कारक, व्यावसायिक उन्नत्ति कारक रहेगा।

♄ ग्रह विवरण

लग्न	मिथुन
नक्षत्र	पूर्वाभाद – 2
लग्नाधिपति	शनि
उच्चस्थ	------
मूलत्रिकोन	------
स्वराशिगत	------
अस्त	------
नीचस्थ	------
वक्री	------
केन्द्रगत	------
त्रिकोनगत	------
मारक भाव में	------
त्रिक भाव में	हाँ
केन्द्राधिपति	------
त्रिकोनाधिपति	हाँ
मारकेश	------
त्रिकभावपति	हाँ

ओं कृष्णांगाय विद्महे रविपुत्राय धीमहि तन्नः सौरिः प्रचोदयात्।

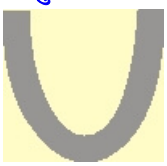

मन्दः कृष्णनिभस्तु पश्चिममुखः सौराष्ट्रकः काश्यपः।
स्वामी नक्रभकुम्भयोर्बुधसितौ मित्रे समश्चाऽङ्गिराः।।
स्थानं पश्चिमदिक्प्रजापति यमौ देवौ धनुष्यासनः।
षट्त्रिस्थः शुभकृच्छनी रविसुतः कुर्यात् मंगलम्।।

ऊँ प्रां प्रीं प्रों सः शनैश्चराय नमः (23000 जप)

रत्न विवरण

रत्न	नीलम (ब्लू सफायर)
उप–रत्न	
काकानीली(आयोलाईट), लाजवर्त(लेपिस लेजुली)	
दिन	शनिवार
नक्षत्र	पुष्य, अनुराधा, उ. भाद्रपद
विपरीत–रत्न	
माणिक्य, मोती, मूंगा, पुखराज	
मंत्र	
ऊँ प्रां प्रीं प्रों सः शनैश्चराय नमः (23000 जप)	
दान विवरण 1	
नीलम, स्वर्ण, लौह, उड़द, कुलथी, तेल, कस्तूरी, तिल	
दान विवरण 2	
कृष्ण पुष्प, कृष्ण वस्त्र, कृष्ण गौ, चर्म पादुका, भैंस	
रत्न कैसे धारण करें	
नीलम चार रत्ती का रजत की अंगूठी में जड़वाकर शनिवार को दाहिने हाथ की मध्यमा अंगुली में दूध व गंगाजल से शुद्ध करके धूप अगरबत्ती करने के बाद शनि के तांत्रिक मंत्र की एक माला का जाप करके सूर्यास्त से एक घंटे के बीच धारण करना श्रेष्ठ फलकारक रहता है।	

प्रोग्राम का निष्कर्ष

चूंकि आपका नवमेश आपकी कुण्डली में किसी त्रिक भाव का स्वामी है, इसलिए नवमेश के लिए कोई रत्न धारण करना आपके लिए उपयुक्त नहीं होगा।

यद्यपि इस प्रोग्राम में हम रत्न धारण करने या ना करने की बहुत सी कण्डीशन को चेक कर रहें हैं, फिर भी विद्वान ज्यातिषी की सलाह अंतिम मानी जायेगी।

ज्योतिषी का निष्कर्ष

कारक रत्न

यह रत्न आपके भाग्योदय, व्यापार--व्यवसाय में उन्नतिदायक तथा धन वृद्धि कारक रहेगा।

♀ ग्रह विवरण

लग्न	मिथुन
नक्षत्र	पूर्वाभाद – 2
लग्नाधिपति	शुक्र
उच्चस्थ	------
मूलत्रिकोन	------
स्वराशिगत	------
अस्त	------
नीचस्थ	------
वक्री	------
केन्द्रगत	------
त्रिकोनगत	------
मारक भाव में	------
त्रिक भाव में	------
केन्द्राधिपति	------
त्रिकोनाधिपति	हाँ
मारकेश	------
त्रिकभावपति	हाँ

ओं भृगुपुत्राय विद्महे श्वेतवाहनाय धीमहि तन्नः शुक्रः प्रचोदयात्।

शुक्रो भार्गवगोत्रजः सितनिभः प्राचीमुखः पूर्वदिक्।
पञ्चाङ्गो वृषभस्तुलाधिप महाराष्ट्राधिपोदुम्बरः।।
इन्द्राणी मघवान्भौ बुध शनी मित्रार्क चन्द्रौ रिपू।
षष्ठो द्विर्दश वर्जितो भृगुसुतः कुर्यात् सदा मंगलम्।।

ऊँ द्रां द्रीं द्रों सः शुक्राय नमः (6000 जप)

रत्न विवरण

रत्न	हीरा (डायमण्ड)
उप-रत्न	
वैक्रान्त(तुरमुली), सफेद हकीक(व्हाईट एगेट)	
दिन	शुक्रवार
नक्षत्र	भरणी, पू. फाल्गुनी, पू. आषाढ़ा
विपरीत-रत्न	
माणिक्य, मोती, मूंगा, पुखराज	
मंत्र	
ऊँ द्रां द्रीं द्रों सः शुक्राय नमः (6000 जप)	
दान विवरण 1	
हीरा, स्वर्ण, रजत, चावल, मिश्री, दूध, दधि, कपूर, घृत	
दान विवरण 2	
श्वेत वस्त्र, श्वेत पुष्प, श्वेत अश्व, श्वेत चन्दन, श्वेत गाय	
रत्न कैसे धारण करें	
हीरा 46 सेंट का प्लेटिनम या चाँदी की अंगूठी में जड़वाकर दाहिने हाथ की कनिष्ठा अंगुली में शुक्रवार को प्रातः दूध व गंगाजल से शुद्ध करके धूप अगरबत्ती करने के बाद शुक्र के तांत्रिक मंत्र की एक माला का जाप करके सूर्योदय से लेकर एक घंटे के बीच धारण करना श्रेष्ठ फलप्रद रहता है।	

प्रोग्राम का निष्कर्ष

चूंकि आपका पंचमेश आपकी कुण्डली में किसी त्रिक भाव का स्वामी है, इसलिए पंचमेश के लिए कोई रत्न धारण करना आपके लिए उपयुक्त नहीं होगा।

यद्यपि इस प्रोग्राम में हम रत्न धारण करने या ना करने की बहुत सी कण्डीशन को चेक कर रहें हैं, फिर भी विद्वान ज्यातिषी की सलाह अंतिम मानी जायेगी।

ज्योतिषी का निष्कर्ष

वैदिक उपाय

वैदिक ज्योतिष, लाल किताब और कार्मिक प्रथाओं से नक्षत्र स्वामी पर आधारित उपचार हमें ब्रह्मांडीय ऊर्जाओं के साथ संरेखित करने में मदद करते हैं, जिससे हमारे जीवन के प्रति दृष्टिकोण में सुधार होता है। ये अनुरूप उपाय नकारात्मक प्रभावों को कम करते हैं, सकारात्मकता को बढ़ाते हैं और हमें ग्रहों की ऊर्जा को संतुलित करने के लिए सशक्त बनाते हैं। अंततः, वे व्यक्तियों को अपने भाग्य को संचालित करने की अनुमति देकर आत्म--जागरूकता, सद्भाव और संतुष्टि को बढ़ावा देते हैं।

आपका नक्षत्र

पूर्वाभाद (2)

नक्षत्राधिपति

बृहस्पति

इन वैदिक उपायों को अपनायें

(1). पीला पुखराज बृहस्पति से सम्बंधित रत्न है। इसे गुरुवार के दिन अपनी तर्जनी उंगली में सोने की अंगूठी में पहनने से आपको उत्तम स्वास्थ्य और समग्र कल्याण मिल सकता है। सुनिश्चित करें कि रत्न अच्छी गुणवत्ता का हो और प्रमाणित रत्नविज्ञानी द्वारा प्रमाणित हो।

(2). बृहस्पति का बीज मंत्र है 'ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरुवे नमः' इस मंत्र का प्रतिदिन 108 बार जाप करना, विशेषकर सुबह स्नान करने के बाद, आपके स्वास्थ्य को लाभ पहुंचा सकता है।

(3). गुरुवार को बृहस्पति का दिन माना जाता है। गुरुवार का व्रत करना या इस दिन केवल एक बार भोजन करना आपके स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद हो सकता है।

(4). बृहस्पति का संबंध पीले रंग से है। किसी मंदिर में या घर में किसी देवता की मूर्ति या तस्वीर पर पीले फूल चढ़ाने से आपको अच्छा स्वास्थ्य मिल सकता है।

(5). गुरुवार के दिन पीले रंग की वस्तुएं जैसे कपड़े, भोजन या पीला पुखराज दान करने से आपको अपने स्वास्थ्य में सुधार करने में मदद मिल सकती है।

(6). विशेष रूप से गुरुवार को पीले कपड़े पहनने से बृहस्पति के लाभकारी प्रभाव में वृद्धि हो सकती है।

(7). बृहस्पति यंत्र ग्रह के सकारात्मक स्पंदनों को अवशोषित करता है। इस यंत्र को अपने घर या कार्यक्षेत्र में रखना और इसकी नियमित पूजा करना लाभकारी हो सकता है।

(8). किसी विद्वान पुरोहित की सहायता से बृहस्पति होम का आयोजन करें। यह बृहस्पति को समर्पित एक अग्नि अनुष्ठान है, और यह महत्वपूर्ण स्वास्थ्य लाभ प्रदान कर सकता है।

लाल किताब के उपाय

वैदिक ज्योतिष, लाल किताब और कार्मिक प्रथाओं से नक्षत्र स्वामी पर आधारित उपचार हमें ब्रह्मांडीय ऊर्जाओं के साथ संरेखित करने में मदद करते हैं, जिससे हमारे जीवन के प्रति दृष्टिकोण में सुधार होता है। ये अनुरूप उपाय नकारात्मक प्रभावों को कम करते हैं, सकारात्मकता को बढ़ाते हैं और हमें ग्रहों की ऊर्जा को संतुलित करने के लिए सशक्त बनाते हैं। अंततः, वे व्यक्तियों को अपने भाग्य को संचालित करने की अनुमति देकर आत्म--जागरूकता, सद्भाव और संतुष्टि को बढ़ावा देते हैं।

आपका नक्षत्र

पूर्वाभाद (2)

नक्षत्राधिपति

बृहस्पति

इन लाल किताब के उपायों को अपनायें

(1). विशेष रूप से गुरुवार के दिन पीले कपड़े पहनें, क्योंकि इस रंग का संबंध बृहस्पति से है।

(2). गाय को चने की दाल या गुड़ खिलाने से बृहस्पति का सकारात्मक प्रभाव बढ़ सकता है।

(3). विशेष रूप से गुरुवार के दिन पीली वस्तुओं का दान करने से आपको समृद्धि और सौभाग्य मिल सकता है।

(4). बृहस्पति को प्रसन्न रखने के लिए विशेष रूप से गुरुवार के दिन मांसाहारी भोजन का सेवन करने से बचें।

(5). अपने शिक्षकों, गुरुओं और बड़ों के प्रति सम्मान दिखाएं। बृहस्पति ज्ञान और बुद्धि का कारक है, इसलिए यह इस ग्रह को प्रसन्न करने में मदद कर सकता है।

(6). गुरुवार के दिन पीपल के पेड़ पर जल चढ़ाएं और शाम के समय पेड़ के पास घी का दीपक भी जलाएं।

(7). गुरुवार के दिन चने की दाल का दान करें। इससे आपको समृद्धि और सौभाग्य मिल सकता है।

(8). घोड़े को चने की दाल खिलाने से भी आपके जीवन में सकारात्मकता आ सकती है।

(9). विशेष रूप से अपनी तर्जनी में सोना पहनने से बृहस्पति के सकारात्मक प्रभाव बढ़ सकते हैं।

कार्मिक उपाय

वैदिक ज्योतिष, लाल किताब और कार्मिक प्रथाओं से नक्षत्र स्वामी पर आधारित उपचार हमें ब्रह्मांडीय ऊर्जाओं के साथ संरेखित करने में मदद करते हैं, जिससे हमारे जीवन के प्रति दृष्टिकोण में सुधार होता है। ये अनुरूप उपाय नकारात्मक प्रभावों को कम करते हैं, सकारात्मकता को बढ़ाते हैं और हमें ग्रहों की ऊर्जा को संतुलित करने के लिए सशक्त बनाते हैं। अंततः, वे व्यक्तियों को अपने भाग्य को संचालित करने की अनुमति देकर आत्म--जागरूकता, सद्भाव और संतुष्टि को बढ़ावा देते हैं।

आपका नक्षत्र

पूर्वाभाद (2)

नक्षत्राधिपति

बृहस्पति

इन कार्मिक के उपायों को अपनायें

(1). ज्योतिष में बृहस्पति को गुरु या शिक्षक के रूप में जाना जाता है। नई चीजें सीखने और अपना ज्ञान दूसरों के साथ साझा करने के लिए लगातार प्रयास करें।

(2). बृहस्पति आशावाद और सकारात्मकता से जुड़ा है। स्थितियों का उजला पक्ष देखने का प्रयास करें और जहाँ भी जाएँ सकारात्मकता फैलाएँ।

(3). बृहस्पति उच्च शिक्षा और आध्यात्मिक विकास से जुड़ा है। उन संस्थानों को दान करें जो इन्हें बढ़ावा देते हैं, या स्वयंसेवक के रूप में अपना समय प्रदान करते हैं।

(4). बृहस्पति उदारता और प्रचुरता का ग्रह भी है। उदारता के कार्य नियमित रूप से करें, भले ही वे छोटे ही क्यों न हों।

(5). 'मैं ज्ञान और आशावाद से भरपूर हूं', 'मैं अपनी प्रचुरता दूसरों के साथ साझा करता हूं', या 'मैं हमेशा सीख रहा हूं और बढ़ रहा हूं' जैसे दृढ़कथन का उपयोग करें।

(6). अपने सभी कार्यों में उच्च मूल्यों और नैतिक मानकों को बनाए रखें, क्योंकि बृहस्पति नैतिकता और सदाचार का ग्रह है।

(7). बृहस्पति का संबंध अध्यात्म से है। विकास, ज्ञान और प्रचुरता पर ध्यान केंद्रित करते हुए ध्यान को अपनी दैनिक दिनचर्या में शामिल करें।

(8). बृहस्पति का संबंध पोषण से भी है। संतुलित आहार खाना और अपने शारीरिक स्वास्थ्य का ख्याल रखना इस ग्रह का सम्मान करने का एक तरीका हो सकता है।

(9). बृहस्पति प्रचुरता और आशीर्वाद का ग्रह है। अपने जीवन में अच्छाइयों को पहचानने और स्वीकार करने की आदत डालें। एक .तज्ञता पत्रिका रखें या हर दिन कुछ क्षण निकालकर मानसिक रूप से उन चीजों की सूची बनाएं जिनके लिए आप आभारी हैं।

Disclaimer

The calculations, future predictions, and remedies given in this Astrological Report are all based on the principles of either on Vedic Astrology, KP System, Jaimini or Lal Kitab, Numerology which are the result of consulting and engaging highly learned astrologers and astrology practitioners. This Report will prove to be highly useful for astrologers and practitioners of Astrology. We earnestly request the common users of this Report that they should not follow the Lal Kitab and or other prediction/remedies given in this Report without consulting a learned astrologer or an expert on this subject. Failing to do so might lead you to unexpected results which may or may not be favorable towards your well-being.

www.lalkitabnadi.com/MindSutra Software Technologies makes no warranty about the accuracy of any data contained herein, and the native is advised to not to take as conclusive any prediction generated for him. If you follow the advice given in this report you do so at your own risk, www.lalkitabnadi.com/ MindSutra Software Technologies or any of its associates are not responsible for the consequence of any event or action.

www.lalkitabnadi.com/MindSutra Software Technologies shall not stand liable for any damages or harm done.

All disputes are subject to New Delhi Jurisdiction only.

Wishing the very best – prosperity and happiness.